

अनुक्रमशिका ।

	पृष्ठ
जय २ मंगल निधान, गौतम गुरु स्तवन	१
कल्याण बत्तीनी	२
बुधाल गुरु देव के दर्शन.	६
कुशल सूरिंद गुरु पूजो भवि द्वित्त स	१०
श्राज करारे उद्वाह श्रीजिन कुशल मू०	१०
मै निरस्त्या गुरु महागज छतिया हर्ष भरी	११
गुरु पूज रचारे सुजानी, होरी	११
सद्गुरु के चरण चित लाय २, होरी	१२
गाथा भक्ति से पूर रहेरे, होरी	१२
जिन कुशल सूरिंद गुरु सदा नमो	१३
सदा सहाई कुशल सूरिंद गुरु	१३
सद्गुरु जी सुणो मोरी अरजी	१४
छत्रपती थारे पावन में जी	१६
श्री जिनदत्तमूर्तिदा परम गुरु	१४
मणि मन्तक पर दीपे जिन के	१५
सद्गुरु मणिधारी महाराज	१५
सद्गुरु कल्याणनिधान राखो लाज मेरी	१६
कुशल गुरु ध्याइये कुशल मंगल करन	१६
कुशल गुरु श्रव भो,हि नृशरण दाजै	१७

	पृष्ठ
कुशल गुरु कुशल करो भरपूर	१७
कुशल गुरु दरशन दीजे हो	१७
गुरु देवजी का ध्याता सदा, भिषे में लाइये	१८
कैसे कैसे प्रवसर में गुरु रक्खी लाज हमारी	१८
श्री गणेश्वर गुरु कुशल सूरीद के चरण क०	१९
धारी जाऊ गुरु राय चरण की,	१९
सद्गुरु पूजन जासत्या	१९
दादा चिरजीवो, मेमन जन सुखदाई	२०
गाने जिन कुशल गडाले	२१
सद्गुरुनी ने साभलो, श्री जिनदत्त मूरीर हो	२२
हू तो अरज करू कर जोडने जी, म्हारी अ०	२३
सागागेर विराते	२३
आयो आयेरे समरता टाने जी आयो	२४
बिलसै अद्वि समृद्धि मिली	२४
आयो सहु श्री सध आशधरे	२६
कामित काम गयी	२६
पादोधर गुरु गडपती सद्गुरुनी हो	२७
कुशल गुरु की निरखण दो असनारी	२७
दरशन दो दु स भाजे दादा दर०	२८
जय गणनायक जय वरदायक श्री गुरु दे०	२८
मोहू शरण तिहारा कुशल गुरु मो०	२९
सेवो सुगुरु सुखनायरे	२९
गुरु बदन आये विद्युधपती	२९

कुशल सूरीद गुरु ध्यान धरो हिये	३०
जिनदत्त सुगुरु बलिहारी, सुरसकारी.	३०
मन बधित पूरण जगाचावो.	३१
अरे लाला श्री जिन कुशल सूरीसरू.	३२
दादा कुशल सूरीद, तुम दरशन से परमानन्द.	३३
नित नमिये कुशल सूरीदजी.	३३
नित कुशल सूरीसर ध्याइये.	३४
दांपे बडली में गुरु थाहरो देहरो	३४
देरावर थारो देहरो हो साहिन.	३५
गणधर सेवो गुरु कुशल मूरी	३५
तिहारे दग्ग की चाट रही, मोरी अरज०.	३६
पूजो भजोरे भाई.	३६
अरज सुनो गुरु एक हमारी.	३७
आज हमारे आनन्द भयो, मै भेट्या श्री गुरु०.	३७
सद्गुरु नी शोभा सवाई ए.	३८
मै बलिहारी गुरु चरना.	३८
वीनतड़ी सुन लीजिये सद्गुरु जी मोरी	३९
सद्गुरु जी महारे मन भाया.	३९
सद्गुरु मेरे तू ही प्यारा है.	३९
नित चरणा में चित लीनो है.	४०
सद्गुरु ने पकडी बाट नहीं तर बंध जाते.	४०
तुम्ह सूरत सुरसकारी, मै वारी जाऊ.	४०
सुणियो अरज हमारी सुगुरुजी सु०.	४१

	पृष्ठ
कुशल करण मेरे परम गुरु की बेर १ वलि०.	४१
श्री जिन कुशल सूरीसर सदगुरु	४२
श्रीजिन कुशल सूरीद गुरु साहिब	४२
श्रीजिन कुशल सूरीश्वर साहिब	४३
तू हे दाता मेरो कुशल गुरु	४३
कुशल सूरीद सहाई हमारे	४४
आज तो आनद मेरे आई भली भावना	४४
कुशल सूरीद सुखकारी हो सुगुरु मेगे.	४५
मेरे होउ सहाई सदगुरु	४५
हम कू शरण तिहारी हो दाग राखो र०	४५
श्री सदगुरु महाराज कुशल गुरु	४६
श्री सदगुरु जिन कुशल सूरीश्वर साचो०	४६
कुशल करण गुरु कुशल सूरीश्वर साचा स०	४७
कुशल करोरे महाराज कुशल गुरु	४७
मोकू शरण तिहारा कुशल गुरु	४८
आशा सफल पर्ला मै पायो परमानद	४८
गद्यपति खरतर गद्य सिणगार.	४९
सदगुरु श्री जिन कुशल सूरीद	४९
पूजो रे पूजो पूजो दादे सम देष न वृत्रोरे.	५०
रिसह चिंमर सोजयो	५१
दादोनी परतिथ देवता	५२
जमु हदम कमरा गुरु नाम बसे,	५२
दानेनी दीठा वोलन श्रा०.	५२

	पृष्ठ
चलो सखी पूजवा जइये	५३
कुशल गुरुजी अरज सुणीजे दरशण दीजै.	५३
श्रीजिन कुशल सूरीश्वरू	५४
श्री जिनदत्त सूरीसरू रेलो.	५५
श्री जिन कुशलसूरीसरूरे राजे श्री महा०	५७
सहाई मेरे श्री जिन कुशल गुरु.	५७
दादा पूर हो बखित मोरा.	५८
हेली हे सद्गुरु जात मनास्या हे.	५८
जी हो धन बेला धन सा घडी.	५९
कीजे छै कर जोडने दादाजी.	६०
पूजवा चालारे सुगुरुने	६१
थलवट देश सुहावणो.	६१
नइया मेरी दादा तुम ही सेवइया.	६२
सद्गुरु का ध्यान हृदय मेरे, होरी.	६२
बलिहारी हू कुशल सूरीसर की होरी.	६३
हा रे लाला श्री जिनदत्त सूरीश्वरू.	६३
जय २ जग जन दयाल सद्गुरु मणिधारी.	६४

अथ संस्कृत स्तुति ।

दासानुदासा, चिन्तामणि कल्पतरु, नो योगी न च.	६५
यो दृष्ट स्मरण गतोपि, जिनदत्त गुरोरष्टकम्.	६५
नमाम्यह श्री जिनदत्त सूरी, द्वितीयाष्टकम्.	६६
सुरकिन्नरवदिनपदकमल, तृतीयाष्टकम्	६७

	पृष्ठ
नतनेश्वरमालिमणिप्रभा, कुशल गुणेरष्टकम्.	६८
मुख सर्वासपन्, कुशलगुरोर्द्वितीयाष्टकम्	६९
पद्माङ्कट्याणविद्या, कुशल गुराम्तृतीयाष्टकम्.	७०
देवराजपुग्मटण, कुशल गुणेश्वतुर्भाष्टकम्	७१
दायक ऋद्धि सिद्धा, घग्गर नीसार्णी.	७२
सद्गुरु गद्यनायक, दूसरी घग्गर निसार्णी.	७४
स्वरतरगद्य जाणे खलक, छठ प्रथम.	७६
समरू माता सरम्बती, छठ दूसरा	७७
परतिस परदा पृग्ने, छठ तीसरा	७९
वदन कमल वाणी विमल, छठ चौथा.	८१
वरदायक हस वाहनी, दत्त गुरु छठ पाचमा	८५
प्रेम मन धार, कुशल गुरु कवित्त प्रथम	८९
वावन वीर क्रिये अपने वस, कवित्त दूसरा.	९९
राजे थूम ठोर ठोर, कवित्त तीसरा.	९०
कुशल अग उधरग, कवित्त चौथा,	९०
कुशल बड़े ससार, कवित्त पाचमा	९०
मिश्री घृत क्षीर रलाय मिलाय, कवित्त छठवा.	९०
मसूर पठाण गरन्व कियो, कवित्त सातमा, चन्द्र गुरु	९०
सवे मृगनयण चले गुरु वदन, कवित्त आठमा, चन्द्रगुरु	९१
सितन की मुख वाणी मुणी, चन्द्र गुरु छठ नवमा	९१
अष्ट प्रकारी लघु पूजा भाषा, संस्कृत.	९२
जय २ सद्गुरु आरती, दत्त गुरु की	९४
मणिधारी जिन चन्द्र, कुशल गुरु आरती,	९५

आज आपे चालो सटिया, सिद्धगिरि प्रथम स्तवन	६६
नमो रे नमो सेनुज गिरी रे, स्तवन दूसरा	६६
श्री मिद्धाचल मडण म्नामीरे, स्तवन तीसरा	६८
सेनुजानो वासी प्यागे लागे मोग० स्तवन चौथा	६६
यात्रा निनाणू करिये निमल गिरि, स्तवन पाचमा.	६६

उपाध्याय श्रीरामलाल गण्डिः कृतं गुरु स्तवनाम् ।

श्री सद्गुरु का दरश सरस	१००
चेत नर बयू भूला अज्ञान,	१००
देस्या में दरश तिहारा	१०१
सद्गुरु दीनदयाल,	१०२
सुगुरु मेरी नइया पार उतारो.	१०२
सद्गुरुनी का पूजन कररे, होरी,	१०३
होरी खेलो भविक सद्गुरु के संग,	१०४
सद्गुरुजी के द्वार मची होरी,	१०४
दत्तगुरु दरश दिखादोजी,	१०५
आज रग बरसेरे,	१०६
दादा महिर निजर कर जोय	१०६
चालो २ हे सहेल्या सद्गुरु पूजवा ए	१०७
कुशल धोगालो लाडलो	१०७
चाल २ म्दारा मित्र आलीजा	१०८
श्री सद्गुरुजी से वीनतीरे	१०६
सद्गुरु दरशन देजोजी	११०

मेरे कुशल गुरु सुखकारा	१११
गाऊ २ में सुयग गुरु तारनारे	११२
म्हारा प्राण पियारा मोहना गुरु	११२
दत्त कुशल गुरु मुरतरु	११३
चाल २ म्हाग मुगुणा श्रावरु.	११४
पूज्य पूज जिन चन्द्र सृगधर	११५
जाय फमा जुगुर के फट में	११६
वरशण देनाजी गुरुगज, भक्त के	११७
मे शीस नमाऊ थाने, परम गुरु दीजो	११८
तारो तारो कुशल गुरु रसिया	११८
आवो सनन करो गुरु का भजन.	११९
म्हारे हृदय लिम्ब्या गुरु नाम	११९
हृतो धारा दरशन करवा आयोजी.	१२०
धर्म क अभिक दीपायाजी.	१२१
आज आपे चालो बहिनी	१२२
म्हेतो रोवरा चढाय आई आज	१२३
मुजानी लाल चरणा सू चित्त लागो	१२३
ब्बाजेड उलरो सेहरो ण माय	१२४
फयलों फह गुरु दु ख की में बतिया	१२५
कोई देख्यारे मुपने में सद्गुरु.	१२६
कुरल रूरिंद गुरु साहिबा	१२७
जैत अयन उदयकार	१२७
प्रशमित	१२८

सर्वारिष्टप्रणाशाय सर्वाभीष्टार्थदायिने सर्वलाब्धानधानाय,
'गोतम स्वामिने नम ॥

गुरुगुणरत्नावली

अथ गोतम प्रभाती स्तवनम् ।

जय २ मगलनिधान गोतम जयकारी ॥ ज० टेर ॥
पृथ्वीकुक्षिरत्नहीर, विश्वभूति पितु सधीर, चार वेद चतुर धीर,
मन्मथ अवतारी ॥ ज० १ ॥ यज्ञ रग विप्र सग, वृष्णासुर-
लोकगग, करत धरत छात्र पात्र, विरुद विबुधचारी, ॥ ज०
२ ॥ विचरत प्रभु आये चग, वाणी गुण सप्त भग, वर्द्धमान
जित अनग, सराय तमहारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगङ्ग
देख, इद्रजाल शकुरेख, वीतराग वचनपेख, मिथ्या माति टारी ॥ ज०
४ ॥ त्रिपदीपाय अगवार, रचनाकृत अति अपार, बोधन जग
जीवसार, भये गुरु गणधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन,
मुक्ति लक्ष्मी धर्म लीन, मुक्त मन जल चरन मीन, बुदनद्युति-
सारी ॥ ज० ॥ ६ ॥ सिद्धियोगनदचद, कार्तिक सित सघ वृद,
फूलत घर कल्प कन्द, दूजकुमतिहारी, ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुलशिवपुर
देवमणी, इद्र भूति जगधणी, कुराल निधान सुखभणी, पाठक
अंदि सारी ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति पदम् ।

करुणा वत्तीसी ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मुनिवै रुमाल रंग जीव के ग्याल प्रभु आदि ब्रह्म ईश्वर श्री ऋषभ चित ध्याय है कजा तृ सृष्टी को आदि परमेष्ठी को गता के निर्माह कारण कजा उपनामे है, भरतह कू राग दीना आप योग भर्मा नीनो गशरगा के शरगा श्रीगवती कहाय है, अतो गर देवीउ ह फाट तु स कव में ह अनाव नाव शरगा तेरी आये है ॥ १ ॥ अजा की टेर गुणी त्वरित फेलास आयो रावगा से राग कू गटक विधि ताग्घो है, अह नरपति कू माना डे मुग्ग की गो शुजय गिरि पर मागुप पर डारयो है, बाहुवा इदन कू फेरल पद भज दीनो ग्राणी अरु सुदरी के हाथ से सुधारयो है, शबर बैलाशवासी लोक मेरी करत हामी अब तो उदार जैसे शुक्रराज को उढाग्घो है ॥ २ ॥ फोड्यकनो ब्रह्मा तुम गाम को उच्चार करे फोड्यक शिर त्रिष्णु लेत नाम धरणी को, फोड्यक रमूत अरु आदम करतार कहे जगत धीच महग गाम पररया है वरणी का, नमि अरु विनमी को सकट से भेट दीनो खेचरपति मेना से नागरायभरणी को, मेरी सुध नाथ तेने केसे विमार दीनी भूलू नती पलक नाम प्रभु चिंतामणी को ॥ ३ ॥ केशरियानाथ तेने समुद्र म जहाज सारी, ऋषभदाम गधरु की हुडी शिकारी है, मिथिया की फीच जन आन के उद्विघ्न कीनो पडे का बेड़ी नाथ त्वरित तोड़ टारी है भंग्य अगवानी डोय भगम गगन चान मुग्नि निहामी बट लइनी गही हाग है,

कलियुग में परचा प्रभू प्रगट हैं प्रभाव तेरो रामञ्चद्विसार यह
 थरजी गुजारी है ॥ ४ ॥ पचम चक्रेश पुन शोलम तीर्थेशनाथ
 हथनापुर स्वामी मृग लखन के धारी है, गज के चौरासी लाख चौमठ
 हजार रामा गन प्रमित अश्व नय निधान अधिकारी है, मुकट बद्ध
 राजन बत्तीम सहस सेवा में पायक के दिनवे कोडि इद्र अव-
 तारी है, एते सब त्याग के तुम सजम समाधि धार ऐसे जिन
 गज को चदन हमारी है ॥ ५ ॥ अचग के मूत्र जन आपने
 अवतार लीनो नगरी में आगेथो रोग हेजा मरी को, विश्वमेन
 राजा शोच में गलतान था के कोइयक मिटावे रोग लोरुन के
 जरी को, दीन के दयाल प्रभु अर्हन् निन दीनंधु धन हे
 प्रताप नाम शाति सुखकारी को, शातिक फैलाय के मव जीरुन
 को कष्ट काट्यो मैं तो गरीबनास प्रगट भक्त हगी को ॥ ६ ॥
 पूरब भय बीच आप शरणागत विन्द धारयो एक समय सुरपति
 ने शोभा बम्बानी है, डिग नही काहुमै दया के सधीर राजा शिररा
 अरु पारापत भागत अगवानी है, आन के कउतर जन पड्यो
 है उद्धग बीच मुख से यू कहत राजा तू तो बडदानी है, दीनो
 निज वपुदान शरणागत गन्यो मान ऐसो विरुदाय तेरो करत
 आनाकानी है ॥७॥ वेद में पुराण में आलाग में कुरान में ऐसी जो
 जगा सो शाति सब आन में, व्याह अरु पूजा में शत्रु के धनन
 में ऐसो नहीं ठेरुचार सो रूत वही वाड में, शाति पर भगन
 को तौडे अमगल को ऐसो प्रमास नाम सुवित के स्वान में,
 विघ्न को विटागी सन सतन सुखकारी यू रामञ्चद्विसार तेरी
 गृहता नित याद में ॥ ८ ॥ बाल ब्रह्मचारी प्रभु राजुल वृ तारी

बर्णा मै करू कहा करुणानिधान हो, पशुअन पुकारे त्वरित
 ही उवारे धधन बुझाय तुम दीनो अमयदान हो, यादव कुल
 महन हो मदन के विहदन हो, गिरनारगढ़ जाय के धरयो
 अबल ध्यान हो, ऐसे तुम काम कीने मोहकू बिसार दीने मेरे
 तो कृपा सिंधु जीवन तुम प्राण हो ॥ ६ ॥ जगमध कटक ले
 आयो जब द्वारका पर हलधर और गिरधर ने गरड़ धजाधारी
 है, कूर भयो युद्ध जामें अपणी फौज टटी जान जरामध यादव
 दल उपर जरा डारी है, बलमद्र आदि ले सब ही अचेत
 भये कृष्ण कू सहाय दे जरा को निवारी है, भारत आप भेल
 लीनो तीन दिन युद्ध कीनो ऐसे तुम कृपासिंधु सब के उपकारी
 हो ॥१०॥ सारग धर धनुष चाब्यो खलह को शब्द काब्यो फेरयो
 सुदर्शन चक्र पृथ्वी भरसाई है, शेष सज्ज्या खोल डारी ऐसे
 बलवत भारी प्रगट दूजो नारायण यू कृष्ण खबर पाई है, ताकत
 पतवान लागे बाह लम्बी करी आगे कृष्ण की बाह कू कमल
 आ नमाई है, हरि चिंता करे मन में छीन लेगो राज्य दिन में
 हलधरजी कहे कृष्ण नेमतो गुसाई है ॥ ११ ॥ चिंता सब भेट
 दीनी गिरवर की राट लीनी द्वारका के बचवे की कही राट
 कान्ह कू, भक्ति से तार दीनों ईश्वर पद योग कीनो ऐसे स्वयं भू
 आप धीधर महारान कू, कबठें पुकारू नाथ मेरी बेर देर
 कही गुनहा सब माफ कर कह दो गुरु ज्ञान कू, मेरे तो प्रभु
 नेम साचे मन धरू प्रेम रामअद्वितार नित ध्यावे भगवान् कू
 ॥ १२ ॥ काशी के मूष वर रूप है अनूप जामें वामा के नदन
 तोहे बदे सुरेश है, जाणे तोहे जगत् लोक मेवा से सर्व धोक

चितामणि कल्पवृक्ष कमलाकर पेश है, दर्शन तुमारो पाय
 कमणा घर रहे नाहिं पारस प्रभाव तें लोहा कनकेश है, नाम के
 प्रताप से उन पत्थर को बध्यो मान धन है नर नार तोहे ध्यावें
 हमेश है ॥ १३ ॥ रामचन्द्र रघुपति ने दरिया पर पाज बाधी थभनपुर
 स्वामी तुम साधे सब काज हो, यादव की जरा भेटी गुण के हो रत्न
 पेटी नागार्जुन योगी को दीनो कनक साज हो, मै तो निराधार
 मेरी पारस करोगे मार अरजी चित धार तुम दीन के निवाज हो,
 अठारा दोषण में निद्रा से रहित भये मेरी वस्त नीद कहा लीनी
 महाराज हो ॥ १४ ॥ खरतर गणाधीश्वर श्री अभयदेव सूरि को
 सेदी नाम नदी तट प्रगटे तुम पास हो, जयतिहुअण बत्तीसी
 स्तवना एकाम कॅरी शातिक के जल से तुम कियो कुष्ट नार
 हो, गोडीमल श्रावक और भेघा नाम गोठी ने हालाहल जहर
 खायो तुमारो विश्वास हो, प्रतिमा तुम्हारी प्रभु वसुधा फाड़
 प्रगटत है होवे फिर लोप तुम गौड़ी गुण रास हो ॥ १५ ॥
 कमठ को तुम हग्यो मान पन्नग कृ भत्रदान तुमारे दरश से
 नाग घरखेंद्र अवतारी है, धन्वन्तर नाम तेरो कर्म रोग काट
 मेरो मेरे तो पारगत तेरी विगतिवारी है, पद्मावती करे सेव तुम
 हो देवाधिदेव बट्टीनाथ जगन्नाथ मूरती तिहारी है, रामअष्टद्विसार
 पर सु निजर की महर करो दर्शो अवतार धार कर्म के विदारी
 है ॥ १६ ॥ शासन के स्वामी अभिरामी प्रभु वर्धमान तेरो अस्त
 पारावार मुनि गण कहाई है, अपभदत्त ब्राह्मण अरु देवानन्दी
 ब्राह्मणी कृ अपणे पूर्व पूज्य जाण मुक्ति को पठाई है, त्रिशला
 महतारी के ऊपर अनुकम्पा आन एक टेर लीन भये गर्भ के

शु माही है, अहो यहवीर मरी तुम हरो पीर नदिवर्द्धनी
 के भाई सो हमारे सहाई है ॥ १७ ॥ जन्म समय सुरपति सप्त
 शातिक के कारण वृ गगा अरु मागध के भरे कलाग नीर के,
 सोधर्मा गता के गाद में तिराजमान काल बस रुद्र भई वा
 जाय जोर सीर के, अभिशेष को हुकूम शचिपति तब देत नाहि
 कपायो मेरुगिरि ऐसे बलधीर के, आमल की कीड़ा में असुर
 कू पधार डारयो देवन मिल नाम दीनों भगवत महावीर के
 ॥ १८ ॥ हाथी पे कर सवार सोले सिंगगार कार गजा अरु
 राणी ने पढ़वे पठाये है, सिंहासन इन्द्र को तर ही अगण
 लागे वृद्ध ब्राह्मण रूपहरि पण्डित पास आये है, पृथ्वी जो
 प्रथम इन्द्र ब्राह्मण में वणे नाहि वर्द्धमान स्वामी शब्द साध के
 बताये है, इन्द्र कहे सुरो लोक सर्वदर्शा वीर कोरु जैन इन्द्र
 व्याकरण तब ही बनाये है ॥ १९ ॥ वर्ष षड् द्वियो डाग याचक
 को रम्बो मान पृथ्वी को ऋशभार आपो उतारयो है, सवल्लर
 भाई को जग में प्रसिद्ध कीनो आप निरहकार योग आत्मकाज
 सारयो है, दैवत अरु मानुष के कते उपमर्ग महे शलपाणी
 यक्ष कू दर्शन उचारयो है, चडनाग उरु दीनो आप वाकू तार
 लीनो मुद्रा तिहारी देख स्वर्ग कू सिधारयो है ॥ २० ॥ सिंहासन
 घत्रधारी दुन्दुभि को नाद भारी ऊपर अशोक वृक्ष छाया फैलाई
 है, देवन को कोटा कोटि आवत तुमारे पास सर्वज्ञ कू यो ये
 राणी मुनपाई है, यज्ञ तिहा करन लागे गोता छिन ध्यान सागे
 इन्द्र जाली कहत आयो गका चित ठाई है, वेद को तुम अर्थ
 भाग्यो अपनो रनीर गरनो तृहा बुढायता प्रगत्यो रगार्द है

॥ २१ ॥ योग की सप्त क्रिया त्याग वेश्या सग रखो ताग वारे
 वर्ष मग्न भयो भोगे सुख काम को, नदिमेन आगो पास उनकी
 फिर पृगी आश आपके विश्वास उन पायो अमर धाम को,
 गोशालो गुनहगार मुख से बोल्यो कुफार देव लोक भेज्यो प्रभु
 ऐसे हराम को, मैं तो प्रभु भक्तिवान मेरी देर सुनों कान मैं तो
 रट वीर धीर सुबे और समझे ॥ २२ ॥ श्रेणिकनरिंद और
 बेलना मुख चढे देग साधु और साधविया भई रूपलीनता,
 मुनिगण को डिगे जान सब कृ ठिकाने आन अपने फरमान से
 सप्त टाल दई दीनता, मेघ कुमार मुनि राज सजमकी छोड़ी
 लाज आप से पुकारयो दिखलाई बहु दीनता, पूरब मन बात
 कही दया विग थाप दई मेरे तो जिनाधीश तेरी आधीनता
 ॥ २३ ॥ आद्रकुमर राजपूत मुनिपद की लई मूत कर्म क
 सयोग फिर श्रीमती कृ परणी है, घरमें चौबीस वरम रागरग
 कर सरस पीछे पड़ताय पुन लीनी आचरणी है, ताकू शिव
 वधू दीनी जमाली उत्थाप कीनी कैते भव टाल के बताई शुद्ध
 करणी है, मुक्त तै ना पले योग खान पान सरस भोग ऐसे को
 तारो तो तुमारे हाथ तरणी है ॥ २४ ॥ निरती जिन अहीनाट
 चरण की लई छाह विषय भोग लपट उन श्रेणिकनरिंद को,
 आप शम आप दीनो पद्मनाभ नाम दीनो धन है करतूत तेरी
 बचायो चमरेन्द को, अय मचे बालक की नाम आप पार कीनी
 सूरिया मनाटक कर गाया गुण छद को, दशार्ण भद्र भूपत को
 मधवों हरयो मान ताके शिर हाथ धर नमायो सुरेन्द को
 ॥ २५ ॥ मनाग से तरनेकी मेरे चित्त चाह भई ऐसी अभिलाष

भर गयो देव द्वाग पै, केते देव सुरापानी केते सर्गात तानी केते
 तो सुन्दर सग रम्य सेज जार पै, काह फो शीश पुन दूसरे ने काट
 लीनो केते धरदान देत मोरे हजार पै, राग द्वेष त्यागे निन
 मुक्ति किमी की नाहिं ऐसो देवाधिदेव तू ही समार पै ॥२६॥
 काह के आधार प्रभु राजा शरु सेठन को काह के आधार सेवा
 खेत विरसवारी को, काह के आधार प्रभु जोतप और वैदक
 को काह के आधार जड़ी घूटी मणिधारी को, केते रसानी मत्र
 साथे अभिलाषा धर केते पास द्रव्य है लाखन हजारी को, मैं तो
 निराधार मेरी बीर प्रभु करो सार मोह तो भरोसो भारी केवल-
 पदधारी को ॥ २७ ॥ नैया यक सास्यमती श्रद्धत बस जगत्
 माने केते वैरोपिक जगत्स्वप्नसो बखाने है, केते पुन नाम्निक बह
 प्रस्तिभाव करे खड केते समीजी काजी ईसा को मनावे है,
 ऐसै एकत वाणी जिनके मन जिसी मानी थपणो हठ वाद कर
 लोकन भरमावे है, मैं तो स्याद्वाद चारु दूजो नहीं धर्म राखू
 साचो हुकम बीर को सो मेरे चित्त चावे है ॥ २८ ॥ चौदे हजार
 मुनि दीक्षित निज हाय तेरे आर्या छत्तीस सहस सेवे नित चरण
 कों, आनन्द शरु कामदेव प्रमुखन ग्रहस्थ तेरे बधित से पूर
 भये दुरमति के हरणकों, चौसठ सूरिंद तेरी सेवामें खरदार
 सिद्धानाम देवी सो सध रक्षाकरण कों, स्वामी श्रीवर्द्धमान जग
 में तोह सख जान भक्तन के वत्सल नाथ ग्रही तेरे शरण कों
 ॥ २९ ॥ चौबीसों पुरप सिंह अतुलीबल धरनहार अल्प बुद्धि
 मेरी सो गामे जिन गुणनक, पांचो ही तीर्थकर दुनिया में
 बाहिर है याही ते रचे छन्द भक्तजन गुणनक, पिंगल की भाषा

नहीं कविता को मुझे ज्ञान भविष्य में मग्न होय लायो गुण
 चुण्णक, मेरी तो हुडी प्रभु आपही सिकारोगे ऐसो दयाल देरा
 लयो गुण शुण्णक ॥ ३० ॥ पाखी अर दावानल सर्प मिह
 हन्ती को गेग शोक पुन दरिद्र भय भिटे ताम सैं, लक्ष्मी घर
 सय करे गृपति मिर दुष्म धरे न्यावे एकात मन आठों ही याम
 से बधन फटजाय और जगत बीच बधे मान इच्छा सम पूर्ण
 होय महावीर धाम से, मेरे तो तुम धनी दीन देस्य अरन मुनी
 तेरी छत्र छाया में रहता आराम से ॥ ३१ ॥ कोटिक गणचन्द्र
 कुल शाखा बज्र स्वामी की आपके पाटापुपाट चड़े यश धारी सो,
 दादा जिन कुशल रू मेरे हाजर हजर पाठक वर क्षेम कीर्ति
 शारदा के फारी सो, गाधु गुण भये लीन धर्म शील गुरु प्रवीण
 गुणत के विधान आप जग के उपकारी सो, करुणाचर्चासी या
 रची रामअष्टदिमार पाठक पद विरुद्ध धार विघ्न के विटारी सो
 ॥ ३२ ॥ इति श्री उपाध्याय युक्तिवारिधि रामलालजी रचित करुणा
 वर्तमनी सम्पूर्णम् ॥

अथ सद्गुरु स्तवन ।

—००००००००—

राग रेवता—कुशल गुरु देव के वर्धन, मेरा दिता होत
 हे परशत, जगत में या समो कोई, त देखा नयण भर जोई ॥ १ ॥
 निरुद्ध भू गडले गाजे, फरस ते पाप सब भाजै, पूनते सम्पदा
 पावे, अचिंती लच्छ घर आवे ॥ २ ॥ एक मुख गुण कह केता,

मुझ हिये जान नहीं पना, लाल की अरज सुख लीने, चरण की
सेव मोहे दीजे ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग कैरवी—बुशल सूरिद गुरु पूजो भवि तितनु तुशु०
टेर ॥ केसर चन्दन धूप अरगजा, भाव धर्म करो पूजा हितगु ॥
कु० ॥ मंगरा लाल गुलान मानती, मन सुध माल करो भवि
राचि सु ॥ कु० ॥ १ ॥ अशरण शरण परम गुरु मेरो, धर्म
ध्यान धरो आनम चित सु ॥ कु० ॥ सेवक जन प्रतिपाल
जगत गुरु, आशा पूरे गुरु वगु दक्ष सु ॥ कु० ॥ २ ॥ ध्यान
सुधारे जान यधारे, रूप रग देवे चित हित मनि सु ॥ कु० ॥
बुशल सूरिन्द गुरु साधिकारी, परतिख परचा पूरे मतमु ॥ कु०
॥ ३ ॥ श्री निन हर्ष सदा सुनिलारी, सत्य रत्न सुख पनी
दत्तमु ॥ कु० ॥ इति पदम् ॥

राग देव श्री चलन ।

आन करो रे उच्चाह श्रीजिनबुशल सूरिन्द आगे ॥ टेर ॥
या आधी बेला ने श्री आद्यो दान, इन आडी बेला क्यू करो
लाज ॥ आ० ॥ १ ॥ विविध प्रहार पूजो मन रग, हितमिल
गावो साजन सग, आ० धूप दीप कगे नैवेद्यमार, फुलनारी
नो नहीं जिहा पार ॥ आ० ॥ २ ॥ अक्षत श्री फल ढोवे
जेह, पुत्र कलत्र पामे सपदा तेह, आ० सुरनर नागी कमा
कर जोड़, कोणु करे म्दारे दादाजी नी होड़ ॥ आ० ॥ ३ ॥ श्री
सर तर गच्छपति सिरदार, राजल राणा ने वे इरुतार, आ०
महिर् निजर नगे श्री गुरु राच, बुशल सूरिद गुरु गरीन निनाज ॥

आ० ॥ ४ ॥ श्री जिा हर्ष करे उद्धरग, सत्य रत्न मन ज्ञान
उमग ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग बगालो घाटो ।

मै निरख्या गुरु महाराज छतिया हर्ष भरी में० ॥ टेरे ॥
अमल आत गुण आगरू रे, शमता रमनो धाम, परम पद्म
परमातना रे, बलित दायक स्वाम ॥ छ० ॥ १ ॥ करणानिधि
शुभ दौलती रे, सेवक जग प्रतिपाल, भवि जन भस्ते भाव सू
रे, तावे भर २ थाल ॥ छ० ॥ २ ॥ केसर चन्दन कुमकुमा
रे, भारियकचोली हाथ, पदमण आवे मलपति रे, पूत्रे सहियर
साथ ॥ छ० ॥ ३ ॥ कुशल सूरीधर साहिबों रे, श्री जिन चन्द
सूरि पाट, बलिहारी जिन कुशलनी रे, गाजे घणु गहगाट ॥
छ० ॥ ४ ॥ अष्टसिद्ध सानिध करे रे, सुख सपूरण हार, श्री
जिन हर्ष सूरीधरू रे, सत्यरत्नमुखकार ॥ छ० ॥ ५ ॥ इति
पदम् ॥

होरी सिन्ध काफ़ी दीपचन्डी ।

गुरु पूज रचो रे गुजानी, भले हिय भक्ति भराणी ॥ टेरे
श्री जिन कुशल सूरीधर साहिब, रातर गच्छराजानी, देश २
में थानक गुरुका, शोभा जग पहिचानी, सदा रवि तेज समानी
गु० ॥ १ ॥ केसर चन्दन मृग मद मेली, चरणन, पूज रचानी,
धूप दीप बलि आगे दोयो, नहुविध पुष्प चढानी, भले फल भेट
धरानी ॥ गु० ॥ २ ॥ बाट घाट में परचा पृष्क, शजर टोन्

सहायी, जिना सौभाग्य गुरि के साहिब, बखित काज फरानी,
सदा गुरु महर लखानी, गु० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

होरी ।

सद्गुरु के चरण चित लाय रे, जिनन्त मूरिद गुरु करो रे
सहाय ॥ स० ॥ टेरे ॥ यावन वीर अनेमलि चौसठ, जोगण बश
कीनी हर्ष लाय, विगा पुम्तर सोवन अन्तर, थ भो नज निडार
पाय ॥ स० ॥ १ ॥ मुलतान में पच पीर महापल, पच तदी
सार्धा चित लाय, इत्यादिक बहु परचा पूर, गुरु समरया सब
दु ख जाय ॥ स० ॥ २ ॥ गुरु के नाम से अटसिद्धि नगिधि,
गुरु गुण गावो मन्ही धाय, श्री जिन सौभाग्य गुरि सुगुरु पर,
गहिर करो गुरु मुखदाय ॥ स० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

होरी राग लहरी ।

माया भक्ति से पूर रहो रे, दुरजन सब तर हरो रे ॥ १० ॥
टेरे ॥ मेरे मन में भक्ति बैरागी, चित परणित लगन सु रागी,
मेरी भाग्य नशा अत्र जागी, जिया हो ॥ भा० ॥ १ ॥ सब
सज्जन मिल कर आबो, गुरु चरणे चौक पूराबो, बलि अक्षत
बाल बनावो, जिया हो ॥ भा० ॥ २ ॥ गुरु महिमा बत सवाई,
गुरु नाम सदा सुरगई, गुरु सेवा पाप पुलाई, जिया हो ॥
भा० ॥ ३ ॥ घस देसर भरिय कचोली, माटे मृगमड कुकुम
घोली, गुरु पूज रचो भर भोली, जिया हो ॥ भा० ॥ ४ ॥
जिन हर्ष सुगेश्वर राजा, वाचै जग जशना बाजा, सत्य रत्न करै
सुभ बाजा, जिया हो ॥ भा० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

तिताला घरार ।

जिन कुशल मूर्तिद गुरु मन्त्र नमो ॥ टे ॥ मृग सम्पति ऋद्धि
सिद्ध सत्र हाजर, देश देशान्तर नार्द भगो ॥ जि० ॥ १ ॥
घाट घाट अर विगमी विरिया विष्णु चुराई टू गमो ॥ जि०
॥ २ ॥ अग्निश नाम मत्र उग्धारो, सुगुट चरण चित गमो रमो
॥ जि० ॥ ३ ॥ इकमन ध्यावे वदित पावे, विपत यथा सत्र
दमो दमो ॥ जि० ॥ ४ ॥ अभय महानुग्र सपति पावा,
धिर धानक विरिता जमो जमो ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

ताल डुमरी ।

मन्त्र सहाई कुजल मुक्ति गुरु दो तालत गुरु भयजी ॥ स०
॥ टे ॥ गार्द १ खूटे रारची १ ट्रेटे, गिन २ मधे सवायजी ॥ स०
॥ १ ॥ सत्रजा सुत अरु सुत्र गारी, शुभ परिहर सुखगयजी
स० ॥ मित्र समागम मुजस वभरण, नित प्रति हरस्य उद्याहजी
॥ स० ॥ २ ॥ राजा प्रजा पाय नभे सटु, गुरु समरण मुपसाय
जी ॥ स० ॥ दोषी दुरमन नृप भय पडिया, मत्गुरु करय सहायजी
॥ स० ॥ ३ ॥ विरामी विरिया सकट पडिया, समरघा आवे
धायजी ॥ स० ॥ भूखा भोजन तिसिया पाणी, निरधनिया धन
दायजी ॥ स० ॥ ४ ॥ सघ शकल ने लो सुखशाता, जिम कीरति
जग थायजी ॥ स० ॥ धानक धिरता पर घल भोजन, पगपगं
कुशल सहायजी ॥ स० ॥ ५ ॥ अभय महा सुरदाई सदगुरु, गव
निधि वदित आयजी, सुमति सनाई नित घर सपत, दान
विशान लहायजी ॥ स० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

सद्गुरुजी मुगो गोरी गरजी ॥ स० ॥ टेर ॥ पहिले वाम
 क्रिये बहुतेरे शरना बिल विचारी, पल २ चरु पडी सद्गुरुजी
 ॥ मुतनच का गरजी ॥ स० ॥ १ ॥ ध्यान तुमागे द्रुग्ग
 ध्यायां, पूजा करी नहीं तेरी, तोही सेवक बधित पूजा, याही
 थारी मरजी ॥ स० ॥ २ ॥ निश्चे सेती तुम गुण गावे तुस्त
 कटत दुग्ग बेडी, भक्त उधार कहावत जग में, ताहें करत ह
 शरजी ॥ स० ॥ ३ ॥ ओग देवकू मैं नहीं धाउ, शरणअहीं
 मैं तेरी, दूर वकी मैं भटग आगो, निपत दशा सन तरजी
 ॥ स० ॥ ४ ॥ कुशल गुरु का मे ह सेवक लोक जाणें सब
 कोई, क्षमा रत्न की चीनती मुण्ण, दग्ग दो सद्गुरु जी
 ॥ स० ॥ ५ ॥ इति पद्म ॥

छत्रपती थारे पाय नमेजो, सुग्ग टागर सेव, जोति थारी
 जग जागती दादा, दुनिया मे परतिस देव ॥ १ ॥ ह तो
 मोहि रक्षोजी म्हारा राज, सद्गुस्ते दरवार (टेर) देशर थबर
 केवडोजी, करतुगी कपूर, चपो चदन राय चपेली, भदित कर
 भरपूर ॥ ह० ॥ २ ॥ पागुलिया ने पाव समापे, आवलिया ने
 आख, रूपहीना ने रूप देवे दादा पास हीना ने पास ॥ ह०
 ॥ ३ ॥ चद पाटोधर साहिबा जी, श्रीजिन कुशल सूरिद,
 आठ पहर जाने ओलगेजी, रग घणे राजिद ॥ ह० ॥ ४ ॥
 इति पद्म ॥

सदाना धमार ।

श्री जिनदत्त सूरिदा परम गुरु श्री० (टेर) परम दयाल
 दया कर दीजे, दरशण परम आनदा परम गुरु श्री० ॥१॥ जगम

सुरतरु वदित वायक सेवक जन सुखदादा प० श्री०, सद्गुरु
ध्यान नाम नित समरण, दूर दृष्ट दुःख भटा ॥ प० श्री०
॥ २ ॥ विज पद सेवक साविधिलारी, रन्विये गुरुराजिदा,
प० श्री०, बेकर जोड़ि विप्रयुतविनये, श्रीनि हर्ष मुनीन्द्रा
॥ प० श्री० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

प्रभाती निताला ।

मणि मन्तक पर दीपे जिा के, बड़े हुग जयकारी जी
(टेर) श्रीजिाचदभृगि मणियाते, गुणगात्रे नग्नारी जी, आरा
कां तो और भरांमा, मुक्त को शरण तुम्हारी जी ॥ म० ॥ १ ॥
जल वन्दन अरु पुष्प मनोहर, अक्षत उज्वलकारी जी, धूप
दीप नेत्रेद्य आगती, पूजा फल विस्तारीजी ॥ म० ॥ २ ॥ अल्प
बुद्धि में गुण समुद्र तुम, कैसे करो विचारी जी, शशि मण्डल
जिम जलके भीतर, बालग्रहे करधारी जी ॥ म० ॥ ३ ॥ नाग
प्रताप हमू पर कीनो, कृपा आपनी भारी जी, श्रीजिा चद हर्ष
हृदय में, आवा शरण तुमारी जी ॥ म० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

ईमनी निताल ।

सद्गुरु मणिवारी महाराज, श्रीजिा चद्रगुरीधर साहिब,
दरशण ढांजे राज ॥ टेर ॥ महर करी ने प्रेम धरी ने, विज जन
ने चित्तधार, श्री जिाचद पटोधर मुणिवर, आनन्द सुखदातार
॥ स० ॥ १ ॥ जन दुःख भजन विरुद्ध तुमारे, जाणे सह
नरार, श्रावक जा मां वदित पूरन, सुरतरु ज्यों जगसार

॥ स० ॥ २ ॥ वाद विवादे जगजस पावे तारे जलधि जिहान,
 बाट घाट भय सफट टाले, समरण श्री गुरुराज ॥ स० ॥ ३ ॥
 पुत्र पुनीता परम विनीता, रूपे लक्ष्मी नार, चन्द्र मित्र सुख
 भपत पर मे, बलि भरियो भण्डार ॥ स० ॥ ४ ॥ आरति
 चूरो बधित परो अवधारे अरदान, श्रीजिन चण शक्तय निधि
 दायक, सफल करो हम आस ॥ स० ॥ इति पदम् ॥

सुम इकताला ।

सगुरु करुणा निपात, राग्या लाज मेरी स० ॥ टेर ॥
 जय २ जिन कुशल सूरि, समस्त हातर हजूर, महकन विम
 यगु रूपूर, महिमा जग तेरी ॥ स० ॥ १ ॥ जापर तुम हो
 दयाल, धिा में करदो निहाल, सकट को चूर देन, दौलत की
 डेरी ॥ स० ॥ २ ॥ तुम हो सुगतर समात, बधित फल देवो
 दान, मेरु को दान जान, मेटो भव फेरी ॥ स० ॥ ३ ॥
 शरण आये की रसो लाज, बधित सब पूरो काज, हर्ष चन्द
 शरण गायो, कीरति सुण तेरी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

भूपाली भूपताला ।

कुशल गुरु याइये, वुरान मगन करण, सरतरे गच्छ मे
 अधिक राजे, मान मन में धरी, अगर केशर करी, पूता मन
 तना दुग भाचे ॥ कु० ॥ १ ॥ विकट सकट टले,
 सजन आधी मिले, आपना भक्तनी आस पूरे, यानमन धारजे
 सेव गुरुनी करे, तेहनी आपदा जाय दूरे ॥ कु० ॥ २ ॥
 सक्त सवार दरवार सेने सदा दिन दिने जासु महिमा सवाई

माहरी लाज गुरु राज तुम ने अछे, इम करो जेम बाधे बड़ाई
॥ कु० ॥ ३ ॥ उदय फर २ अधिक खगतर धनी, सूरि जिा
रग सेवक तुमारो, सदा चढती फला करो गुरु माहरी, विपम बैरी,
बुरा दूर चारो ॥ कु० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

विष्णुगत जत ।

कुशल गुरु अंघ मोहि दरशण दीजे ॥ टेर ॥ ऐसी भाति
फरो मेरे सद गुरु, ज्यू मन मूढ पतीजे ॥ कु० ॥ १ ॥ जल
दातार विरुद अमृत रस, श्रवण अञ्जलि भर पीजे, सुरतरु
शम दरशन विन देखे, कहो नयन किम रीझै ॥ कु० ॥ २ ॥
परम दयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुनीजे, परम भक्त
विन राज तुम्हारो, अपनो फर जानीजे ॥ कु० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

भैरवी तिताला ।

कुशल गुरु कुशल करो भरपूर ॥ कु० ॥ टेर ॥ सेवक जन
मन बधित पूरन, समरघा होय हजूर ॥ कु० ॥ १ ॥ परम दयाल
प्रेम रस पूरन, अशुभ हरण भय दूर, सघ उदो फर सद गुरु
मेरा, विनवे श्री जिनचद सूर ॥ कु० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥

भैरवी धमार ।

कुशल गुरु दरशन दीजे हो ॥ कु० ॥ टेर ॥ खगतर गध
पति कुशल सूरिद गुरु, मुझ पर महर धरीजे हो ॥ कु० ॥ १ ॥
पतित उधाग्ग विरुद तुमारो, इतनी अरज सुणीजे हो ॥ कु०

॥ २ ॥ आधि व्याधि अरु दोषी दुश्मन, ये सब दूर हरीजे हो
 दु० ॥३॥ क्षेम रता सेवक कुं निरु दिन, सदगुरु सानिभ कीजे
 हो ॥ दु० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

भैरवी खेमटा ।

गुरुदेवजी का आगत सदा, चित्त में लाइये, भव भव में सकल
 पातरु, बिन मैं मिटाइये गु० ॥१॥ निरुपम भूरूपजिनता,
 अमी रस में है भरत, निर्मल गुणों को देर के, आनन्द सुख पाइये,
 गु० ॥ २ ॥ साहिन सुजान जिनके, चरण की शरण गही,
 आगी सुमति सु घर से, परम पद को ध्याइये, गु० ॥३॥ दाता
 दयाल इन के, सिवा जग में कोन है, जिनकी कृपा से बोध,
 हिया मैं जगाइये ॥ गु० ॥ ४ ॥ गुरु भक्ति आन अपन, हृदय
 बीच चुन्नीदास, सेवा में मन को दीजे, सु जस मुखसो गाइये ॥
 गु० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

गोठ मछार आडा चौताला ।

कैसे कैसे अवसर मैं गुरु रासी लाज हमारी, कै० ॥ १ ॥
 मोकों सबल भरोसा तेग, चदसूरि पटधारी ॥ कै० ॥ १ ॥
 तुम बिन और न कोई मेरे, या जग मैं हितकारी, मेरा जीवन
 हाथ तुमारे, देखो आप विचारी ॥ कै० ॥ २ ॥ प्रागे तो केह
 बेर हमारी, चिन्ता दूर निवारी, अपनी बेर भूल मत जावो,
 सगुरु परउपगारी ॥ कै० ॥३॥ प्रबकी आप लाज गूजरकी,
 रखिये गुरुयश धारी मेरे उराल सुगिद गुरु तेरा, वडा भरोसा
 मारी ॥ कै० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

आसावरी धमार ।

श्री गणधर गुरु कुशल सूरिन्द के, चरण कमल परवारी ॥ टेर ॥
 केसर चन्दन अन्तत कुमकुम, जल भर कचा भ्तारी ॥ श्री० ॥ १ ॥
 देव ने श्रागे मगन दीपक, फूल धरो फुलवारी ॥ श्री० ॥ २ ॥ ऐसी
 भाति करो विधि पूजा, आन कै चित्त इक्तारी, राज कहत मेरे
 परम गुरु की, नेर २ नलितारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

सारग कहरवा ।

वारी जावों गुरु रात्र चरण की, वा० ॥ टेर ॥ श्री जिा
 दत्त श्रीश्वर सद्गुरु, सफल घड़ी सेवा चरन की ॥ वा० ॥ १ ॥
 प्रथम भगल गुरु राय की सेवा, अशुभ कर्म सब हरन की ॥
 वा० ॥ २ ॥ ढागिन्द्रि भजन गारि सब गजन, पग २ सानिध
 करन की ॥ ३ ॥ मोहें नहि परवाह अनेरी, शरण गही इन
 चरन की ॥ वा० ॥ ४ ॥ श्री जिा हर्ष तुम चरण को दासा,
 आश पूरो सुख करन की ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

चाल लूअरकी ।

सद्गुरु पूजन जावस्या, कुशल सूरिन्द गुण गाम्या हे माय ॥
 टेर ॥ स० श्रीफल भेट चडावस्या, चरणारी पूज रचाम्या हे
 माय ॥ स० ॥ १ ॥ मारुदेश म शोभता, नगर बीकाणे राजे
 हे माय स० ॥ गाम-गडाले दीपता, महियल महिमा धाजे हे
 माय ॥ स० ॥ २ ॥ समरया सकट चूरता, कुशल करन अब-
 तारी हे माय स० ॥ मुग दायक श्री सपने, खरतर गच्छ

अधिकारी हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ दूर देशांतर थी घणा,
 हिलमिल यात्री आवे हे माय स० लुल २ शीश नमावता, मत
 सुजस मिल गावे हे माय ॥ स० ॥ ४ ॥ समूह सिण्णगर मणो-
 हू, ठम २ पाँय ठमकावे हे माय, तन मन प्राण लोभावती,
 गोरी मगल गावे हे माय ॥ स० ॥ ५ ॥ विद्यव्या साजन मेलने,
 अनर्भी पाय नमावे हे माय, मनरा मनोरथ पूरे, पर घल लख
 मीलावे हे माय ॥ स० ॥ ६ ॥ विस्वमी वेला वाट मै, समरघों
 सानिध आवे हे माय स० ॥ भूखा भोजन मेलवे, तिसिया नीर
 पिलावे हे माय ॥ स० ॥ ७ ॥ यात्री आवे नित नवा थान
 आगल थिर थाट हे माय, सीरण्या नित सामठी, गावे गुण
 गहगाट हे माय ॥ स० ॥ ८ ॥ कुशल सुरिन्द गुरु आगले,
 भवि मिल भावना भावे हे माय, चदफते मुनि नित नमें, पर
 मानद सुख पावे हे माय ॥ स० ॥ ९ ॥ इति पदम् ॥

दादा चिरजीवो, सबक जन सुखदाई दृग्गण सदा देवो ॥
 टेर ॥ दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समरथा आपे सुख
 शाता, दादो जग बधव जग गुरु आता ॥ दा० ॥ १ ॥ दादो
 परचा जग सगले पूरे, दादो सेवक ना सकट चूरे, दादो दुरित
 हरे सहुनी दरे ॥ दा० ॥ २ ॥ दादो अलगा थी यात्री आवै,
 दादा देखी नै ते सुख पावै, म्हारा दादाजीनी जोड़ कोई नावै ॥
 दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगर माटे धाजै, जिहा सुजस नगर
 नित बाजै, दादो धोगाला सेहर धाजै ॥ दा० ॥ ४ ॥ दादा घस
 केमर सूकड़ घोली, हाथे लेह सोवन कचोली, पूजे दादानी
 नै मिल २ टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरतिया आगति टाले,

दादो सेवक जन नै प्रतिपालै, दादो जिन शासन नित उज-
 वालै ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमापत महाराजा, दादो राजै
 स्वस्तरगद्य राजा, दादो समरघा सफल करै काजा ॥ दा०
 ॥ ७ ॥ दादो कुरल सुरिन्द बहु गुण धारी, दादो परतिख मु-
 तरु श्रवतारी, जाऊ दादाजीनी ह बलिहारी ॥ दा० ॥ ८ ॥
 दादो श्री जिन चद सुरिंद पाटे, दादो गाजै गुणियन गह गाँटे,
 जसु थान सोहै जग थिर थाँटे ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा महर
 निजर मुक्त पर करिये, दादा श्रारति पीड़ा दु ख हरिये, दादा
 जिम जग जय कमला वरिये ॥ दा० ॥ १० ॥ दादा सेवक ने साधि
 करजो, दादा दुश्मन ने दूरे हरजो, जिनचद ना मन वञ्चित
 फलजो ॥ ११ ॥ इति पदम् ॥

गाजै जिन कुरल गडालै, सेवकना सकट टालै हो ॥
 गा० ॥ १० ॥ टेरे ॥ परतिख गुरु परचा मूरे, सेवकनी चिन्ता चूरे हो ॥
 गा० ॥ १ ॥ धतरी नितरी द्यवि द्याजे, विचमै थिर थूम विराजे
 हो ॥ गा० ॥ भुलरे यात्री मिल आवै, दादोजी दीटा सुख पावै
 हो ॥ गा० ॥ २ ॥ केसर घस भरिय कचोली, माहे बलि मृग
 मड घोली हो ॥ गा० ॥ पूजो पग नीर पत्ताली, गावो गुण
 गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ दादोजी दु खिया सुख देवै
 निरधनिया धन नित देवै हो ॥ गा० ॥ ह्य हाथी रथ पति
 बहुला, गुरुना में पावै कमला हो ॥ गा० ॥ ४ ॥ सकजा
 सुत सुन्दरनारी, पावै परिकर सुख कारी हो ॥ गा० ॥ अलगा
 थी रोग गमावै, गुरु पूज्या वञ्चित पावै हो ॥ गा० ॥ ५ ॥
 पावै गुरु तिसिया पाणी, तिण बेला जलधर, आणी हो ॥

गा० ॥ मह गोचर चोर ज्ञान पीटा हुँ शाने माने हो ॥
 गा० ॥ ६ ॥ बाने जा जउना गाजा, गंज गरसगन्ध राग
 हो ॥ गा० ॥ जमु जैत त्रिरी वर भा॥, जिह्वागर मति दिम्ब्याता
 हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ मन्मन मनरेमय इक्यामो वाती पूनम
 परासी हो ॥ गा० ॥ मह गच सहित जुविलासै, अधिपे धर
 हेत जहाने हा ॥ ८ ॥ उग यात्र करी आशुदे, निन भक्ति
 धतीधर ब द हो ॥ गा० ॥ इति षट्ठ ॥

सुगन्तावती ये साभनो श्रीगिरि रत्न भूमिग हो मेव नै
 साधि करी, पुरी माहजगीम हो नीलत नी हो नगरी
 सपन दी ॥ दो० ॥ १ ॥ तातत नी गुर माहरा, थाग विर
 अनेक हो था समरवा सन्ट टने, साही नगरी नीग टण
 हो ॥ दो० ॥ २ ॥ जीती चासठ योगरी, धस निया बावा
 बीर हो, सिध माहै नगे साधिया, पच नी पच धीर हो ॥
 दो० ॥ ३ ॥ पटिकमरा गाहे बीजती, बैतिय रति भववाय
 हो, थे मने राखी तिका, तुठी बरदे जाय हा ॥ दो० ॥ ४ ॥
 उच्छ्रव करता उच्च मै, मुगो मुगा रो पून हो, जाय धरी नै
 जीवाडियो, सघ माहै राग्यो दाँद सूत हो ॥ दो० ॥ ५ ॥
 बहनगर रे राक्ष गे, देहे धरी मृन गाय हो, पर प्रवेश विद्या
 बले, पिशु न लगायो दाँद पाय हो ॥ दो० ॥ ६ ॥ विरमपुर
 व्यापी मरी, ठर नियो सहु दु ख हो परिमार पिण पोतै नियो,
 सहु नै दियो दाँद सुस हो ॥ ७ ॥ अबड हाथे अक्षरे, थे प्रगथ्या
 तत रेस हो, युग प्रगन पद तु जयो, आखे अम्भरा देव
 हो ॥ दो० ॥ ८ ॥ थाभो उज दिदरने, पोधी परगट कीध

हो, विद्या सोवन अक्षरे, उज्ज्वलां माई तीथ हो ॥ दो० ॥ ९ ॥
 इम विरुत घणा छे ताहरा, फटता नावै पार हो, भाग्य मयोगे
 दादो भेटियो, अडनटिया आधार हो ॥ दो० ॥ १० ॥ ह छू
 सेवरु ताहरो, थे प्रापो धन अद्ध हो, कनरु कीरति सुपसाउले,
 लाग उदय सुरा सिद्ध हो ॥ दो० ॥ ११ ॥ इति पदम् ॥

हू तो अरज करू कर जोडनें जी म्हारी गरज मुणो
 गुरगय सद्गुरु मुनिचर जोयजो सात्रा, भिरुद घणा छे
 राजराजी काई, सृगि सकल शिर ताच ॥ स० ॥ १ ॥ थारे
 रावल गणा राजर्षी जी काई, थारा पूनम पूजे पाय ॥ स० ॥ केसर
 अग्र नै कुमकुमा जी काई, मृग मद ग्दी महकाय ॥ स० सु०
 ॥ २ ॥ थारे घुडलारा आगल वृमराजी काई, दुलत चमर गज
 दाल ॥ स० ॥ कारण सेवै कामनीजी काई, निरस करै जी
 निहाल ॥ स० सु० ॥ ३ ॥ थारी ठावी ठोठै थापनाजी काई
 उण्यापुग आनेग ॥ स० ॥ थारी महिमा भली गुरु भेटतेजी
 काई, सालूडे वाली सागापेर ॥ स० सु० ॥ ४ ॥ थारी जोत
 घणा वणू भिगमिगेजी काई, बधती गढ़ वीकाण ॥ स० ॥ आम्या
 पूरण आपजोनी थे तो, देरानररां दिवान ॥ स० सु० ॥ ५ ॥
 म्हारी वीनतडी भल मानज्योजी काई, दादाजी दीनदयौल ॥
 स० ॥ कुशल सदा कविगजनै जी काई, पाटोधर प्रतिपाल ॥ स०
 सु० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

सागानर निराजे, गुरु पगतिर निटा राजे रे, म्हारा सद्गुरुजी
 नी बलिहारी ॥ देर ॥ मन बच्छित पुरो म्हाग, म्हेतो चरण

पखाला धारा रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ मोहन भरिय कचोली माहे
 बलि भृग मठ घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजू सद्गुरु पाया पूज्या
 सध पाप पुलाया रे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ पृनम नै सोमवारा, थारे
 यात्री थारै अपारा रे ॥ म्हा० ॥ शुद्ध मा पूजा कीजै, दु स
 दोहग दर हरीजै रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इण कलयुग माहे धारी,
 फीरति चिहु दिशि माहै मारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह मम अवर न
 फोई, दीठे में परतिव जेई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूहेवाली
 सागानैरे, जिहा राज करे नित मेरे ॥ म्हा० ॥ श्री सध मिल
 तिहा आवै, जिहा लूणिया गोठ रचावैरे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ जान
 सार गुरु राजा, ज्यारा बाजै सदाई नाबाजा रे ॥ म्हा० ॥
 क्षमानदन गुण गावे, कर जोई शीश नमावै रे म्हा० ॥ ६ ॥
 इति पदम् ॥

आयो २ रे समरता दानोजी आयो ॥ टेर ॥ सकट देग
 सेपकक सद्गुरु, देरावरतै धायो जी ॥ स० ॥ १ ॥ वरमे मेह
 नै रात अवेरी, वायु पिण सजलो वायो, पचनदी हम वैठ बेडी,
 दरिमे चित्त टरायोजी ॥ स० ॥ २ ॥ उच्च मणी पोहचावण
 आयो, खरतर सध सवायो, समय मुन्दर व्है कुशल कुशल
 गुरु, परमानन्द सुरा पायो जी ॥ स० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

बिलमै अद्वि समृद्धि मिनी शुभ योगै पुण्य दशा सफली,
 जिन कुशल सूरि गुरु अतुल बली, मन वच्छित आपै दादो
 ग्ग रली ॥ १ ॥ मगल लील समै निपुला, नमनवा महोच्छव
 राजेला, क्षसायै गुरु चढती कला, मुफलीणी पुननी महिला
 ॥ २ ॥ सन ही जिन थायै सबला मन्वास अपूरतणा कुरला,

ह्य गय रज पायक बहुता फलोत्तर गरि कमला ॥ ३ ॥
 योभै चमर निगान पुगे, नर ये दरवार खडा पहुर, जय २ कर
 जोडो उचरे, सानिद्ध गुरु सव कान मरे ॥ ४ ॥ मरसा भोजन
 पान सदा, दु ग रोग टुकाल ३ हाय कण अविचल उलट
 प्यग मुद्रा गुरु वृम टाष्ट प्रमत्र सदा ॥ ५ ॥ घन २ महल
 नाद पुमे, वयोसे नाटक रग रमे, प्रगटयो पुण्य प्रताप हमे,
 अरला अग्नियणते आय नमे ॥ ६ ॥ तन मुख्य मा सुग चीर
 तगे, पहरे वेला उर होयखा, व्यापे कुशल गुरु एर मने,
 जृभक सुर भदिर भाय घने ॥ ७ ॥ तन गिरान गन गन्यो प्रापे
 र्गि श्याम घटा मेह परमोप निसिवा तोय नुगत पावे, जल
 गता त्रिजग मुजम गाये ॥ ८ ॥ नहरदा जल फलोत्तर करे
 प्रदण्य भगमायर मन्कडर, वृटना नाहन जे समरे, ते आप्त
 निश्चय थी उचरे ॥ ९ ॥ गट खड खडग प्रदण्य बह सौगमिणी
 जिम मम सेर नोहे, कुशल २ गुरु नाम कह ते जेन कुशल
 रण गभक्त लहे ॥ १० ॥ जुभ सकल परचा परे, श्री नागपुरे
 सट्ट चूर, मगलोर अरिके नुरे, टेराउर भय टाले दर
 ॥ ११ ॥ वीरमपुर जात सुभर, गभायनपुर विजय नगरे, जिन
 चद्र सरि पाटे पवर, जसुकीरति मरी मडल परम ॥ १२ ॥
 पूर्य पश्चिम दार्निण्य आगे, उत्तर गुरु नीप सोभागे, दृदिशि
 जन सेवा माग, श्री गुरतरगच्छ नी महिमा जाग ॥ १३ ॥
 पुरपट्टन जनप ठामे, गाहजे गुल नारगामे पूज ने नर
 हित कामे, ते चक्रवाच पदवी पाम ॥ १४ ॥ श्री जिन कुशल
 सरि शास्त्रे, नदो भार जन न सुखिया रावे, समरदा गुरु
 दरशन दावे, श्री माधु फोति पाठरु भावे ॥ १५ ॥ इति पन्म ॥

पुनः

आयो सहु श्री सध आस धैरे, गुरु मौन गढा कहे केम
 सैरे, दरशन वहिलो सदगुर दाखो, निज सेवक जाण मह
 राखो ॥ १ ॥ द्य विखर्मी तिरिया आय बणी धेहवी करिये
 तुम्ह अरज घणी, हिव अलगा द्यो तो वेगा आयो, हिव ठील
 घड़ी भर मकगवां ॥ २ ॥ तु सदगुरु खरतग्गध माचो, फेई
 यन जाणे तुम्हने काचो, द्यण सकट मे आलम मक्गे, दादा
 दुश्मन ने दूर हरो ॥ ३ ॥ कोढ चक पड़ी सदगुर हम सु,
 तो जिम कट सो तिण पर राम सु, पिण हिनणा हठ ये मत
 ताणो, निश्चय पोता नो कर जाणो ॥ ४ ॥ आया सत्र श्री
 सत्र थठालगे, पाधा किम जाना द्ये पगे, द्यण पर करिये गुर
 अरज इमी, हिव सगला मेलो करो खुशी ॥ ५ ॥ जिम कुराल
 सुरीमर जग चाणे अपणायन कर वेगा आयो, अगला विस्त
 ये उजवालो, पर धन निज छोरू प्रतिपालो, ॥ ६ ॥ गुण गाम
 गढाले ये गायो, सुखता सदगुर वेगो आयो राजी हुय सगला
 रगरली, चिन चदनी आम्हा सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदम् ॥

कामितकामगवी, सुगुरुमेरो कामि० ॥ टेंग ॥ मन शुद्ध शाह
 अक्कर दीनी, युग प्रधान पदवी ॥ सु० का० ॥ १ ॥ सकल
 निशाकर मडल सम सूरि, दापत वदन धवी ॥ सु० का० ॥ २ ॥
 मदि मडल माहें महिमा जाधी, दिन प्रति नरी नवी ॥ सु०
 का० ॥ ३ ॥ जिम माणत्र्य सूरि पाट उदय गिरि, श्रीजिन चद्र
 रवी ॥ सु० का० ॥ ४ ॥ पेरात ही हरखित मयो मन मेगे,
 रत्न निधान करी ॥ सु० का० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

चाल पण्डितारी की ।

पाटोधर गुरु गङ्गपति सद्गुरुजी हां कुशल मूर्ति गुप्त
 राज, बाला छो, नायक श्री जिन धर्म ना ॥ स० ॥ तायक सुग
 शिर ताज, बाला छो ॥ १ ॥ भक्त बद्धल भगवन्त छो ॥ स० ॥
 सरणाई साधार, बाला छो, दरशण बहिनो नीजिये ॥ स० ॥
 करुणानिधि कर्तार, बाला छो ॥ २ ॥ वीनतडी अवधारिये ॥
 स० ॥ पुरो बधित काज, बाला छो सेरक पर मुनिजग रगे ॥
 स० ॥ महर करे महागज, बाला छो ॥ ३ ॥ मरतग्गयना
 साहिबा ॥ स० ॥ सेवक जग प्रतिपाल बाला छो, परचा पूगे
 परगटा ॥ स० ॥ वग्जस जगत निस्त्यात, बाला छो, दुरजा जग
 दूरे करे ॥ स० ॥ म्गत्तग्गय हिनकार बाला छो ॥ ४ ॥ उदय
 करे जिन धर्म नो ॥ स० ॥ टण पचम रलिकाल बा० ॥
 एक भरोसो आपरो ॥ स० ॥ चरण शरण आधार बा०
 ॥ ५ ॥ मदिमा मोटी राजरी ॥ स० ॥ महियल मे मुखर
 बा० ॥ दीन दयाल दया करी ॥ स० ॥ दीजिये बधित दान
 बा० ॥ ६ ॥ जिन मौभाग्य मूर्ति वृ ॥ स० ॥ पर उपगार
 प्रधान बा० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

राग ।

कुशल गुरु की निरखण दो असवारी ॥ टेर ॥ केसर
 चदा अवर कुमकुमा, मृगमत् महक अपारी, अवर गुलाब केतकी
 चपो, फूल रही गुलन्यारी ॥ कु० ॥ १ ॥ देव भवा को इन्द्र
 भवन है, भिगमिग जोति विचागी, बधित फल दायक वरदाई

मुर मारी मुख्यारी ॥ सु० ॥ १ ॥ गला गला नृपत ठाठ
 मचत हे, एय गय भीड़ हजारी, रावत राय रोठ सेतापति, श्रावण
 है अस्वारी ॥ कु० ॥ ३ ॥ भरी शय गृदग घन बाजत, गुर
 नाई मुर मारी गावत हे केद मवुर मधुर धुनि, मानव गाग
 मझारी ॥ सु० ॥ ४ ॥ गङ्गनायक श्री चर पटोधर, स्वरतरंगध
 यस्तारी पद्म सूरि य अरज करत हे कुशल २ सुरमारी ॥
 कु० ॥ ५ ॥ इति पद्म ॥

राग प्रभानी ।

दरशण ने दु प माने दाटा दरगा ने० ॥ टेग ॥ सावे
 मन ममेर सदगुरु क, तिशाव तुरत निवाजे ॥ तादा० ॥ १ ॥
 ताल नवलगद थाग मगोहर भाव भक्ति प्राति छाँव ॥ तादा०
 ॥ २ ॥ यात्रा करण श्री सय उमासो, पच गम सुनि गाँव ॥
 दादा द० ॥ ३ ॥ ओठ टोड थाक मद्गुरु का महिमा गाँव
 विसावे ॥ दादा द० ॥ ४ ॥ कल्याण विनय कहे कुशल मूरिद
 गुरु, रारतरंगध गिवाँव ॥ तादा द० ॥ ५ ॥ इति पद्म ॥

राग चलत भैरवी ।

गय गणनायक नय वगनायक श्री गुरुनेय गगोशा ॥ जय०
 नेर ॥ तुम नृ निशतिन ध्यावत मुर नर, शोभा करत सुरेशा,
 चड कान्ति गुण निरमल शोभित, यश गगावल जसा ॥ जय०
 ॥ १ ॥ नाम प्रतापैत अर्दासिद्ध नमनिद्ध, राजर दीत हमेशा,
 दाटा माहिब यदित दाता, फलुम सुरतरु जसा ॥ ज० ॥ २ ॥
 पूवन चरण पुप पर हरनित, नायक मद्गल नरेशा, श्री निद

कुशल सूरि गुरु मेघन, पावत फल गजेया ॥ श्रम० ॥ ३ ॥
इति पदम् ॥


राग विहाग ।

मोक्ष शरण तिहाग कुशाग गुरु मोक्ष श्र० ॥ टेर ॥ सुपन
ही सोवत निम दिन जागत चरण कश्यु आधारा कुरान गुरु
मोक्ष ॥ म० ॥ वाट घाट गिदपाल सदाई, आपन विपन विभाग,
दह दिसि टीपे महिमा जाकी, परतिव सकन ससारा कु०
मो० ॥ २ ॥ धाहीना कृ धा के दाता आपे बहु परिवारा, सङ्गुरु
गुण गाये सुग्न शयन, श्री जिन हर्ष श्रपाग कु० मो० ॥ ३
॥ इति पदम् ॥

राग कैरवो ।

सेरो सुगुरु तुसदायेरे मे० ॥ टेर ॥ श्री जिग कुशल
सुरीसग माहिय, नन तिध वाधिन वायेरे ॥ मे० ॥ १ ॥ आधि व्यापि
प्राए नेपी दुष्मन नाम लिया भग जायेरे ॥ से० ॥ २ ॥ नरा
चदन अन्तत तुगनुग, पूजो पित हित लायेरे ॥ मे० ॥ ३ ॥ राट
घाट अर पित्वमी विरिया, सप्ररघा होत सहायेरे ॥ से० ॥ ४ ॥
श्रभय महा सुगदाई सङ्गुरु, पग २ वदित थायेरे ॥ से० ॥ ५
॥ इति पदम् ॥

राग फहरया ।

गुरु वदन आये विबुध पती ॥ टेर ॥ सुरगण गाये रीर
नगाये, गुण ने गधर्व गती ॥ गु० ॥ १ ॥ युग प्रयाग जग
गुरु नग  होम जिनदत्त मरि यती ॥ गु० ॥ २ ॥ वरगई

वाचा जग जाचा माचा माहिवदन गर्ती ॥ गु० ॥ ३ ॥ विपद
 विदारण सपत कागण, विरुद नभारण वडवस्ती ॥ गु० ॥ ४ ॥
 सदगुरु दरम मुधारस, वसत, पाप सताप रहै न रती ॥ गु०
 ॥ ५ ॥ चद चमार मोरघन गरजत, चित चाहत नित चरणनती
 ॥ गु० ॥ ६ ॥ श्रीजिन हर्ष सूरिंद गुरु सेवम, सेवक सुगुण
 करे विनती ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति पदम् ॥

निरमल हृद भजले प्रभु प्यारा । राग ।

हुगल सूरिंद गुरु ध्यान धरो हिये, ज्यू होवै आनद अधिरु
 अपाग ॥ कु० ॥ निरमल नीर पखाली नित तनु पहिरी क्षीरोदक
 वस्त्र सुप्याग ॥ कु० ॥ १ ॥ कचन कलश भरी पचामृत, चरण
 पखाले शुद्ध प्रकाग कु० ॥ केमर घाली भरीय नचोली माहै
 मृगमद घसघन साग ॥ कु० ॥ २ ॥ धूप दीप बलि श्रद्धन
 नवघ, फल पुष्पादिक गहु विधसाग, अन्न द्रव्य सत्र पचन केरा
 भावै लीजै चित उदार ॥ कु० ॥ ३ ॥ गुग्गु चरणामृत जगेचर
 नित, दुष्टदुष्ट गण जाग विकारा सदगुरु नाम जिये सन नासे
 आधि व्याधि दुःख दोष प्रचारा ॥ कु० ॥ ४ ॥ पर २ भंगल
 नरनिष अद्ध सिद्ध, हाजर होय रमेश अपारा, श्रीजिन सौभाग्य
 सूरि सुगुरुपद, सेवत होय सने सुखकाग ॥ कु० ॥ ५ ॥
 इति पदम् ॥

राग ।

जिदत्त सुगुग्ग बलिहारी सुखकारी ॥ जि० ॥ १ ॥ सध सकल
 नो सकट बागी, पच नती जिन नागी ॥ मु० ॥ १ ॥ विद्या पोधी

परगट घागी, थागो वज्र विदारी ॥ मु० ॥ २ ॥ मृतक गऊ
जिन जिन गदिर तै त्र तै वरिय उठागी ॥ मु० ॥ ३ ॥ गान
साग गुरु नगरा कमल पर घागी जाऊ वार हजागी ॥ मु०
॥ ४ ॥ इति पत्रम् ॥

(पाल) विलम्बे ऋद्धि ममृद्धि मिली ।

गन वदित पूरण जगन्नाथो, जितउच्च नृगीभर गुर ध्यावो,
श्यापद तमु नाम धर्या विषट अगृन्तिती नष्टि घरे प्रगट ॥ १ ॥
सुन्द सुत्रम तणो पार न पाऊ, पिरु भवित धर्या तुम्ह नै ध्याऊ,
ह बडगोत्रे चाट्ट दे माता, बुधुरानगरी बाधन ताता ॥ २ ॥
सवन हजार बर्तीमे, जनम्या शुभ महुम्त शुभ दिवसे, दीना
इतरे इकनाले, गुरुपद् धाया आश्वन टाले ॥ ३ ॥ गुणुत्तर
घट्ट वैशाख बदी, चित्तुष्टे धाप्या गन्धपत्ती, मन्त्रि धमे पोथि
जागी, त्रिधा बल निज पागे श्राणी ॥४॥ जोगशिया श्रावक रूप
क्रियो, उज्जयणी मे उपयोग श्रिया, बमरा बानोटा तामु मने,
गुर धीर्ना तत्तभिरु मन चले ॥ ५ ॥ बटानगे तामगु मनरु
गऊ, जित मन्त्रि हारे जाणुमहु विद्याबल ब्राह्मण पाय नम्या,
गुरु गदिर धरी अपगध नम्या ॥ ६ ॥ तिहा मुगल तणे मुन
जीव दियो, साभेला माहे मग क्रियो, बीजली पात्र नले राश्या,
ये विन्दु तणा छ जग माम्नी ॥ ७ ॥ गिरगार मटण श्रवा
देरी, श्रद्धम भजे श्रवण सेरी, हुय परगट करतल वरु निस्त्या,
वानता युग परधान लख्या ॥ ८ ॥ भर दगिये प्रवहण पार
करघो, समरना गती छप भगो, बल अमन तोर म्वापर केग,

भय भया ताम सुगुरु तेरा ॥६॥ तुम्ह सुनिज्जर शत्रु पाय नमै,
 मत्त हीरा खिपारे पुत्र रमे, रगतरगद नायक गुरु राया, बहु
 पुरय थकी ढरगण पाया ॥ १० ॥ सबत वारसे इजारे, मुर
 पुरन में त्रिहु जग सारे, इजारास सुदि आभाद तणी, अजमेरे
 पटना स्वर्ग भर्णा ॥ ११ ॥ थिर थापना धूमे निन गने, गुरु
 मजस तणा वाजिय वाजै, उडवडा नरपति तुम भ्यावै, दरशण
 करमा जानी आवै ॥ १२ ॥ समरया सदगुरु मुराकारी, जिनदत्त
 सूरीसर तलिहारी, अचतामणि रयण समो देवा, दया गरु चाहे
 सुगुरु रोवा ॥ इति पदम ॥

ढाल त्रिल्लियाती ।

अरे ला ता आजिन तुशन मूर्तिमन्त, सर्वाजे मन शुद्ध
 जाने लाता, परतिप परचा पूरने, इन फलिपुग मे गुरुराये
 लाला श्री जि० ॥ १ ॥ अरे लाला फेसर चदा घसकरी
 पूगे मेती घासाररे लाला, पवित्र वन पढरी करी, नव नेवज
 करो उदाररे लाला, श्री जि० ॥ २ ॥ अरे लाला उभ भलो
 दे राउरे, शोभा बहु जेमलमेरे लाला, मुलनान मरोट मै, गुरु सोह
 बीफारेरे लाला ॥ श्री जि० ३ ॥ अरे लाला योधपुर नै मेडन
 जैतारण नै नागोरे लाला, सोभन नै पालीपुरे, नाला श्री साचाररे
 लाला ॥ श्री जि० ४ ॥ अरे लाला गजनगर नै सूने, रामायन
 पटण माहिर लाला, मेनुजे मोटे सडा, नवे नगर उवाहरे लाला,
 श्री जि० ॥ ५ ॥ अरे लाला पुर पुर मै डम बीपतो, दाढो जी
 पन्दिम दर्ग लाला हक आगा पुरव निण नगमह सारे

सेवरे लाला ॥ श्री जि० ॥ ६ ॥ श्रे लाला नामे सकट
सविटले, तिसिया ने पावे नीररे लाला, रण में जे समरण करे,
सद्गुरु होवे तमु भीररे लाला ॥ श्री जि० ७ ॥ श्रे लाला
इम महिमा जग जेहनी, जाणे सहु को नर नाररे लाला, सुख
सपत थे सेवका, बहु पुत्र कलत्र परिवाररे लाला ॥ श्री जि०
८ ॥ श्रे लाला समरघा दरशण देइज्यो, सेवक नी कग्ज्यो
साररे लाला, राज सागर कर जोड़ ने, धीनती करे बारवाररे लाला
॥ श्री जि० ९ ॥ इति पदम् ॥

(मोरा भोला गुरु पाणी मंत्र दे तीन चलू) राग ।

दादा कुशल सूरिंद, तुम दरशणतै परमानन्द ॥ दादा० टेर ॥
नित तेरे प्रभुपद शरविद, वदे रावल राणा वृद ॥ दादा० ॥ १ ॥
तुम दरशण से मुक्त मनजोर, हरल लहे जिम चन्द चकोर,
दादा० ॥ विरुदनिमुणी जिम जलधर शोर, मुक्त मन नाचत
जिम वन मोर ॥ दादा० ॥ २ ॥ तगणि इतती जलधि मभार,
ते तारी निज गुण सभार ॥ दादा० ॥ बधित पूरण अतहि
उदार, कलि में गुरु सुरमाणि श्रवतार ॥ दादा० ॥ ३ ॥ तो सम
सुर नहीं दीनदयाल, तुम हो शरणागत प्रतिपाल ॥ दादा० ॥
तुम समरण तै लहे विशाल, सेवक जन नित मगल माल ॥
दादा० ॥ ४ ॥ अजीमगजपुर में सुगन्दाय, धूम निराजे सहु
मन भाय ॥ दादा० श्री जिन हर्ष सूरिंद सुपसाय, दरशण
लखो शिवचन्द मुहाय ॥ दादा० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग सारग ।

नित नमिये कुशल सूरि दजी नि० ॥ टेर ॥ परचा साचा

नवला पूरे, ये देवा सिर इदजी ॥ नित० ॥ १ ॥ अष्ट महा-
भय विघन निवारै, चिता चूरे मुण्डिदजी ॥ नि० ॥ मुद्गर सूरत
चदन सुहावे, दीठा पृनमचन्दजी ॥ नित० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥

राग सारंग ।

नित कुशल सूरीसर ध्याइये ॥ टेरे ॥ सदगुरु सेरा मन
शुद्ध करके, मा बधित फल पाइये ॥ नित० ॥ १ ॥ चित्ता
सरुट कष्ट पिटारण, श्री गुरु नाम कहाइये ॥ नित० ॥ दीन
दयात दया कर मोपर, दु स सच दूर गमाइये ॥ नि० ॥ २ ॥
मकसदावाद मे शुभ धप्यो है, शुभ वेला सुरदाइये ॥ नि० ॥
रासी पृनम सदगुरु भेटघा, हरख २ गुण गाइये ॥ नित०
॥ ३ ॥ प्रहमम सदगुरु ध्यान धरीजे, चरण कमल चित लाइये
नि० ॥ आलमकू निज सेवक जारी, आनड अधिक बधाइये ॥
नित० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

राग नट ।

दीपे बड़ली मे गुरु थारो देहरो ॥ दी० ॥ टेरे ॥ जिहा जिन
दच कुशल गुरु मोहत, सरतरगछ को सेहरो ॥ दीपे० ॥ १ ॥
रमणी रग बधावो सुगुरु, को, मस्तक धरणी को वेवरो ॥ दी० ॥
पाटण सघ सहित जिन चद सूरि, जात्र करत बाण्यो नेहरो
दीपे० ॥ २ ॥ जाकू सानिधकारी सदगुरु, दचण अहे वाको
छेहरो ॥ दीपे० ॥ महिमराज ऊपर सुनिजर कर, नृठो सुधागस
मेहगे ॥ तीपे० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

देशी करहेरी ।

देरावर थारो देहरो हो साहिव, गढ़ बीरगणे राज, नबला थे
 नागोर में हो साहिव, मोज समद जिहाज, थापर वारी हो सद्-
 गुरुजी साहिव मुजरो मानोजी राज ॥ १ ॥ टेर ॥ महिमा घणी
 थारी भेडते हो साहिव, माने जैसलमेर, तप थारो सूरज तपे हो
 साहिव, छत्र धरावो सागानेर ॥ थापर वारी० ॥ २ ॥ चरणे
 चढाऊ केतकी हो साहिव, सूधो जी अगर गुलान, भमर लपेटी
 मालती हो साहिव, जाई जूई रे जवान ॥ थापर वारी० ॥ ३ ॥
 दीवलो करू फपूर रो जी साहिव, महके मैण मेंताव, धूपउ खेजू
 करू आरती हो साहिव, गगाजल रो आव ॥ थापर वारी० ॥ ४ ॥
 केसर भरू कटोरड़ी हो साहिव, पूजू जी थाहरा पाय, नव नेवज
 धरनेतरुहो साहिव, मिश्री दूध मिलाय ॥ थापर वारी० ॥ ५ ॥
 बिडलो पान पचासरो हो साहिव, नायक नागरबेल, माहे सुगधी,
 एलची हो साहिव, मुखड़े परिमल मेल ॥ थापर वारी० ॥ ६ ॥
 अमर करो नैण अमी भरो हो साहिव, श्री जिन कुशल सूरिन्द,
 राज रमण रीभा करो हो साहिव, अरज करे राजिन्द ॥ थापर
 वारी० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

राग केदारो कहरवो ।

गणधर सेवो गुरु कुशल सूरी ॥ ग० ॥ टेर ॥ अमल
 विमल राशि मुख छत्रि सौहे, निरख २ नैना हरख भरी ॥ गण०
 ॥ १ ॥ नयन कमल दल अधिक विराजे, भूल हल भाण ज्यू
 भाल धरी ॥ ग० ॥ २ ॥ नाशा दीप शिखा ज्यू सुरगी, लाल

प्रवाली अधर परी ॥ ग० ॥ ३ ॥ गुरु के विरुद्ध को पार न
पावे, जो ध्यावे वाकी धन्य घरी ॥ ग० ॥ ४ ॥ श्री जिन हर्ष
लहे मुग सपत, सत्य रत्न दुख दूर हरी ॥ गण० ॥ ५ ॥
इति पदम् ॥

राग कहरवा ।

तिहारे दरश की चाह रही, मोरी अरुण सुणो गुरुरायजी
ति० ॥ टेरे ॥ तिहारे दरश तै आनद उपजै, रोम र विकसाय
जी ॥ ति० ॥ १ ॥ और देव सुपने नहीं धारू, तुम भिन चित
अरुलायजी ॥ ति० ॥ २ ॥ कुशल कला जग में वरताई, तातें
कुशल कहायजी ॥ ति० ॥ ३ ॥ परतिस्व दरशन दीजे मुझको,
रिद्ध सिद्ध नवनिद्ध धायजी ॥ ति० ॥ ४ ॥ रग विनय गुरु
के गुण गाये, चरण कमल चित लायजी ॥ ति० ॥ ५ ॥
इति पदम् ॥

राग ।

पूजो भजो रे भाई, गुरु महिमा होत सवाई ॥ पूजो भ० ॥
टेरे ॥ मृग मद केशर चन्दन अरुचो, सुदर पुष्प चढाई ॥ पू०
॥ १ ॥ तन मन वश कर ध्यान हिये घर, जिनदत्त जप वर-
दाई ॥ पू० ॥ २ ॥ भविक जीव मिल गुरु गुण गाये, सद्गुरु होत
सहाई ॥ पू० ॥ ३ ॥ या गुरु की मैं कजलग वरण कीरत
धीर बडाई ॥ ४ ॥ श्री जिन सौभाग्य सूरि सुगुरु मेरे, निशदिन
हर्ष बभाई ॥ पूजो भ० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग कहरचो ।

अरज सुखो गुरु एऊ हमारी ॥ अ० ॥ टेरे ॥ तुम द्रशन
 विनहू बहु भटक्यो, आधो अब शरणागत धारी ॥ आ० ॥ १ ॥
 पतित उधारण विरुद तुमारो, राखो सद्गुरु मोहि निरधारी ॥
 अ० ॥ २ ॥ अहनिश ध्यान तुमारो ध्याऊ, राखू चित हित सें
 इकतारी ॥ अ० ॥ ३ ॥ परचा पूरण कलियुग में गुरु, शोभा
 जग में बहु विम्तारी ॥ अ० ॥ ४ ॥ हर्ष विशाल शिष्य इम
 गाखे, चरण कमल दी भै जाऊ बलिहारी ॥ अ० ॥ ५ ॥
 इति पदम् ॥

राग कहरचा ।

आज हमारे आनन्द भयो, में भेट्या श्री गुरुरायजी ॥ आ०
 ॥ टेरे ॥ खरतर गच्छपति दीपतोरै, जिनदत्त सूरिंद कहायजी
 ॥ आ० १ ॥ यागी आने बहु देसनारे, पूज रचे बहु भायजी
 ॥ आ० २ ॥ निरमल गगाजल भरीरे, चरण प्रज्वाल करायजी
 ॥ आ० ३ ॥ पेसर चदन घस करीरे, मृगमद माहि मिलायजी
 ॥ आ० ४ ॥ धूप दीप नेवेद्यथीरे, पच रग पुष्प चढायजी
 ॥ आ० ५ ॥ तीन प्रदक्षिणा देइनेरे, लुल २ शीश नमायजी
 ॥ आ० ६ ॥ इत्यादिक बहु भेदसूरै भक्ति, करो चितलायजी
 ॥ आ० ७ ॥ निश्चय सुगुरु ने भजेरे, कमणा नरहेकायजी
 ॥ आ० ८ ॥ आधि व्याधि दोषी पुन दुश्मन, गुरु नामें मिट
 जायजी ॥ आ० ९ ॥ सेवक कू सरुट पड़्यारै, समरघा होत
 सहायजी ॥ आ० १० ॥ सवत् उगणतिडोत्तेरे, भाद्रव मास
 मुहायजी ॥ आ० ११ ॥ शुक्ल पक्ष पूनम दिनेरे, दरशण

पायो मै आयजी ॥ आ० १२ ॥ हर्ष विशाल शिष्य ऊमहीरे,
भीति सुन्दर गुणगायत्री ॥ आ० १३ ॥ इति पदम् ॥

राग सौरठ ।

सद्गुरुनी शोभा सवाई ण॥स०॥आज आनद बधाई ए॥टेरा॥
श्रीजिन कुशल सूरिसर साहिव, बढवसती बरदाई ए॥स० १॥
चद पटोपर चाबो चिहु दिसि, दुनिया में फिरत टुहाईए॥स०
२ ॥ फनक कचोली केशर घोली, मृगमत् माहि मिलाई ए
॥ स० ३ ॥ दीप धूप अक्षत फल नैवद्य, बहुविध पूज बनाई
ए ॥ स० ४ ॥ बाट घाट बालि बिखमी बेला, समरया होत
सहाई ए ॥ स० ५ ॥ श्रीजिन हर्ष सूरिंद गुरु गद्यपति, सुगुण
सेवक सुखदाई ए ॥ स० ६ ॥ इति पदम् ॥

राग कार्लिंगडा ।

मै बलिहारी गुरु चरना ॥ मै० ॥ टेरे ॥ श्रीजिन कुशल
सूरिंद साहिव के, चरण कमल का सग्ना ॥ मै० ॥ १ ॥ केसर
चदन चरचु चरने, फल चढ़ाऊ शुभ वरना ॥ मै० ॥ भाव विशुद्धे
गुरुगुण गाबो, ध्यान हिये में धरना ॥ मै० ॥ २ ॥ सुरतरु सम-
गुरु बद्धित ढायक, मन से नाहि विसरना ॥ मै ॥ चरण कमल
को कर आराधन, कलियुग से निस्तरना ॥ मै० ॥ ३ ॥ सेवक
थरज सुणो सद्गुरु जी, बद्धित पूरन करना ॥ मै ॥ दरशण
ठीजै ढील न कीजै, होत नहीं अब जरना ॥ मै० ॥ ४ ॥ गच्छ
उदो करदो गुण सपद, आपद दूरे हरना ॥ मै ॥ जिन सौभाग्य सूरि-
सर, साहिव, विजय सदा सुरत करना ॥ मै० ५ ॥ इति पदम् ॥

राग फातिगढ़ा ।

धीनजड़ी नुण लीजिये सद्गुरु जी मोगी ॥ वी० ॥ टेरे ॥
 श्रीजिनचंद्र सूरिंद पटधारी, गोपर मुनिनर कीजिये ॥ स० ॥ वी० १ ॥
 राखरगढ़ के प्रभु प्रतिपानक, दरगण बहिलो दीजिये ॥ स०
 वी० ॥ गच्छ उदो फर साहिब मेरा, आपद दूर हरीजिये
 ॥ स० वी० ॥ २ ॥ प्रगट प्रनीत परम सद्गुरु फी, और त आस
 करीजिये ॥ स० वी० ॥ घाय रबो फलिफाल जगत में, फिण
 विध धीर धरीजिये ॥ स० वी० ॥ ३ ॥ प्रबल प्रमाद नही गुण
 समझ, जानन तुल न पतीजिये ॥ स० वी० ॥ नाव पुराणी
 नहया गहरी, बेड़ा पार करीजिये ॥ स० वी० ॥ ४ ॥ धर्म नाव
 निर्यामक जग मे, गुरु निन कौन फहीजिये ॥ स० वी० ॥ जिन
 सोभाग्य सूरिंद के साहिब, जग गुरु विजय करीजिये ॥ स०
 वी० ५ ॥ इति पदम् ॥

राग सोरठ ।

सद्गुरु जी महारे मन भाया ॥ स० ॥ टेरे ॥ जय से दृष्टि
 पड़ी गुरु चरने, देखत नया लुभाया ॥ स० ॥ १ ॥ थे म्हरा म्हे
 आखर थारा, एही सयोग बनाया, सेवक आनंद कुशल सूरिंद
 कू, निरखनमे निद्ध पाया ॥ स० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥

राग सोरठ ।

मद्गुरु मेरे तूही प्यारा हे ॥ स० ॥ टेरे ॥ मात पिता
 राय ही स्वाग्थ के, तेरा ये सहारा है ॥ स० ॥ १ ॥ मेगे मन

तुम्ह ही भू अटक्यो, सो मयू होवत न्यारा है ॥ स० ॥ २ ॥
 दुरमन दाटे घांटे घांटे, विधन हरन सुखफारा है ॥ स० ॥ ३ ॥
 अरुद अनेक षट् मँ बेला, महिमा अधिक अपारा है ॥ स०
 ॥ ४ ॥ ताते जश शोभा सुख दाज, आलम दास तिहारा है ॥
 स० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग सोरठ ।

नित चरणा मे चित लीनो है ॥ नि० ॥ टे० ॥ बैठत
 ऊठत नाम तुम्हारो, लेता मुक्त मन भीयो है ॥ नि० ॥ १ ॥
 मात पिता सद्गुरु तू माहरे, शरण सदा तुम्ह हीनो है ॥ स०
 ॥ २ ॥ चारित्र सुन्दराम तुम्हारो, तुम्ह गुण गावा लीनो है ॥
 स० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग ।

सद्गुरु ने पङ्ड़ी बाह, नहीं तर बटजाते ॥ स० ॥ टे० ॥
 भयसागर के बीच परे रे, काम मटागन टाह, गच्छ गला गल
 जहा लगी रे, दु ख जल पर अगाह ॥ न० स० ॥ १ ॥ देव
 असुर नर वर बडे रे जामे बहत निहार, तन मन मेरो अर हरे
 रे, आरन को आधार ॥ न० स० ॥ २ ॥ निर्यामक सद्गुरु
 मिले रे, तारक भव्य जिहान, धम पीत के त्रिच घरे रे कहत क्षमा
 फल्याण ॥ १० स० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग ।

तुम्ह सूत सुम्फारी में घागे जाऊ ॥ तु० ॥ श्री चिन
 बुद्धत सूमीर सादिन ॥ तु० ॥ टे० ॥ कृतियुग मे गुरु नाम

तुमारो हे परचो अति भारी, मै, वारी जाऊ ॥ है प० ॥ १ ॥
 पूनम २ ने सोमवारे, आय मिले नर, नारी, में वारी० आ० श्री०
 केसर चन्दन पुष्पमाल सू, पूजा रचे अति भारी ॥ में वारी० पू०
 श्री० ॥ २ ॥ जो सद्गुरुनो ध्यान धरे मन, नित २ बात करारी
 मै० नि० श्री० श्री निनचन्द्र अधिक उद्यव सू, यात्र करी जय
 कारी ॥ मै वा० या० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग काफ़ी ।

मुणियो अरज हमारी मुगुरुजी ॥ सु० ॥ टेरे ॥ दीनदयाल
 कृगानिध साहिब, आसा एक तुमारी जी, बधिन दायक बधित
 दीजे, एक तुमरी इक तारी जी ॥ सुणि० ॥ १ ॥ चद पटोधर
 कुशल सूरिदजी, जस जग में विस्तारी जी, भक्त वत्सल भगवत
 प्रभू को, चरन शरन मुखकारी जी ॥ सुणि० ॥ २ ॥ मुनिजर
 फर प्रभु साहिब मेरे, दरशण बहिलो दीजे जी, सद्गुरु अपनो
 सेवक जाणी, बधित पूरण कीजे जी ॥ सुणि० ॥ ३ ॥ परम प्रभु
 मेरो परउपगारी, शरणागत साधारी जी, बालक है मोहि बधित
 दीजे, बधती बान बधारी जी ॥ सुणि० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

राग प्रभाती ।

कुशल करण मेरे परम गुरु नी, बेर २ बलिहारी ॥ कु०
 ॥ टेरे ॥ श्री जिन चन्द्र सूरिद पटधारी, जिन शासन उजवारी,
 गाम नगर धिर धूम विगजे, बारी जाऊ बार हजारी ॥ कु०
 ॥ १ ॥ महिमा मेरु समान है जाकी, कहि न सकू विस्तारी,
 श्रीजिनकुशल सूरिसर साहिब, मुणिये अरज हमारी ॥ कु०

॥ २ ॥ सुर मुख भगन लगन लागी जब, ताँतें दिया विमारी,
 ऐसे सद्गुरु तुम ननि छाजे, लीजे काण तुम्हारी ॥ कु० ॥ ३ ॥
 निज गण निज पद लज्या अपनी, रखिये विरुद मभारी, गिन्ना
 कबहू छेदन दाखे, रासे मान बधारी ॥ कु० ॥ ४ ॥ मेरी नुक
 पर निचर न दीने, कीजे अनुग्रह भारी, श्री जिन हर्ष सूसरीसर
 सद्गुरु, समरघा सानिपकारी ॥ कु० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

पुनः प्रभाती ।

श्री जिन कुशल सूरीसर सद्गुरु, तुम दग्गण बलिहारी ॥
 श्री० ॥ टे० ॥ मन बद्धित पूरण इन कलि में, गुरु सुरतरु
 श्रवतारी, करुणानिधि जलनिधिते तरणी, करुणा पर निम्तारी ॥
 श्री० ॥ १ ॥ तुम हो त्रिदश शिरोभाषि साहिब, तुम सहु जग
 उपगारी, भगते सहु नरपति नित घडे, तुम पद फज मनुहारी ॥
 श्री० ॥ २ ॥ अति विन्वमी अटवी ग्रीषम में, तप तरसितकू
 निहारी, जलदायक निज विरुद सभारी, जल पावे मुखकारी ॥
 श्री० ॥ ३ ॥ तुम समरघा खेचर अरु व्यतर, साकणि भय
 अति भारी, मिट जाने सहु तिमिर पुलावे, जिम दीठा तिमरारी ॥
 श्री० ॥ ४ ॥ पाली पुर गुरु धूम विराजे, सघ उदय जयकारी,
 शिर नामी शिखर इम जपे, वारी जाऊ बार हजारि ॥ श्री०
 ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग अलाहिया धेलाउल ॥

श्री जिन कुशल सूरींद गुरु साहिब, पूरण परम दयाना है
 करुणानिधि किरपाला है ॥ श्री० ॥ टे० ॥ अष्ट प्रभारी पूजा

भविजा, विधि सु करत मिशाला हे, वाकू अष्टभीति नही आवे,
 फाटे कष्ट फगला हे ॥ श्री० ॥ १ ॥ हीर चीर पाटवर अचर,
 मारुफ मोती माला है, पूजो पगम गुरु के पगला, पग २ रिद्ध
 रमाला है ॥ श्री० ॥ २ ॥ पुन कलत्र मित्र मन भावे, दे हाथी
 मतवाला हे, मोटा मट्टिर महल मातिया, सुन्दर रूप रसाला है ॥
 श्री० ॥ ३ ॥ पिपत विडाग्न सकट टालन, आपद उधारण
 वाला है, ममग्थ है साहिय गुरु भोग, घड़ी घड़ी रिधिपाला है ॥
 श्री० ॥ ४ ॥ सानिध करत सदाई सेवक, जेपे गुरु पद माता
 है, रतन कहत मन राजी हुय के, फबह नाही कसाला है ॥
 श्री० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग प्रभाती ।

श्री जिन कुशल सूरेश्वर साहिय, तुम हो पर उपगारी ॥
 श्री० ॥ टेर ॥ स्वरतरगद्य नायक गुण लायक, जिन चन्द सुरि
 पटधारी ॥ श्री० ॥ १ ॥ सत उधारण सुजस बधारण, भीड
 भजन अति भारी, नाम तुमारो कुशल करण जग, बारीजाऊ
 चार हजारी ॥ श्री० ॥ २ ॥ जगबद्धल तुम ही हो जगत गुरु,
 फरुणानिधि करतारी, फटे जिन चद मेरे हो सद्गुरु, हमें है आश
 तुमारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग प्रभाती ।

तू है दाता मेरो कुशल गुरु ॥ तू० ॥ टेर ॥ तुम बिन
 औरन किणपै याचू, फोटे दाता अनेरो, ध्यान हृदय विच नित
 प्रति धारू, एक भगेसो तेरो ॥ तू० ॥ १ ॥ राज रमण रिद्ध

सिद्ध सब हाजर, नाम जेप सहु तेरो, दीनदयाल सेवे सुखदाई,
कीरतवत बडेगे ॥ नू० ॥ २ ॥ देव दयारुदर दरशण दीजे,
सारो काज सवेरो, राज कहत मोहि अपनो जानो चरण कमल
को चरो ॥ नू० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग अलिहिया बेलौल ।

कुशल सूरिद सहाई हमारे ॥ कु० ॥ टेरे ॥ मन बद्धित
मुख सत्र ही पुरै, यातें फिकर न काई ॥ कु० ॥ १ ॥ परचा
पूरण चिन्ता चूरण, श्री गुरु नाम कटाई, प्रगट विरुद्ध जगमें
सद्गुरु को, सेवक को सुखदाई ॥ कु० ॥ २ ॥ श्री जिन कुशल
सूरीधर ध्याऊ, चरण कमल चितलाई, मेरे एकरु भरोसो तेरो
और न कोई मुहाई ॥ कु० ॥ ३ ॥ सेवक ऊर सुनिजर कीजे,
यामें नव निधि पाई, आनद चद सदा मुरा दीजे, दिन २ होत
बधाई ॥ कु० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

राग जय जयवती ।

आज तो प्रानद मेरे, आई भली भावना ॥ आ० ॥ टेरे ॥
भई जो कुशल गुर, भेटन की कामना, कलियुग में मुरतरु दुरित
को दानना ॥ आ० ॥ १ ॥ दादा को दरश पायो, लोचन कू
अधिक भायो, सुधा तें लग्यो सवायो, पूज्या मुख पावना ॥ आ०
॥ २ ॥ श्री जिन कुशल मूर, सेवक को हा हजूर, दुरित हरण
दूर, अधिक बधावना ॥ आज० ॥ ३ ॥ कुकुम चदा घसि,
गरस गुलाब रसि, उलमि उलमि पूज, गुरु गुण गावना ॥ आ०
॥ ४ ॥ प्यामे कृ ज्यू पाणी पावे, मूले कृ राह बतावे, बधन

छोटावे, दूर विद्यरे मिलावना ॥ आज० ॥ ५ ॥ लक्ष्मी वल्लभ
की आम, पूरे सदा मुग्ध वाम, कविराज जसवाम जगत मुहा-
वना ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

राग परज ।

कुशल सूरिंद सुखकारी हो सुगुरु मेरो ॥ कु० ॥ टे० ॥
कुशल सूरिंद गुरु पगतिर जगमें, परचा पृगत भारी हो ॥ सु०
कु० ॥ १ ॥ कुशल मडन, पातक खटन, सुरतर सम जम-
धारी हो ॥ सु० कु० ॥ २ ॥ सुजस सुण्यो तेरो महियल में,
आगे शरण तुमारी हो ॥ सु० कु० ॥ ३ ॥ दया मन्त्रि की
यही अरज है, दग्गण द्यो हितकारी हो ॥ सु० कु० ॥ ४ ॥
इति पदम् ॥

राग ।

मेरे होट सहाई सद्गुरु ॥ मेरे हो० ॥ टे० ॥ तुम्ह सम-
रण थी अट सिद्ध नव निद्ध, कमणा न रहे काई ॥ मे० स०
॥ १ ॥ आधि व्याधि अरियण अरु विरामी, बेला सहु टल
जाई, पग २ कुशल सूरिंद गुरु सानिध, करणा कर दिसलाई
स० मे० ॥ २ ॥ दुष्ट निकदन, सेवक रजन, खरतरगद्य वरदाई,
क्षेमरतन कू दरशण दीजे, दिन २ चढत सवाई ॥ स० मे०
॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग आसाउरी ।

हमकू शरण तिहारी हो, दादा राखो शरण तिहारी ॥ ह०
॥ टे० ॥ मनकी बात कह तम्ह आगल जो ह्य मन्त्रि अरु शरी

व्याधि मिटावो, क्रांति बधावो, सपत्न्यो सुखकारी हा ॥ ६० ॥ १ ॥
 नासू भर निद्रा में पोंड, अन्हु न वात विचारी, आलम छोडो,
 करू निहोरो, सुणिये वीतर सारी हो ॥ ६० ॥ २ ॥ माहरे
 दोला ढोपी दुश्मन, लपट्या आण नरारी, तेहने हणिये, डील न
 करिये एही अरज हमारी हो दाटा ॥ ६० ॥ ३ ॥ घणु २
 सू उलभो दीजे, साकीने मनुहारी, अपनाइत नर जाण पतित
 नी, करिये गुन रखनारी हो ॥ दादा ६० ॥ ४ ॥ अत्र तो त्रिस
 घणा ही बीता, सुप्रसन हुओ गणधारी, श्री जिन कुशल गुरीश्वर
 जी ॥, केसरतन बलिहारी हो ॥ दादा ६० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग प्रभाती ।

श्री सद्गुरु महाराज कुशल गुरु, तुम हो पर उपगारी ॥
 श्री० ॥ १ ॥ टेर ॥ शिव सुखदायक लायन स्वामी, जिन चद सूरि
 पटधारी, नाम तुमारो कुशल कुशल गुरु, कस्युणानिधि वरतारी
 श्री० ॥ १ ॥ चाट घाट घणु विगमी वारे, समरण कीया मुख
 कारी ॥ श्री० ॥ २ ॥ नित प्रति ध्यान तुमारो ध्यावे, पावे
 अष्टदि समारी, तुम ही मात पिता हित वच्छल, निसदिन याद
 तुमारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केसर चदन तगर अरगजा, लावे मर
 नारी, पून रचावे, भक्ति बनावे, गुण गावे अति प्यारी ॥ श्री०
 ॥ ४ ॥ नाम लेत गुरु सकट टाले, पाले विरुद सुमारी, श्री जिन
 दर्प सूरि सुप्रशाय, सत्यरतन बलिहारी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति
 पदम् ॥

पुनः प्रभाती ।

श्री सद्गुरु जिन कुशल गुरीश्वर, साचो नाम धरावे ॥ श्री०

॥ टेरे ॥ परमानन्द पद परम सुधारस, गुरु पूज्या घर आवे ॥
 श्री० ॥ १ ॥ सेवक जन मतिपाल जगत गुरु, जिन शोभन
 उजाले, करुणानिधि करतार परम गुरु, दरशण परतिख आले ॥
 श्री० ॥ २ ॥ केसर चदन अन्नत कुरुम, श्रीफल मोडक सोढे,
 शेट कगे गुरु आगल हरग्वी, पाय परत मन मोढे ॥ श्री०
 ॥ ३ ॥ महियल मे विख्यात सकल गुरु, माटिमा घत सहाई,
 तिमिया रन मे तुमही पिलावो, ओपमा ऐमी पाई ॥ श्री०
 ॥ ४ ॥ जिहा २ धान दिगजे मद्गुरु, तिहा अतुली बल गाजे,
 श्री जिन हर्ष सूरि सानिध कर, मत्परत सुरा काजे ॥ श्री०
 ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

पुनः राग प्रभाती ।

कुशल करण गुरु कुशल सूरिधर, साचा सद्गुरु मेरा रे ॥
 कु० ॥ टेरे ॥ सेवक जन सानिध गुरु समरघा, विपन हरण
 तुम मेरा रे ॥ कु० ॥ १ ॥ श्री जिन चद सूरिद पटधारी, सूरि
 सकल शिर सेहरा रे, निरमल कीरति जग गुरु तेरी, जैसा चद
 उजेरा रे ॥ कु० ॥ २ ॥ मात तात जग तू ही परम गुरु, तू
 साहिव सुख केरा रे, तुम सम देन नहीं कोड जगमें, फहन सहू
 गुण तेरा रे ॥ कु० ॥ ३ ॥ कुमति विडारन, मुमति यधारा,
 वारण विखमी बेरा रे, श्री जिन हर्ष गुरु चरण प्रसादे, प्रति दिन
 शुभ वर तेरा रे ॥ कु० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

राग ।

कुशल करो रे महाराज कुशल गुरु ॥ कु० ॥ टेरे ॥ सेवक अण
 फरुणा कग्के, कीजै सुख सगाज ॥ कु० ॥ १ ॥ आधि व्याधि

अरु विपत व्यथा गर, दूर करे गुरु राज ॥ कु० ॥ २ ॥ आपद
 उशीर सू पार उतागे, रागो मेरी लान ॥ कु०-॥ ३ ॥ मरुट
 विरुट निरुट गरी आवे, ममरण श्री गुरु राज ॥ कु० ॥ ४ ॥
 तुम गुण नाम विद्यान जगत में, अशुभ हर्ण शिव काज ॥
 कु० ॥ ५ ॥ अमय महा सुखदाई सदगुरु, सन देवन सिरताज ॥
 कु० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

राग विहाग ।

मोरू शरण तिहाग कुशल गुरु ॥ मो०-॥ टे० ॥ सुपनदि
 सोरत, निग दिन जागत, चरण ऋतु आधारा ॥ तु० ॥ मो०
 ॥ १ ॥ बाट घाट रिद्धपाल सदाई, आपद निघन निमारा ॥ कु० ॥
 मो० ॥ दहदिस दीपे महिगा जाकी, परतिरस सकल ससारा
 ॥ कु० ॥ मो० ॥ २ ॥ धन हीना कृ धन को दाता, आपे बहु
 परिमारा, सदगुरु गुण गाये सुख दायक, श्रीजिन हर्ष अपारा
 ॥ कु० ॥ मो० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग धगालो घाटो ।

आसा सफल फली, मैं प्रायो परमानद ॥ आ० ॥ टे० ॥
 श्रीजिन कुशल सूरीसरूरे, देवा सिर हरदेन, पुहवी माहे परगडारे
 सध करे नित सेव ॥ आ० ॥ १ ॥ हम धरी मन हररियोरे,
 दीठे दीन दयाल, दु ख दोहग दूरे गयारे, टारया दु स जजाल
 ॥ आ० ॥ २ ॥ ग्यान तणो गुरु आगरूरे, परतिल गग प्रवाट,
 मन गमता मित्र मेलधेरे, अति आनद उधाट ॥ आ० ॥ ३ ॥

तुम गुण गाता सद्गुरुरे, कहता नावे पार, मगनंत नें तुम मन
बन्यारे, जपता जैजकार ॥ आ० ४ ॥ इति पदम् ॥

देशी फतमलरी ।

गद्यपति खरतरगद्य सिणगार, कीर्तित भूमडल कहे ॥ ग० ॥
देव्यण तुम्ह दीदार, राजा राणा आगल रहे ॥ ग० ॥ रता
फचोलो विसाल, फेसर चदन घम भलो ॥ ग० ॥ गूथ २ फूल
माल, पूजे निर्मल मन करी ॥ ग० ॥२॥ देश बगाला मभार,
धूम झलाहल दीपतो ॥ ग० ॥ परचा पूरण टार, इन कलि
काल नें जीपतो ॥ ग० ३ ॥ रहसु तुमारे पाय, दरशन दीजे
मोभणी ॥ ग० ॥ पटधर कुशल सूरिंद, महिमा जस जग
जागती ॥ ग० ४ ॥ आपे सदा जिनचद, चरण कमलनी
पीमती ॥ ग० ५ ॥ इति पदम् ॥

पुनः फतमलरी देशी ।

सद्गुरु श्रीजिन कुशल सूरिंद, चानो चदपटो धरू ॥स०॥
खरतरगद्य राजिंद, विरुद बड़ा अलवेसरू ॥स० ॥१॥ परतिम्ब
पुटवी मभार, कीरत थारी कलियुगे ॥ स० ॥ भला भला केहेरे
भूपाल, आगल ऊभा थोलगे ॥ स० ॥ महिमा नो मडाण,
भाणतणी पर भलहले ॥ स० ॥ जागतो धूम जेसाण, मेला
नित गटमह मिले ॥ स० ॥ ३ ॥ दुखिया सुख दातार, निर-
धनिया बहु धन दिये ॥ स० ॥ सरणार्ई साधार, हित वदल
मोटे हिये ॥ स० ४ ॥ मलेरे उगो सुविहाण, सफल दिवस
भाई बीजनो ॥ स० ॥ मिल महाजन महिराण, रग लीतो घणी

रीभक्तो ॥ स० ५ ॥ आडवर उद्धरग, जुगत जुहारया जग
गुरु ॥ स० ॥ सु निजर धरज्यो सूरीद, श्रीजिनचद-सु-सुरतरु
॥ स० ६ ॥ इति पदम् ॥

(सांगानेर विराजे) चाल ।

पूजो रे पूजो पूजो, दादो सम देव १ दूजोरे, भविषा भाव
धरते पूजो ॥ टेर ॥ परतिव आशा पूरे, दादो सकट सगला
चूरेरे ॥ म० ॥ १ ॥ चिनचद सूरि पटधारी, दादो रारतर्गद्र
अधिकारीरे ॥ म० भा० ॥२॥ समरया सानिधकारी, ये अजत्र
फला गुरु थारीरे ॥ म० भा० ॥३॥ दोनू गह मन में धारी, कोई
आन न खडे थारीरे ॥ म० भा० ॥४॥ चदन केसर भेली,
बलि मृगमद माहे रेली रे ॥ म० भा० ॥५॥ चरण कमल इम
चरचो, इन गुरु नो मोटो परचोरे ॥ म० भा० ॥६॥ पूज्या
बद्धित पावे, सहु दुनिया ए जस गावेरे ॥ म० भा० ॥ ७ ॥
घाजिडा उल चदो, ए कुशल गुरु चिरनदोरे ॥ म० भा० ॥८॥
ग हीज पचम आरे, सेवक जन ने साधोरेरे ॥ म० भा० ॥९॥
चाकीरे बेला वारे, जे गुरुनो नाम सभोरेरे ॥ म० भा० ॥१०॥
सवत अठार तेतीसे, वदि मिगसर तीज जर्गोसेरे ॥ म० भा०
॥११॥ धन २ हिमत फोठारी, जिग यात्रा कराई सारीरे ॥ म०
भा० ॥१२॥ चौरासी गढ मुनि सगे, गुरु पाय नम्या मनरगेरे
म० भा० ॥१३॥ दान वणो तिहा दीधो, सहु सध में ए जम
लीधोरे ॥ म० भा० ॥१४॥ चदवाचक इम ध्यावे, गुरु दादो
चडते दोवेरे ॥ म० भा० ॥१५॥ इति पदम् ॥

कलत्र ।

रिगट जिनेनर सो जयो, मगलकेलि विवान, वागव बदिय
 पाय कमल, नग म्हु पूरे श्याम ॥१॥ चान्न ॥ चद्र कुलां चर
 पूनम चद्र चद्रो श्री जिन कुश्ल मुतींद्र, नाम भर जमु महिमा
 विवास, जो समरे तमु पूरे श्रास ॥ २ ॥ मरुमटण सविपाणो
 गाम, धन फण्ण कचन थति श्रिगाम. जिहा वसे जिल्हागर मत्रि,
 जैतसिरी जमु परणो कलत्रि ॥ ३ ॥ जमु तेरेमे तीसे जम्मा,
 सैताले मिरि सयम रम्म, पाटण सतोनेरे तमु पाट, नयासि ये
 जमु म्यर्ग वाट ॥ ४ ॥ भूमडल स्वर्गे पायात्त, सचराचर जग
 डग धतिनाल, गुर प्रताप नवि माने सोय, मेनविनाय ने दीठो
 पोय ॥ ५ ॥ निरधन लटे धन धान्य सुवज, पुण्य हीन पामे
 बहु पुन, थमुखी पामे सुम्य सतान, एक्षमना धरता गुरु ध्यान
 ॥ ६ ॥ गुर समरण्ण श्रापद्र सच टले, श्रेय शाति सुरा सपति
 मिले, थावि व्याधि चिन्ता सनाप, सहु छटे नवि गटे व्याप
 ॥ ७ ॥ पाप दोष ननि लागे तिहा, गुर दरशण्ण डतकठा जिहा,
 सेनता सुरतरु नो घाह, निश्चय दालिद्र मेले वाह ॥ ८ ॥ विस
 विस हर विसमें नर नाह, मूत प्रेत अट वितर राह, गुर नामे
 जे न करे पीड, भाजे भावठ भव भय भीड़ ॥ ९ ॥ रोग सोग सच
 नासे दूर, अधकार जिम ऊगे सूर, मूररा फीटी पडित थाय, गुरु
 पसाय दु ख दूर पलाय ॥ १० ॥ दिन २ जिन शासन उद्योत,
 जिहा थद्वे भव सायर पोठ, सो सद्गुरुजी मै भेट्या श्राज, रलिय
 रग सहु सीधा काज ॥ ११ ॥ उलालो श्रज घर श्रगण्ण सुर-
 तर फलियो, चिन्तामाणि कर कमले मिलियो, उदयो परमानद

करे, आज दीह में धत्रे गिणियो, जुग पवरागमजो भै धुणियो,
 चद्र गच्छ महिमा निलोए ॥ १२ ॥ फाई यरो पृथ्वीपति सेवा,
 फाई मनावो देवी देवा, चिन्ता आणो फाई मो, वार २ ये कविच
 भणीजे, श्री जिन कुशल सूरि सम रीजे, सरे पाज आयास विना
 ॥ १३ ॥ सवत् चवद इन्त्यासी वरसे, मुलक वाहन परवर विन
 हरसे, अजिय जिनेसर पर भवो, कियो कविच ये मगल कारा,
 विघन हरण बहु पाप निवारन, फोई मत सशय धरो मने ॥१४॥
 दिन २ सेवे मुर १० राया, श्री जिन कुशल मुनीश्वर पाया, जय
 सागर उवभाय भुणे, इम जै सदगुरु गुण आनदे, अदि समृद्धे
 सोचिर नदे, मन वधित फल मुफ हुयोए ॥१५॥ इति पदम् ॥

द्वादोजी परतिख देवता, ढादोजी देश दिवात, म्हारा सद्गर
 परतिख जस जग परगडो, वाचे सहुण्व खाण ॥ मारा० ॥१॥
 वाट घाट सकट हरे, तारे जलधि त्रिहात ॥ म्हा० ॥ अदि
 च्छि सुख सपदा, समरण श्री गुरु राज ॥ म्हा० ॥ २ ॥ तुम
 अमीणा साहिवा, अमे तुमीणा दास ॥ म्हा० ॥ कमणाहिवन
 रहे कद्रा, ईहक मूरण आस म्हा० ॥ ॥ ३ ॥ नगर २ गाम
 गाम में, थिर वर ते गुरु थान ॥ म्हा० ॥ पूजे अरचे माहुका, नर
 नारी गय राख ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ शोभे सूरत त्रिदरे, गुराधारी
 गवराज ॥ म्हा० ॥ श्री जिन लाभ सूरीश्रिता, सारेज्यो सगला
 फाज ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

जसु हृदय कमल गुरु नाम वसे, तसु सरसति वदन सदा
 उलसे, वरसाते हाथ लिये धरती, जपिये श्री जिन दत्त सूरि यती

॥ टेर ॥१॥ सत्र ग्यारे सौ वरसे, बर्चीने जनम्या शुभ दिवसे,
जमु बाधग चाह डदे मुहूर्ती ॥ ज० ॥ २ ॥ इगताले शुभ व्रत
ग्रहण कियो, गूगु हतरे जिन सूरि मन लियो, थाप्पा जिन बह्मभ
पाट पती ॥ ज० ॥३॥ लिग्व दीधो अबा अबठ ररे, दासानुदास
सोवा अक्षर, वाच्यो पद जुग वर निज उगती ॥ ज० ॥४॥
जोगण जिन धर्मी नें राखी, वरसात लिया गुरु सहु सारी,
थभी वलि भिजली भुय पढती ॥ ज० ॥ ५ ॥ त्रिह्नी ने भर
अथ उज्जयणी, अजमेर वसे चांसठ जोगणी, मन म अभिमाने
जे बहती ॥ ज० ॥ ६ ॥ प्रति बोध्या श्रावक लाख जिये, वस
कीधा सुर तर नार निये, तसु वरस गुण्यासी आयु वरती ॥
ज० ॥७॥ सवत् वार इग्यारम में, आनादा जाणे शुभ दिवसे,
शुभ ध्यान थई सुर लोक गती ॥ ज० ॥ ८ ॥ अजमेरे सद्गुरु
ना पगला, समरथ जे आय नमे सगला, खेवे धूप करे आरती ॥
ज० ॥ ९ ॥ न्दाही र्मिर्मल धोती पहरी, घस केसर चदन
अति सखरी, शुभ भवते पूज करो सुमती ॥ ज० ॥ १० ॥
सुर किन्नर नर गारी राया, आवी लागे जेहने पाया, जसु आणार
माने महियपती ॥ ज० ॥ ११ ॥ परदेश भमता काई फिरो,
घर बैठा सद्गुरु ने समरो, जेहने न हुवे दोषी कुमती ॥ जे०
॥ १२ ॥ जिन दत्त सूरि जीना गुण गावे, तसु पिघन व्यथा
दूरे जावे, पावे जयचद दौलत चढती ॥ ज० ॥ १३ ॥ इति
पदम् ॥

पूजो दौलत धाय, बाकी रे बेला न, पडे काय,
दौदा कुशल सुरिंद, पूजो मन रती ॥

देर ॥ दानोजी तुरत गमावे पीड, दानोजी भावे सगली भीड ॥
 पूजो म० ॥ १ ॥ केनर चन्ना अगर कपूर, पूजता दादाजी
 होवे हजूर ॥ पू० ॥ २ ॥ पूनम २ ने सोमवार, आय जुडे
 दादे दरवार ॥ पू० ॥ सुह माग्या वरसावे मेह, दानोजी साभे तूटा
 नेह ॥ पू० ॥ ३ ॥ दादोजी गज नगर दीवान, पूज्या बोल चढे
 परमाण ॥ पू० ॥ दाडेजी रा सेनक होय, तेहने गज न सेके घोय ॥
 पू० ॥ ४ ॥ गिन रंग मूरि कटे फर जोड, कवण करे म्हारा
 दादोजी री होट ॥ पू० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग बगालो घाटो ।

चनो सखी प्रजना जइये, जिन दत्त मूरि गुरु राज ॥ च० ॥
 देर ॥ हिये भाव अधिक धरी ने, पूजो पूजो शुभ काज ॥ च०
 ॥ १ ॥ सहु सध यात्री आवे, सक्त सामग्री साज ॥ च० ॥ २ ॥
 पूजा कर अष्ट प्रकारा, शुभ भासगी पाज ॥ च० ॥ ३ ॥
 बोहिधरा समग्य करते, तारी तुरत जिहाज ॥ च० ॥ ४ ॥
 दरशण मुगणने दीजे, सद्गुरु गरीब निवाज ॥ च० ॥ ५ ॥
 इति पदम् ॥

(सुणियो वाता राय सढाजिय) लावणी चाल ।

कुगुल गुरुनी अरज मुणीजे, दरशण दीजे महाराजा, दास
 पै महिर करो सद्गुरुजी, मन बाधित होवे ताजा ॥ कु० ॥ १ ॥
 सोमवार ने पूनम दिवसे, दरशण कृ श्री सध आवे, एक वार
 सद्गुरु ने समरे, मन चित्या फल वे पावे ॥ कु० ॥ २ ॥
 पुण्यवान परतापचन्द्र के, पुन पांच पाडव कीना, श्री सद्गुरु की

भक्ति करके, नर नारी लाहो लीगा ॥ कु० ॥ ३ ॥ लगडा
 लूला पत्ते पागला, कोढी शरणे आा पडे, एरु वार सद्गुरु ने
 समरे, कचन सी काया सुधरे ॥ कु० ॥ ४ ॥ डारुण वगत
 भूत-भयनर, एवी, वाधन आान पटे उन वेला सद्गुरु ने समरे,
 रुदेयन उनका रोम खिरे ॥ कु० ॥ ५ ॥ जेमलमेर के अमर
 सागर मे, धूमज खून बग्या भारी, क्षेम सिद्ध गुनि अग्रचन्द
 ने, करी लावणी शुभकारी ॥ कु० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

(नाडङ्गली हठीली वैरण हो रही) देखी ।

श्री जिन कुशल सूरीसरू, सहु देवा सिर ताज हो, सद्गुरु
 मोरा, इण कलियुग सुरतरु सारिखा, सगतरगद्य महाराज हो,
 स० श्री० ॥ १ ॥ जिहा तिहा तुम परचा घणा, पागन सके
 कोई पार हो ॥ स० ॥ तुरत सुजाणसिट भूप ने, कीधो बहु
 उपगार हो ॥ स० श्री० ॥ २ ॥ भजन गरीम निवाज द्यो, जि
 शासन दीवान हो ॥ स० ॥ मरुट निमिर गमाइना, तेजे भल्ल
 हल भाण हो ॥ स० श्री० ॥ ३ ॥ गुण गिरवा गुरु रायना,
 समरण थी जिन वृद हो ॥ स० ॥ हय गय सुत धन कामनी,
 पामे मन आनद हो ॥ स० श्री० ॥ ४ ॥ धूम विराजे गुरु-
 राय नो, सुथिर गडाने सुरा दाय हो ॥ स० ॥ चाचक पुण्य शील
 राजना, प्रहशम प्रणम पाय हो ॥ स० श्री० ॥ ५ ॥ इति
 पदम् ॥

(राणपुरो रलिया मणो रे लाल) चाल ।

श्री जिनदत्त सूरीसरू रे लो, जिा शामा दीवान सुरकारी
 रे, भेटो भवि भावे मुदारे लो, खरतरगद्य राजान म्हारा वाला

रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ गुरु वारे मुर पद लब्धो रे लो, अजयमेरु
 बिर यात ॥ म्हा० ॥ वदित कारज साधवारे लो, सेवे सरुल
 निहात ॥ म्हा० श्री० ॥ २ ॥ यात्री जन आवे घणारे लो,
 परतिर परबो पेख ॥ म्हा० ॥ आस विलूधा मानवी रे लो,
 पूरे आश अशेष ॥ म्हा० श्री० ॥ ३ ॥ चौसठ वस करी
 जोगणी रे लो, बलि वस वापन वीर ॥ म्हा० ॥ सानिधकारी
 सेवका रे लो, रासो सुगुन सधीर ॥ म्हा० श्री० ॥ ४ ॥ दिवस
 वह मनमं हुती रे लो, भेटवा श्री गुरुराय ॥ म्हा० ॥ ते
 आम्हा सफली थई रे लो, भेट्या श्री गुरु पाय ॥ म्हा० श्री०
 ॥ ५ ॥ आधि व्याधि आतापना रे लो, पिंड तणी हर पीड ॥
 म्हा० ॥ दु ख दोहग दूरे हरो रे लो, भाजो भावठ भीड ॥ म्हा०
 ॥ ६ ॥ लान थानू इण गच्छनी रे लो, उदयरु नयण निहाल ॥
 म्हा० ॥ पोता वटपेते राखस्यो रे लो, तो करस्यो सभाल ॥
 म्हा० श्री० ॥ ७ ॥ जे बिलग्या तुम केडले रे लो, ते किम
 मूके केड ॥ म्हा० ॥ रूठडो वालम मनात्रिये रे लो, घो दिलासा
 तेड ॥ म्हा० श्री० ॥ ८ ॥ तुम्ह जेहवा धणी मूरुने रे लो,
 केहने कहिये जाय ॥ म्हा० ॥ कहिवानो वल था लगे रे लो,
 करिवो श्री गुरु पाय ॥ म्हा० श्री० ॥ ९ ॥ तिल एक सु-
 निजर जो हुवे रे लो, तो सरे वदित कोड ॥ म्हा० ॥ दुरमन
 जन दूर हरो रे लो, अम्हची तुम लग दोड ॥ म्हा० श्री०
 ॥ १० ॥ मात तात बधव तू ही रे लो, तू साचो गुरु देव ॥
 म्हा० ॥ भोला ढाला बालगा रे लो, चरण शरण नित भेव ॥
 म्हा० श्री० ॥ ११ ॥ विनय सभ्नी हम विनवे रे लो, श्री जिन

हर्ष सूरिश ॥ म्हा० ॥ महिर निजर मुक्त ऊपर रे लो, धरज्यो
 पितवा वीस ॥ म्हा० ॥ श्री० ॥ १२ ॥ सवत् अठार सडसठ में
 रे लो, वदि-फागण शुभ नूर ॥ म्हा० ॥ युक्ति सहित यात्रा
 करी रे लो, चढते पुण्य पडूर ॥ म्हा० ॥ श्री० ॥ १३ ॥ इति
 पदम् ॥

१ (नमो रे नमो सेत्रुंज गिरि रे) चाल देशी ।

श्री जिन कुशल सूरीसरू रे, राते श्री महाराज रे, तुम्ह
 गुण साभल मन ऊमहो रे, दरशण देखण काज रे ॥ श्री०
 ॥ १ ॥ दरशण घो महाराज जी रे, थारा गुण अनेक रे, तुम्ह
 शम दूजो कोई नहीं रे, कुशल फरो सुविवेक रे ॥ श्री० ॥ २ ॥
 मिल २ बहुला माननी रे, जात्र करे सुखकार रे, नीर पखाली
 पगला विन्हे रे, पूजे विविध प्रकार रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ आगल
 ऊभा ओलगे रे, गावे गीत ग्साल रे, मन बच काया ये करी रे,
 चरणमें त्रिहु काल रे, ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सवत् अठार गुण-
 चास मे रे, कार्तिक शुक्ल उदार रे, सध सहित यात्रा करी रे,
 पृथम दिन सोमवार रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आस धरी ह आवियो
 रे, दोलत घो राजान रे, धरमचद इम वीनवे रे, यात्र चढी
 पग्माण रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

राग जयतसिरी ।

सहाई मेरे श्री जिन कुशल गुन् ॥ डेर ॥ कुशल करण
 कलि माहे प्रगटयो, खरतरगद्य वरू ॥ स० ॥ १ ॥ वावजो-
 चदन मृगमद भेली, पूजो प्रेम भरू ॥ स० ॥ चिता चरण

विषन विहारण, दालिद्र दूर हक ॥ स० ॥ २ ॥ दिन २ साहिव
चटते यो, घ्यावो ज्ञान धक ॥ स० ॥ वाजे जेहना जसना
बाजा, ठावी ठामे जक ॥ स० ॥ ३ ॥ सवत् अठारसमें थड
सटे, मिगसर मास थिक, मघ सहित श्री सद्गुरु भेटे, श्री जिन
दृष करू ॥ स० ॥ ४ ॥ गाम गडाले चरण नगता, तूठो कलप-
तरू ॥ स० ॥ पाठक श्री विद्या हेम गाणे ने, उदय रतन करू ॥
स० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग ।

दादा पूर हो बधित मोरा, बलि २ करू रे निहोग ॥ दादा
पू० ॥ टेरे ॥ साचो साहिव जग में जाणी, चरण नमू तित तोरा ॥
दादा० ॥ १ ॥ थमर सरे गुरु महिमा जागी, तो सम
कोदयन तोले, बाल गोपाल सबे मन हरख्या, श्री गुरु ना गुण
बोले ॥ दादा० ॥ २ ॥ चाट घाट तू ही साधारे, चोर चक्र
भय वारे, माता जिम बानक प्रतिपाले, तिम हू तोरे सारे ॥
दादा० ॥ ३ ॥ लखमी लीला सपति सोटे, घर भयता के होवे,
गुण विनय कहे साहिव साचो, सोम निजर पर जोवे ॥ दादा०
॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

देशीनी चाल ।

हेली हे सद्गुरु जात मनास्या हे, हेली सद्गुरु बेग बधारया
हे, हेली सद्गुरु पूजरचाम्या हे ॥ हे० ॥ सद्गुरु गुण जस,
गाम्या हे ॥ हे० ॥ सद्गुरु म्हारो बड भागी हे ॥ हे० ॥ सद्गुरु
मुगुण सोभागी हे ॥ हे० ॥ सद्गुरु विरद बडाला हे ॥ हे० ॥

सद्गुरु महारो रिद्धपाला हे ॥ हे० ॥ सद्गुरु निरभय बाटे हे ॥
 हे० ॥ सद्गुरु दुग्गा बाटे हे ॥ हे० ॥ सद्गुरु म्हागे रक्त
 नामी हे ॥ हे० ॥ सद्गुरु अतर जामी हे ॥ हे० ॥ सद्गुरु
 कुशल सरिंदा हे ॥ हे० ॥ सद्गुरु भवे सुरष्टन्दा हे ॥ हे० ॥
 सद्गुरु महारो वरगाई हे ॥ हे० ॥ सद्गुरु हर्ष सदाई हे ॥ हे० ॥
 इति पदम् ॥

जी हो लामपुरे तिम आगे, दादा महिमा मंडोर मभार, जी हो
 रागानेर अमरमरे, दादा सेवक जन सुगकार ॥ कु० ॥ ९ ॥
 जी हो इम पुर २ थूभ प्रणमिये, दादा नासे सह विखवाद,
 जी हो राज समुद्र इम वीनवे, दादा समरघा दीजो साद ॥ कु०
 ॥ १० ॥ इति पदम् ॥

दशमी ।

क्रीजे छ पर जोड ने दादाजी, वीनतडो निगताय हो, सद्-
 गुरुजी, थरज मोरी सामलो दादाजी, राज निगर किण आगले
 दादाजी, अतर कहीय न जाय हो ॥ सद्गु० अ० ॥ १ ॥
 थारे तो सेवक घणा दादाजी, म्हरि थे गुरु राय हो ॥ सद्० अ० ॥
 तुम्हें अम्हदिशि की जो मया, दादाजी, ज्ञान निजर सुपसाय हो ॥
 स० अ० ॥ २ ॥ आदि युगादि तणा अद्ये, दादाजी, प्रगट धारा
 परभाष हो ॥ स० ॥ गिणती सू नावे गिरया, दादाजी, जिम
 जल फण दरियाय हो ॥ स० अ० ॥ ३ ॥ म्हारे समरण राज
 नो, दादानी, धारो हीज आधार हो ॥ स० ॥ म्हेतो धारा थोलगू,
 दादाजी, थे म्हारा करतार हो ॥ स० अ० ॥ ४ ॥ इण गद्य
 में वरते उदो, दादाजी, थोक भला भला थाय हो ॥ स० ॥
 सोसगलाई राजरा, दादाजी, सुनिजर रा गहगाट हो ॥ स० अ०,
 ॥ ५ ॥ जिण वेला, दरशण हुवे, दादाजी, क्रीजे समरण ध्यान
 हो ॥ स० ॥ नयण हसे तन उल्लसे, दादाजी, विकसे मन अस-
 मान हो ॥ स० अ० ॥ ६ ॥ धन २ दिन भाई बीजनो, दादाजी,
 आयो भाग्य प्रमाण हो ॥ स० ॥ भल आटवर भेटिया, दादाजी,

रगतरगन्ध दीवान हो ॥ म० अ० ॥ ७ ॥ पग २ में तारिभ
 करो, दादाजी रान दिवस इफ रग हो ॥ म० ॥ हृष्ट मेर
 राउनो, दादाजी, कदेयन द्योह सग हो ॥ स० अ० ॥ ८ ॥
 श्री जिन कुशल मूरीसरू दादाजी, जिन चट सूरि पटधार हो ॥
 स० ॥ श्री जिन लाभ मूरिद ने दादाजी, महिर नितर शवधार
 हो ॥ म० ॥ ९ ॥ इति पदम् ॥

राग फालहरा ।

पूजना चाली रे सुगुरु रे, पूजवा चा० ॥ टेर ॥ सोन शृंगार
 सभ्नी सहु वनिता, टोला मित २ चाली, उज्जल बाल भरी
 सुक्ताफल, सुदर हाथे झाली ॥ सु० ॥ १ ॥ गीत गाती बहु
 गुणवती, सद्गुरु चरणे आवे, फनक कचोली केसर घोली, चर-
 गारी पूज रचावे ॥ सु० ॥ २ ॥ हियड़े उल्लसती नाटिक
 करती, ठम ठम पाय ठमकावे, पाच सात मिल सरिखी चाला,
 लुललुल शीश नमावे ॥ सु० ॥ ३ ॥ मुखरो मटको हाथा फेरो
 लटको, त्रासडली अणियाली, हाव भाव कर सहु भवि जनना,
 चित चोरे मतवाली ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्री जिन कुशल सूरिद के
 आगे, भावना इण विध भावे ॥ सन सरियन की भक्ति देखके,
 छेम रतन गुण गावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

देशी हरियां मन लागो ।

अलवट देश सुहावणो, गाम सुहावे नाल रे, सद्गुरु सुण
 मेरा, तिहा तू आप विराजियो, खरतरगध रखवाल रे ॥ स०
 ॥ १ ॥ अफल कला काई तादरी, तो सम अवरन कोय रे ॥

श्री साहिन, पद पकज प्रणमू तेरे ॥ स० ॥ १ ॥ श्रीजिन
 बल्लभ सूरि पटोधर, करुणा कर रात्र जग तेरे ॥ ग० ॥ २ ॥
 सत्र सफल ॥ साविधकारी, दुख लेह्य दूरे गेरे ॥ ग० ॥
 ॥ ३ ॥ सुख के शुद्ध उपदेश सुगुर की, बृम्हे नाथि जन बहुतेरे ॥
 स० ॥ ४ ॥ वैमानिक सुर पदवी पार्द परतिग्न प्रभु विखम्भी
 बेरे ॥ स० ॥ ५ ॥ कह्यन क्षमा करुणाम् अटोनिशि, मुनिजर
 करियो सुर मेरे ॥ ग० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ।

बतिगरी ह कुशत सूगीर की बलि० ॥ मेवक जा मन
 बद्धिन पूरण, सुर्गावि सुरमाणि सुर तरु की ॥ व० ॥ १ ॥
 सकट विकट तिमिर भय हग्ने, तरुण तेन गा सर कर की ॥
 व० ॥ २ ॥ जिन शामन नित २ उजवालय, श्री जिाचन्द्र
 पटोधर की ॥ व० ॥ ३ ॥ सुन्दर नरतरगण गगणागण, वर
 शिवचन्द्र शोभा कर री ॥ व० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

ढाल विधिये की ।

धरे लाला श्री जिन दत्त सूरीश्वरू, दादो प्रहृक गम ते
 सुर रे लाला, भावधरी पूजे सदा, घस कुक्रम मेल कपूर रे,
 लाला श्री० ॥ १ ॥ जीती चोमठ जोगणी, बस कीना बावन
 नारि रे लाला, मत्र बले करि साधिया, जिन पच नदी पच पीर रे
 लाला श्री० ॥ २ ॥ प्रतिबोध्या श्रावक श्राविका, मिल लारस सना
 सह देश रे लाला. जैन धरम दीपावियो, सरतरगद्य कमल दिनेश

रे लाला श्री० ॥ ३ ॥ हिमा टानी जीवनी, जयासिंधु सबा
 लग देश रे लाला, दानव मानव देवता, माने सह आण नगेश
 रे लाला श्री० ॥ ४ ॥ जुग प्रधान पद जेहने, देवता परगढ
 हुय दीध, रे लाला, पुण्य पुण्य जग पर गजे, जिन करणी उज्जल
 तीध रे लाला श्री० ॥ ५ ॥ कामित दामरु फलियुगे, साचो
 तुर तर अवतार रे लाला, ममरत न्याम घंटा करी, महियल
 वरमे जगधार रे लाला श्री० ॥ ६ ॥ आज विपम पचम
 थोर, जेहना मोटा अवगत रे लाला, नामे न पड़े बीजली, न
 न्ये छल छिद्र तिल मात रे लाला श्री० ॥ ७ ॥ सवत वार
 इग्यारम, आमाढ शुक्ता पक्ष जाण रे लाला, इजारस सद्गुरु
 तणो, अजेमेरु नगर निरवाण रे लाला श्री० ॥ ८ ॥ मटिर
 वगी मुक्त ऊपरे, गुरु कूम निजर निहाल रे लाला, राज हरस
 कर जोड नें, वदे मन शुद्ध चरण त्रिकाल रे ॥ श्री० ॥ ९ ॥
 इति पदम् ॥

राग ।

जय ० जग जन दयाल सद्गुरु मणि धारी ॥ जय ० ॥ टेर ॥
 थोस विमल वश मान, समरा लज साहजान, रासल पितु देवी
 मान, देवदण सुराकारी ॥ ज० ॥ १ ॥ कौटिक गण कुल चद
 सार, खरतर शुभ विरुद धार, नायक जिन चन्द सूरि महिमा
 मुनि भारी ॥ ज० ॥ २ ॥ जगम युग वर प्रधान, श्री जिन उप-
 पद वरान, दत्त सूरि पाट उदय, गिरि रवि अवतारी ॥ ज०
 ॥ ३ ॥ किंकर सम अमर रास, सेवत कृत निपट वाम, दिल्ली-
 पति निपट दाम, श्यावत नर नारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ दोलत घर

गतं भूयः सकृददाकरा भूयः प्रणमत निज मुनि कपूरः द्र-
गं बलिरागं ॥ १० ॥ ५ ॥

अथ संस्कृत गुण्डेन स्तुतिः ।

द्वाननुदासा इव सर्परेण, यदीयपादाब्जतते लुटति ॥
मरुन्वले फलानरु तर्ज्यात्, उग्रप्रगाता जिनदत्त तुरि ॥ १ ॥
विनामरि फलनरर्गिता, कुर्वति भन्या विभु कागव्या ॥
प्रगीरत श्री विर इव तुरि, संवेपटा हन्ति पदे प्रणिष्टा ॥ २ ॥
नो योगी न च योगिनी न च धराधीशश्च नो शाभिर्ना, नो वेताल
विजचगजसगया, नो रोम शोणे नयम् ॥ नो मारी न च विभ्रट
प्रभृतय श्रीया प्रया उच्चरे, जय जय श्री विजचगूरिसुगुरो
र्नामात्त ध्यायति ॥ ३ ॥

अथ श्री जिनदत्तगुरोरष्टकम् ।

यो दृष्ट म्भरण गतोपि सततं दिव्ये मन्त्रे मम्मूनै, भक्ते
भक्तिपर मुनोपि उरुते सर्वार्थसपादनम् ॥ दु खान्त तनुते तदानि
उमति कारुण्यवारानिधि, स श्रीमान् जिनदत्तसूरिरयतादस्मात् स्वप
क्षाश्रितान् ॥ १ ॥ तत्र उतिगति नामान्यप्यत्र पात्रयन्ति, दग्ति
परमशानि दिव्यभोगार् जनेभ्य ॥ तिनपद्युततम्मादादगत् दत्त
सरे, रचिरत्रचापुर्चर्चन ते करोमि ॥ २ ॥ अशुभमतिरमत्प्रज्ञासि-
सन्त, मततमनार्यविजालभगमद्य ॥ अनुदिनहृत्तपापत्रययुक्त
पुरुषपशुर्यदिमादृशो ऽर्चयेत्वाम् ॥ ३ ॥ विमलमतिरमत्तर प्रशात,
शुचिचरितोस्मिन्नसत्वमिभूत ॥ प्रियहितत्रचनस्तव प्रसादाद्भवति,
भयतिचनो जिनदत्तगुर्विद्य ॥ ४ ॥ सकलशीलगुणानुधिरापद्,

भरंवृत्तमु प्रचुर ॥ करुणानिलय मुनिदु महर, जिनदत्तगुरु प्रणामाणि
 वरम् ॥ ७ ॥ वरवाच्छगमत्रिसुत्रमुम्बद कृतज्ञाहृददेशेमा प्रसुम् ॥
 विगत व्यसन हितद समुदा, मुनिगजमह प्रणामाणि सेन ॥ ८ ॥
 श्रीमच्छ्री विनादत्तगुरिसुगुणे परवाणभतीसरो, नैव्येष्टेतिथे सुदु
 द्विजलथेर्भापानिधेयिनिधे ॥ प्रत्येविधिनामगर्भमुनिना लक्ष्मणसे
 रष्टक, मे ध्यायति नरा भवति सतत चागाधग श्रीभरा ॥ ९ ॥
 इत्यष्टकम् ॥

अथ कुण्डल गुरोरष्टकम् ।

नतनरेश्वरमोलिपण्णिप्रभा, प्रभदेशरर्चा चतपद्युगम ॥ गुरुपु
 गुणप्रगडा नवमाहिन, कुण्डलसुरिगुरु प्रयत न्तुये ॥ १ ॥ कतिन सति
 क्रियद्वरदायिनो, भुवि भवान गुगुणरपिनाश्रित ॥ गुरमशियेष्टिस्म
 गतो भवेत्, निगपरो फलकाचकपत्रे ॥ २ ॥ कटिनथष्टमगा पुल
 वेरमनि, प्रवरसाग्न्यसमाधितसम्पति ॥ गग हृदि स्मरणे तव सर्वदा,
 भवतु नाम जपस्तुभुरो मुना ॥ ३ ॥ चिदद सज्जट ज्योतिषु करयत, म्त्तनु-
 भृतावियमानननाममा ॥ सुगुरुराज तवेप्पितदशीनादुभवेतिमगोरये
 मूर्णताम् ॥ ४ ॥ तृपसभामुयशोवदुमानता, निविद्यमानजनेजयम-
 दता । मुपरिवारसुशिष्यपरमरा, तवगुरो पुद्रमाम्गुरनतरा । । न सल्लु
 राजभय न रणाश्रय, न सल्लु रागमय न विषद्वय ॥ न सल्लु जनिभय
 न रिपोर्मयं, भवति भाक्तिभ्रता नरभून्पृशाम् ॥ ६ ॥ अपर पूर्वगुजोक्ष्य
 म्दले मरुपुमालिपसिद्धिपु नगले ॥ गगधमा बुमनेष्यपिगुज्जरे, प्रतिपुर
 गतिना तव गीयते ॥ ७ ॥ मम गजेप र कल्पलताभिना, कुण्डलगुरि
 गुरो फनिता बुना ॥ प्रवरमाग्यनेन मयानया, यदमृतन्दतेतद दर्शनम्
 ॥ ८ ॥ शशिधरस्मरनाणरमक्षधि प्रमितविभ्रमगुपतिसंवति ॥ स्वमय

सुन्दरभक्ति नमस्कृत , कुशलमूर्तिगुरुभक्ताश्रये ॥ ६ ॥ इति
समय मुद्रोपायाय रचित कुशल गुणैष्टकम् ॥

कुशल गुरोर्द्वितीयाऽष्टकम् ।

सुख सर्वात्मपदमेति पदयोरेक्यवदने, विनिद्रावागीशा हृदय
कमते सविदधिकम् ॥ विराग नर्वांगेऽपि च भगवद्भक्तिरनिश
समृद्धयर्थवदे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ १ ॥ निशिन्यापाधीन
निशग्निमधीनौ समधिना, पर बाणीलक्ष्म्योनिलयमपितदाननि
मुणो ॥ सदा यो वक्षते जयह्व सुपायोजयुगल, समृद्धयर्थव ॥२॥
त्तिपतौ तौ प्रेक्षा सरनिरुहयोर्यो मृदुलगो, र्जपापुष्पामासो किन्-
लयजितागेपमहसो ॥ रासङ्गेष्वालक्ष्म्य प्रकटितपरा श्रीसदनयो,
समृद्धयर्थव ॥ ३ ॥ मुरेन्य भ्वस्त्रेभ्व कतिपयदिनेर्ध फटामुयो,
धदाचित्तेद्राकश्रियमपि र्दिवायपगमाम् ॥ सुगुणैः ततोपासतश्चित्तुभौ
यौ मुवि गतौ, समृद्धयर्थव ॥ ४ ॥ सुभेगावाद्यन्ते परमगुणधर्मोप-
दिशत, सत्प्राप्तम पीतामृतरसनराशेरपि गिर ॥ श्रुता यस्यश्रेय
श्रियमपि दिशति स्थिरधिया, समृद्धयर्थव ॥ ५ ॥ निधि सर्वश्रीणा
गनधिकरशौ सर्वविपदा, मृत्स्निधो शोणायुपचितनग्नौ दूढशुटिनो ॥
शमानौ प्रोक्तुग प्रपदपटशाखा वितासितो, समृद्धयर्थव ॥ ६ ॥
ययौर्ध्वासूते धननुराधरा धामरमणि, रगीरारोग्यत्व निनयनयाविद्या
निपुणताम् ॥ गुणानौदार्यादीनपितनस्रटाढ्याश्रितनृणां, समृद्धयर्थ
व ॥ ७ ॥ भयकारागारामयसमरपारीद्र फणभृत् महापारावारा
द्विरद्वननेवानरभवम् ॥ १ डाकिन्येधुप्रग्रहगरलजत्यत्ममृत्सत,
समृद्धयर्थव ॥ ८ ॥ इत्य श्रीजिनपद्मसरिरचिनः त्रिव्याष्टकैः सद्-
गुरोः, पुण्यगुणमया मनोजफलाद् पापौघविध्वंसनम् ॥ भक्त्या इ प्रकृति

भरंश्चनमुत्पत्तुर ॥ कर्त्तृणानिलयं मुनिदु गवह, विनत्तगुरुशरणाभि
 वरम् ॥७॥ वरवैच्छमोत्रिमुनेमुत्पद कृत्तनाट्टेयमन प्रमुदम् ॥
 विगत न्यतने द्विष्ट समुद्रा मुनिगतमह प्ररुणाभि सत् ॥ ८ ॥
 श्रीमच्छ्री विनत्तमरिसुगुणे वल्यारावप्रोत्तम, लैवैगेविष उरु
 रिपलनेभीषानिधेधितिये ॥ प्रपूषेपिधिना समर्थमुनिना लब्धपुत्र
 रष्टकै, प्रेऽप्यायति न भवति छतत वागोषण श्रीयग ॥ ९ ॥
 इत्यष्टकम् ॥

अथ कुन्जल सुरोरष्टकम् ।

नतनरेश्वरमौलिमरिप्रभा, प्रवरेश्वरचीचतपयुगम ॥ मा
 मुत्थ्यगडालयमहिन, मुन्जलसुरिगुरुप्रपत्त मुवे ॥१॥ इति न सा
 द्विन्द्वदायिनो, सुविभवान् सुगुर्मेविकाश्रित ॥ सुगुमिज्यन्टि
 गतो भवेत् किमपैगेकैलञ्चकपर्कै ॥ २ ॥ इति नष्टसमाप्तु
 वर्त्तनि, प्रवरसोम्यन्मन्वितसञ्जानि ॥ मम हृदि स्मरंश्च तय संवदा
 भवेत्तु नाम तपस्तुमुनेमुने ॥३॥ द्विष्ट सकटै कोटिषु करपत, तनु
 श्रुताविपमाननेनानना ॥ सुगुत्तराज तरोन्विते शनादनुभवतिगर्नाग्ध
 मूर्छताम् ॥ ४ ॥ वृषसभामुद जेवहुमानता, विविधमाननेवयमा
 षटना ॥ गुपार्गिवारसुशिष्यपरपरा, स्तवगुगैमुन्नास्युर त्तरा ॥ ५ ॥ न म्बु
 राजभये न रंशदुर्ग, न म्बुलु रोगमय न विपङ्गनम् ॥ न म्बु वन्भिभय
 म्बु रिपोर्मय, भवेति भाक्तिभृतां तपश्चष्टजम् ॥ ६ ॥ अष्टपूरुजोत्रिय
 शब्दने मत्सुमालिकसिद्धिपुत्रगले ॥ मगधमाधुमतेप्यपि तु जेर, प्रतिपुं
 महिना तव गीयते ॥ ७ ॥ मन मनोरथ क्लेशलनामुना, कुशुलमुनि
 एते फलिताहुना ॥ प्रवरेश्वरमौलिमन्वित मन्वानयो, यदमनन्तेतप दर्शनम्
 ॥ ८ ॥ अजिपेरमन्वितारास्तत्तकि, प्रमिठविक्रममुपतिरावति ॥ सन्ध

सुन्दरभाक्ति नमस्तु १, कुशलगुरिगुणभवताश्रये ॥ ६ ॥ इति
समय सुश्रोपाध्यायरचिन कुञ्ज गुणरष्टकम् ॥

कुशल गुरोर्द्वितीयाऽष्टकम् ।

सुख सर्वासपद्धमति पदयोर्म्येवदने, विविद्रावागीश्या ह्यथ
फमले सविदधिदम् ॥ विनाग सर्वांगेष्वपि च भजनद्वग्मिराश
सगृह्ययथ ददे कुशलगुरेद्वयम्य चरणी ॥ १ ॥ निशिम्वापाधीन
निशदिनमधीनौ समविनां, पर बाणीलक्ष्म्योर्निलयमपितदाननि
गुरो ॥ सदा यो वचेते जयइव सुपाशोजयुगल, समृद्धयर्थे व० ॥२॥
निपतौ तौ प्रेक्षा सरसिरुहयोर्यो गृह्युल्लयो, जपापुण्यामासो किन्-
त्तयजिनागेपमहसो ॥ तसक्ते जालक्ष्म्य प्रजटिनपग श्रीसदनयो,
समृद्धयर्थे व० ॥३॥ सुरेभ्य स्वस्वेभ्य कतिपयतिर्नैर्य फलाम्नो,
कदाचित्तेद्राकत्रियमपिदग्निद्रायपगमाम ॥ गुरभुत्सकोपाननदतिबुधा
यौ भुवि गतां, समृद्धयर्थे व० ॥४॥ गुंभेगस्वाद्यते पगमगुग्धमोप-
दिशत, सदाकाम पीतामृतरसवरशेरपिगिर ॥ श्रुता यस्यश्रेय-
प्रियत्तपिद्विशतिस्त्रियधिया, समृद्धयर्थे व० ॥५॥ निधि सर्वश्रीगण
गनंधिन्नरयो सर्वविपदा, गृह्युल्लिधो शोणानुपचितनगौ गृह्युल्लिधो ॥
समानौ प्रोक्तुग प्रपदपदशाखा वित्तसितौ, समृद्धयर्थे व० ॥ ६ ॥
ययोरश्चोसूते धनसुरधरा धामरमणि, शरीरारोग्यत्व दिनयनगणिना
निपुणताम् ॥ गुणानौदार्यादीनपितनसरात्म्याश्रितनृणां, समृद्धयर्थे
व० ॥ ७ ॥ भयकांगेगारामयसामरपारीद्र, फलामृत्, महापारावाग
द्विरद्वेनवैश्वानरभवम् ॥ ८ ॥ डाकिन्याद्युग्रग्रहगरलजत्येत्समृशत,
समृद्धयर्थे व० ॥९॥ इत्य श्रीजिनपेत्सुरिरचिन दिव्याष्टक-सङ्-
गुरो, पुण्यगत्रमय मनोजफलद पापौघविध्वंसनम् ॥ भक्त्या य मटति

प्राञ्चमात्राञ्चयद् भु ॥६॥ तेषामशुभामाधत्ते, राभागामापद् प्रसु ।
 गेह त्नहन य पुंशु शब्दभ्यानगुणेभ्यदा ॥ ७ ॥ जिह्वुशतगुण्यो
 पुञ्जित नन्गुग्ग, धर्मिजिततरयी तां गतनित्तगर्शिताम् ॥ अण्वज
 परितां या विधेचैविवर्षा, म भवति तन्नाय, सिद्धिनामीसनाथ-
 ॥८॥ किष्टनदनमष्टक मया, ऽनारि त्तरगच्छद्गुरो ॥ ईप्सितप्रद
 भन्तपसारयद्, रत्नमोमसगतय शोभन्म् ॥९॥ इतिगुणस्तोत्रगुरो
 श्लोकम् ॥

चा धरवर त्रिसाणी ।

नाथक विध मिद्धा मेवा त्रिद्या परतिर सुरुतेन्फदा है,
 परिवारज वाधे गुणे शगाधे द्वाजहटा तुल चना हे, विना ग
 तिनन्दन केरसवच्छर त्तीसे जम तहदा हे, कुल भदय जायो
 धन्य विशयो जेत्तय जयती तग ६-॥१॥ तरे रंताने भाग्य
 त्रिगले भाव दिखतप्रदा है, गुरयोम्य विधानी बहु सनगानी स
 हथपाट द्वियज ह बहु मुस समप्ये ढालदफप्ये श्रीजिनतुश्ल
 र्गिदा हे, सहूलोन्नज असे इन गुरु पसे तुय इच्छा पूरिदा हे
 ॥२॥ निज परण जाने प्रायु पिधाने शुभ ध्याना ध्यावना है,
 न्योरासी स्वत योति अर जीनासस्वामदा है, अणसण सागारी
 श्री इकतारी सुत्तनारी जोपदा हे, वच्छर नन्यामी जे अविताशी
 सुधादी गावदा हे ॥३॥ धिध धुभज व्यप्ये दालिदफप्ये देरावर
 वापना है, वीरमपुर वागे चलि वीकाणे अरियनक जीपदा है,
 मुगारगुण गाये सहस्तेगावे त्योधपुरे जग्दा हे, नागेर नर्गानो
 गहु वा लीगे च्यतर भूतभगदा हे ॥४॥ जे धन तर नारी

ऊठ सवारी जाके पाय नमदा है, उन्हें जलनाहे श्रतिउमाहे इति
 श्रतीतद मदा है, जसुभ्याने जे नर होवे सुधरत तसु ग्रह दुष्ट न-
 सदा हे, अति उज्वल सखरी धोती पहरी कुकूम लेप षसदा है,
 धर वाग्ना चदन पाप निकदन शुभ भावे पूजदा है ॥५॥ स्वसयोही
 चगीराचिचे अगीमधुरर तिहा गुजदा है, मलयागर सखर बलि
 कृष्णागर धूपदसूधूपदा है, कस्तूरी पूरी कपूरी चूरी गोहूलाभे-
 लदा है, कुलधुद्धा लायक सुखादायक साजन बहु मेलदा है ॥६॥
 जसु महिमा चायी आवक श्रावी जाफो जस वाचदा है, महल
 सुरणाई सररीघाई मेघाज्यू गाजदा है, गुणगीत जगावे सीस
 नमावे नाटक मिलनाचदा है, भल्लरकसाला देदेताला बाजिध बहु
 चाजना है ॥७॥ इम आलस धारी धर इकतारी जे मन शुद्ध
 ध्यावदा है, ते सघली भाते सधल सघाते मन इच्छा पावदा हे,
 रायजादी राणी गुणै वखाणी वदनज ओपम चदा है, तसु
 देख्या मुख जाये दु खा घुघरिया रणकदा है ॥८॥ कटिसोहे
 गुफा अनोपम वक्ता कटि मेखल भ्रणरुदा है, जोवन वयमाती
 सहसुहाती तिणसू केल करदा है, बलि घोड़ वयल्ला साथ
 छयल्ला सिर पर छत्र धरदा है, इकचित्ते ध्यावे वेग वधावे पद
 चक्राच लहदा है, ॥९॥ तसु ह्यगयथद्धा बोलतभद्धा मुह
 आसीस कहदा है, खरतरगच्छ ईसर कुशलसूरीसर ताके गुण
 गावटा है, सेवरु साभारे शत्रुसहारे तरस्या तोय पावदा है, सुर
 सपति पावे अधिकेदावे चगासीमलहदा है, घग्घर निसाणी
 सहु वग्गाणी जय मुनिचद कहटा है ॥१०॥ इति घग्घर निसाणी
 प्रथम सपूर्णम् ॥

॥ १३ ॥ तू श्री सघ रवे श्री सघ परसे श्री सघ प्रिल्लपसदा है,
 श्री सघ धूम आण कुशल वधाए श्री सघ कुशल होवदा है,
 सघ मिल इरुचित बोले कीरत पारन को पावदा है, श्री सघ
 लही रिध सिधि पाई नव निधि श्री सघ नित बाधन्दा है ॥१४॥
 सवत् अठारे वरस चिहुत्तर कार्तिक मास वटदा है, पूनम रवि
 वारे गुरु दरबारे मेला खूब सोहदा है, तटा में भी आया दरशण
 पाया गोकृ तू तसदा है, घग्घर निसाणी कुशल कहाणी उदय
 रतन्न कहदा है ॥ १५ ॥ इति कुशल गुरु घग्घर निसाणी
 सपूर्णम् ॥

अथ छंद लिख्यते ।

स्वरतरगद्य जाणै सन्नक, राजे श्री गुरु राज, दादो दरशण
 देखता, सरे सहु शुभ काज ॥ १ ॥ छंद भुजगी—सरे सब
 काज सटक सटक, तूटे दुस जान तटक तटक, मिले मन मेलू
 मटक मटक, लगे गुरु पाय लटक लटक ॥ १ ॥ मरे मन मेट
 सटक खटक, चोखे चित चाह चटक चटक, हरो हठ वाद
 हटक हटक ॥ लगे० ॥२॥ धुमे नर थान थटक थटक, वधारे
 नारेल बटक बटक, गिर्लाजे सेस गटक गटक ॥ लगे० ॥३॥
 गुणो गुण माल गटक गटक, घणा मिसटान घटक घटक, जुडे
 गज खान भटक भटक ॥ लगे० ॥ ४ ॥ भगे भय भूर भटक
 भटक, अरी रहे दूर अटक अटक, कदे न पुकारे कटक कटक
 लगे० ॥ ५ ॥ दीजे सहु गेग छटक छटक, पुले खल सीस
 पटक पटक, भडे सहु पाप भटक भटक ॥ लगे० ॥ ६ ॥
 कलशा—लटरु लटरु पाय लगे जगे जस प्रगट पुरयाई, गुरु

सेवा सुरगवी आप लक्ष्मी घर आई, वीरानेर बिजेष जागतो
 गुर गडाले, जिनदत्तमूरि जिन कुशलरा आप विरटा उजगाले,
 मित्रय हरष सौभाग्यवर, उवत्ताय एमधम्मसी अरो श्री सघ ने
 सानिद्ध कर ॥ ७ ॥ इति छंद सपूर्णम् ॥

अथ छंद दूसरा ।

समरु माता सगस्वती, कुमारी कर जोड, तू माता कवियण
 तणा, पूरे बद्धित कोड ॥ १ ॥ कुशल करण जग कुशल गुरु,
 दायक बद्धित देव, अह निसि तो ओलग करे, मुर नर मारे सेय,
 ॥ २ ॥ पुर पट्टणगामे भगट, जग सगले जस वास, पुरावणी तो
 पालियो, वसे दादोजी वास ॥ ३ ॥ छंद मोतीढाम—दादोजी वाम
 न्ये दोलत्त, वधे छत्रवाया सेवकवित्त, वधारे मान दशोदिशिवान,
 धरे इक चित्त जिके गुरु ध्यान ॥ ४ ॥ पूनम २ पूजे पाय,
 नवा २ नेवज पारन पाय चपावलि केतकी पूल चरच,
 अनोपम श्रीफल लेई अरच्च ॥ ५ ॥ लहे घर मुन्दर लाध अर्धेष्ट,
 सभ्कती सोलवधती नेह, लहे घर नारी लोयणवान, लहे वलि
 पुत्त मुपुत्त सुजाण ॥ ६ ॥ लहे भल गाम सुठाम भूपाल, लहे
 ढिग भीत भला दीचाल, लहे घर मदिर घोड़ा जोड, लहे भट
 सेव करे कर जोड ॥ ७ ॥ लहे हित साजन दल्ल कलोल, लहे
 तित लीला छाका छोल, लहे घर कुरला कूर कपूर, लहे घर
 जीमण मोती चूर ॥ ८ ॥ लहे घर विद्या पुण्य पङ्क, लहे घर
 सुख उगते सूर, लहे घरमंगल महमसत्त, लहे घर चीर अनो
 पम सत्त ॥ ९ ॥ लहे घर बद्धित भोग रसाल, लहे घर साल
 कपोता थाल, घरे तित भीत तणा गहगाट, भणे तित जय २

चण्डा भाट ॥ १० ॥ भटा पुत मपुचिय वाक्क फलन, विद्योहा
 वासा वेग मिलत, अनेनानेक मिरद अपार, दीटो इक वलु में
 न आधार ॥ ११ ॥ जिहा सहस हुवे जो मुरा, फह इक जीहा
 केइ मुव, बड़ा विरन्ताहग अग्नियात, नर नारी फेइ आवे जात,
 गुणो तू गिर ओ समुद्र शरीर, कसो में कोइ न करज्यो रीम
 ॥ १२ ॥ दोहा—रीस न करज्यो कवियणा, में माहरी मति
 लार । फहियो जग में कुशल गुर, सरतरगद मिणगार ॥ १३ ॥
 छद लखुनागच—शृंगार द्वार साहण, मु कान धेनु दोहण, धरनि
 ध्यान जो सटा, टलति दूर आपटा ॥ १४ ॥ प्रथम जो नेरा
 उरे, मुथान मिधयी उरे, जसाण थूम जाग तो, सुदिह मघ माव
 तो ॥ १५ ॥ मुन्ताण मीर सवता, अनेक पीर देवता, फेरो
 हरे फतेपुरे, गुरु सदा उदो फरे ॥ १६ ॥ मरोट थान मूलगो,
 णकात चिच ओ लगो, वीकाणवान बोधतो, सुथान थान शो-
 नतो ॥ १७ ॥ प्रभायनारिणीपुरे, नीसाण वाजता घुरे, भेटो
 नर मठनेर, जगत्र सहु हुवे जेर ॥ १८ ॥ नागोर नाम दीपतो,
 दाण्ड देव जीपतो, तोरण तेम सोहण, जगत्र मन मोटण ॥ १९ ॥
 सख्य मेडते सही अपार लच्छि जिहा लही, महिम माल पूर
 तो, लाहार दु ग्य चूरतो ॥ २० ॥ कला अनेक आगरे, बर्चीस
 पवन भूलरे, दादेरी करत सेव, हिदुआ तुरका देव ॥ २१ ॥
 मदाभिद्ध सागानेर, जालमी करत जेर, अमरसरे कला अनेक,
 रासतोज ताड़े टेक ॥ २२ ॥ मालपुरे मुक्कमान, खान खान सेवे
 थान, प्राणपुरे राज रीत, जैतारण जगर्जात ॥ २३ ॥ सोभत
 नुख सद्य, पेना तटे विरुह्य, रेजटले खरो सदा, वाहइमेद
 सपदा ॥ २४ ॥ जोधाण मिले जातरा, जुइत देश देशरा, वीर-

गुण तिमरी, करत नृत्य श्रमरी ॥ २५ ॥ जालोर जैतमिहरी,
 लभायते स्वराखरी, प्रगट आप पाटणे, सृग्त सुख वापणे ॥ २६ ॥
 अनन तेज अहम्मदा, सुमगलोर सर्वदा, साचो भुज सासतो,
 तुस्त रात्रु आसतो ॥ २७ ॥ जइपुरजईडरे, सेगावे कोटटेगुडे,
 गुरु सदा उदो करे, एकत ध्यान जो धरे ॥ २८ ॥ भमत भाण
 जे तले, कीरति कोटि ते तले, कहू केता जीम एक, कोडपी
 कला अनेक ॥ २९ ॥ दोहा—कला अंक कुशल गुरु, समरचा
 रोय हजूर । अलगी टाले आपदा, जिम अधारे सुर ॥ ३० ॥
 कलाश—भूर तेज तिम सुरि वृरि आपद भन टाले, माविधा ज्यू
 मया करी सेवगा प्रतिपाले, मन बद्धित माइ बाप कुशल गुरु
 का मित्त दाना, पूनम पूजे पाय रहे ध्याने जे गता ॥ ३१ ॥
 सुप्रसाद सोम सुन्दर भुगुरु अगय सोम ओलग करी, प्रीगटियो
 भूम पालीपुरे विजयासिंह तीना वगी ॥ ३२ ॥ इति कुशल गुरु
 वन्द संपूर्णम् ॥

सद्गुरु छन्द तीसरा ।

दोहा—परतिरा परचा पूरवे चूरे सकट कांडि ॥ श्री जिन
 कुशल मुनिदवर वरणुं दाय कर जोडि ॥ १ ॥ छंद—रु घोड सद-
 गुरु पाय लागू सजन घर उच्छव घणो, वरनयर देरावर वखाणू
 सकत थूम सोहामणो, परतिस्व परचा सयलपूरे दुरिय चूरे तत
 भिणो, जिनकुशल सूगीसर निरजा हियो हेरखे अन्हतगो
 ॥ २ ॥ तिरधनाधेधनराज रना पुत्र तेय अपुत्रिया, ले भागिया
 सोभाग अप्पे मुम्बल मपे जानिया, इरु चिच ध्यापे सुगुरु अह-

निश तिहा चिंतामणि जिस्मो, जिनकुशलमूर्गीसर शिरोमणि
 वसुधैवकुटुम्बक इत्यो ॥३॥ सड मडति सडसड सर विद्धुटे
 जडति जोर जिहडिये, खड मडनि म्गम प्रहार वज्जे कुति कुजर
 गडिये, हुकार भण हफे भडो भट इम्ये रण सदगुरुसरे, चिन
 कुशल सूरिसर प्रसादे जयति निश्च ते वरे ॥४॥ थलउदघाट,
 पुनति पथी पडे जेहप्रिसालूया सूफत होठ मिनत लोथण
 लमगीहाता लुया, गयजीव आमे नाकसामे मुगुरु नाम जिफो
 वहे, जिन कुशल सूरिसर प्रसादे नीर निर्मल ते लहे ॥५॥
 अल्लोल जल उल्लोल माला मगर मच्छ भयार, घणघोर नीर,
 सुतार सायर सयल जन धुन्नेमर, बुटति वाहण मज्झि जे जिन
 कुशल नामति उच्चरे, जिन कुशल मूर्गीसर प्रसादे तारि सकट
 उदरे ॥६॥ घासिह विसहर विस रिम नर वदि खाना बधण,
 टायण साइण मोगल मोगा जाग्वरखंखसभय घणे, ममरत
 सगुरु नाम धारजे मत्र जे अहनिणि भणे, जिन कुशलमूर्गीसर
 प्रसादे मिले तबनिधि अगणे ॥७॥ गलवे मरहट मेदपाटे मूलनाने
 मडले, घण घाट लाट रुपाट सोरठ गुजराते सिधने, खुरमाण
 गजनीपमुड देमा माहि महिमा जाणिये, जिन कुशल सूरिसर
 शिरोमणि मुगुरु यम बस्वाणिये ॥८॥ जायना चदन मेल केशर
 मुगुरु पूना नित करो, मृगनाभि अंगर कपूर भेली मोग उगा
 हो गरो, नगेल नेवज बोइ आगलि गीत गावे भाभिनी, जिन
 कुशल, मूर्गीसर प्रसादे आम पूर्णी मन तणी ॥ ९ ॥ कलश—
 आम्हा पूर्णी मकल सुगि चिन कुशल पमाने, देसोरी वर तरुण
 रनि मधुर धरनि गावे, ममरथ मगुसगय पायप्रणु मे नित नखर

अग वर्तमाने लीलपती ॥१०॥ युवति गुग लायक नैतमिरी,
 भल चांसठ भेद कला तू भरी, लखकृष्णदे अमताग लियो,
 कुल जाण के भाण उघात नियो ॥११॥ जन मन पुत्र धयो
 जयकार, सघोपे वाजिप्र मगलाचार, अनग रूपो निमो उणियार,
 निलक कुदण देव उमार ॥१२॥ वधते वेसथयो वडवीर,
 सराहे योगीन्द्र शील सधीर, इत जिन चद्र भट्टारक थाय, ममथ
 जीत महा मुनिगय ॥१३॥ तपे सहु मूरतिया सिरताज, विद्या
 धर छत्र गरीम निराज, बलाबल हाजर वावन वीर, मली जेरे
 चोमठ योगणि भीर ॥१४॥ भयभीत पेचर दृग् भजे, फि
 पच नदी पच पीर मभे, डरे ताव उरण दानव देव, सकेनाय
 कारण चारण सेव ॥१५॥ अहो तपतेज अर्भीत आनाइ, महा-
 वन सधर मेर पहाड, पगोतल लोटे छत्रपती जटपाग इसो महा
 योग जती ॥१६॥ दोहा--गढ सनियारणे जगत गुर, आया गढ
 पनि आप, भेटण आवे नूनती, पुढवी मुण परताप ॥१७॥
 मत्री जेट्हे कुल मुगट, कुयर साथ किनाह, विधि हित आयो
 वादवा, लाचक सघलियाह ॥१८॥ श्रीगीरी चाणी सुरी करे
 वचन कर जोट, अक धरु सुत आपरे, महीपति गदपति मोड
 ॥१९॥ आने ही गुर अगियो, म्वप्ने वायक साम, कुल दौपक
 भल हल कमल, जम्यो तो घर जाम ॥२०॥ कही जे तो सुत
 करमसी, जोग सम्तन मिद्धहत्थ, ममपे विनन्नद सरिने, कुल म
 रहसी कल्प ॥२१॥ चित हित कर धाजड तणा, वचन सुणी
 वरगाय, अम्हा होमी आपाड सिद्ध लीनो कठ लगाय ॥२२॥
 भूमडल विचे भमर पृची लो नमु पाय, इतरे श्रावण् आनियो,

बदल गहर वणाय ॥२३॥ धर गुग्जर मगल धवल, थिस्वी
 म्मै शार, पाटणचद पधारिया, घणाहुआगह गाट ॥२४॥
 सवत तेरमतहचरे, वेठो चट निमाण, तपे पाट कुशलेमाचिण
 ज्योतिवत घण जाण ॥२५॥ छंद मोतीढाम—तिण पाट तपे
 कुशलेसाकि मो, जिनदत्त धीयो जिनचद जिसो, कुल हस समो-
 पम देव फला, श्वतार ययो शमु आपहला ॥२६॥ नग नेत्र
 भूलोमल कम्मल नूर, परमल गात्र सकोमल पूर, दीपे धन सार
 महा सुर देह, अनत मुजामल रूप अद्येह ॥२७॥ ऋधु जिन
 धर्म चले सुधराह, वडा इद्र देव वखाणे ग्राह, जीता जिणे पाचे
 इद्री जोध, कदे तस ज्ञानन व्यापे क्रोध ॥२८॥ पगपग जीव दया
 प्रनिपाल, ठावी जेरे मोक्ष तणी मन ठाल, महा सिद्ध योगीद्र भूप
 गरद, सभेवपु भूमण शील जरद ॥२९॥ वणे सिर ऊपर टोप
 वेराग, धरे मन धीरज लागो ध्याग, क्षमा खग साहि क्रमा खल
 खट्ट, जिसो मृगराज कुरग भूपट्ट ॥३०॥ करा दृढ भाल विवेक
 कजाण, भरचो गुरा बाण वडो मोथाण, चमाचम बीजल चारिअ
 शेल, फने गज अग दुआदस फेल ॥३१॥ इसो तप तेज अभग
 तुरग, नवे पद जापनेजान वरग, महा भइ जीत त्रिवक्र मदन,
 वधे घण पोरस जोस वदन ॥ ३२ ॥ जपे ऋषि जोगीद्र जय
 कार, वदे पग चोविह सध जिवार, गाये गुण गधर्व नागेंद्र गोम,
 भणे मुख कीरति सारी भोम ॥ ३३ ॥ दौहा—नच तत्त भेद
 गजोग युत, पथ सजम प्रतिपाल । नव्यासिये सुर वर निडर,
 हुओ अमर हटि आल ॥ ३४ ॥ देराउर पुर सिंध दिसि,
 प्रगटी ज्योति प्रमाण । पग पूजे हिन्दु आण पति, मीर धीर

भुगलाण ॥ ३५ ॥ कमल २ चढती कला, इला मनावे आणो ।
 गधस्तर कुशलेण गुर, दादो जैन रो दीवाण ॥ ३६ ॥
 छद मोतीढाम—दादो जिन धर्म तणो दीवाण, गटे जस राणिंद
 रावल राण, दाता मन बद्धित ढै वरदाय, पृथ्वी सहु हाजर सेवे
 पाय ॥ ३७ ॥ निरमल गग अनापम नीर, अरचे चढन हूल
 अनीर, घणो घनसाग कम्तूरी घोल, चढे गग केसर कुकम चोल
 ॥ ३८ ॥ भिगा मिग दीपक ज्योति भलक, भती शिव मडल
 भाण भलक, मिले अठगघ तुघूप महक, गाणे उधरगे गीत
 गहक ॥ ३९ ॥ बधारे श्री फल उच्चलनान, पूर्णबने चाट्टि
 मिटाई पान, करे नवनेत्रज ढेवे कोटि, जपे मुरा जाप विहे कर
 जोटि ॥ ४० ॥ इनी विघ तीनेही टक अभ्यास, खरे मन पूज
 करे पट् भास, जतावे रूप तुरतनयार, तसे गुरु देवतो लाविन
 यार ॥ ४१ ॥ मिले घर सपत मगलं भाल, सदामद भोजा
 साक रसाल, पाये नित दूध कटोरे पूर, सन्धी जन उच्छव ऊगे
 सूर ॥ ४२ ॥ तीगा मृगमद सग तबाल, करे अग न्हाण कपूर
 कठोल, वामा पानिवचा नरण विशाल, भलो मुखचट विराजे
 भाल ॥ ४३ ॥ पृथ्वी जम कीरति पूत सपूत, अनमी आय करे
 अमनूत, मोती मणि माणक मूदरडा, कर कण्ण हेम जडाव कडा
 ॥ ४४ ॥ म्बडा अग ओलग दाम सनाम दशो दिस हाजर
 ढासी दास, पर जोट्ट घणा नर सेव करे, धर भोग वे चामर
 धत्र धरे ॥ ४५ ॥ सुम्बासन आमन रथ सहल्ल, महा सुख माणे
 रग महल्ल, आराहित कच्छी खग उत्तग, मदोमत घूमत जूथ
 मत्तग ॥ ४६ ॥ शटी गढ महिषी गाया धाट, मथाणे गोरस

सं माद, भरवा नवनिद्ध शरदृष्ट भदार, कृपा कर थाप तूठ
 कृता ॥ ४७ ॥ कूलश—कृपा कर करता, थाप तूटो थल-
 देकर गणधर गौतम जग, पुहवी दाना परमेसर, सोमनाग मिर-
 ता, प्रगट पूनम निः प्राणी, संभे पदन धर्तीम, भाव भगता
 कर जाभी, माजा समद ताता, मदी मडल मन्दिमा यणी,
 कभिराज रीमू वद्विन करण, धन हो धन रागतर धणी ॥४८॥
 इति राजमिह गुनि कृत कुशल गुरु दत्त सम्पूर्णम् ।

अथ सद्गुरु जिनदत्तमृरि छद् ।

टोहा—वस्त्यायक हम वाहनी, साग्न मात सहाय । त्रिभु-
 वन मुख दाता तू, सीगती नित्ती कदाय ॥ १ ॥ जग मादे,
 पडित जिहे, बाचे अरिग्न वाण । ते प्रगाट सहु साहरो,
 अगम निगम अहिनाए ॥ २ ॥ वाणी वलि आकरणी, वैदरु
 तेम विनाए । धनि मुख यामो तू करे, तद गीके राजान ॥३॥
 श्री सद्गुरु सीम्बापिया, भापा पद् रस भेद । जण २ मुख वाणी
 जुई, मुख्यता वधे उमेठ ॥ ४ ॥ गाऊ गुण गत्रपति तरणा, पदवी
 युग प्रधान । जगपुर महिमा जागती, श्री जिन दत्त सुजान
 ॥ ५ ॥ ज्या सेन्यो त्या जाणियो, श्रो अत्र लियो मरद । जल
 वट थलवट जुगति सु, समरचा न्ये सबद ॥ ६ ॥ इण खोटे
 पचम अरे, पुहवी वडी प्रसिद्ध । गाम २ कोटे गढे, नगर २
 नव निद्ध ॥ ७ ॥ छद् जात नारसी—नवनिद्ध रिद्ध प्रसिद्ध
 वाधे गुरु जप्या गहगाटण, सुर असुर उभा करे ओलग
 थान आगल धाटण, परचा देखालण कष्ट टालण गन्धस्वगतर

पतए, जिग वृत्त सूरीस सद्गुरु मेवता मुख मन्त ए ॥ ८ ॥
 मवत् इम्यारसे प्रतीसे सागवाड सुगजए, मत्रवी वाद्धिग गोत्र
 ह बट, गृणता गजगजए, तमु धरणी बाहद् देवो नामे, सत्त
 शील सभक्त ए ॥ नि० ॥ ६ ॥ शुभ स्वप्न सूचित पुत्र जनम्यो
 वदे कवि वसावनी, वाजिया ताल कसाल बहु विध, राग रगे
 मनरली, दश दिवस बोदया हिवदगृठण पोखिया कर पतए ॥
 जि० ॥ १० ॥ तिण काल तिणहीन समे तिण पुर देव
 उच्छव हरण सू, गुरु नाम जिन वल्लभ जती सर पृजिया कर
 परखमू, तप जप्प सयम दया पालक निरण जिम जसु कातए ॥
 जि० ॥ ११ ॥ तसु पाय प्रणनी अंग ऊलट आण मन उद्ध-
 रण ण, इम्यारसै दकताल मवन् प्रखा न्न गुठ सग ए । नि
 वचन किमिया शुद्ध माधन आण मन एकात ए ॥ जि०
 ॥ १२ ॥ इम्यार अंग उपाग वारे भेद भाव भला भयया,
 गुरु वचन सहिता विनय चहिता सत्र मदि अर ये सुग्या,
 सतशील सजम शुद्ध समकिा सट्ट विध सोम्यत ण ॥ जि०
 ॥ १३ ॥ गुरु देस प्रणिमा शिष्य महिमा वलिय गरिमा गज
 ण, सगलाई शिष्या मादि दीपक राग राणा रज ण, उद्योत-
 कारी ने आचारी शुद्ध धर्म सभक्त ए ॥ जि० ॥ १४ ॥ अनु-
 क्रमे दिन २ पुण्य वधते ऊपनी मन आमता, पगसिद्ध घटवय
 राग प्रगट्यो सरदहे गुण सासता, परिणाम गगा नीर निरमल
 खरीपर मन स्वत ए ॥ नि० ॥ १५ ॥ निज पाट थाप्या करि
 महोच्छव इम्यार सै गुणतोत्तरे, सूरि भत्र साधन गुरु आराधन
 चडिजा सेवाकरे, मन माह प्राणी गुरु परपर भत्र शक्ति महत्

॥ जि० ॥ १६ ॥ गुरु विधे पुर्णगिरि चर पश्चिम सुखविहारे
 चरना, गवेगरेगे गातु समे धर्म चरचा चरचना, राजा न राणा
 य श्राव मंडवा चहु भन ष ॥ जि० ॥ १७ ॥ जालोर नयरे
 लिय चागी सगर नृा चहु आग ष तनु पुत्र बोहित्थ तेण
 कु पय प्रणमिया गुण जाण ष जीनाडियो कर जाप जिनदस
 देन भर्म सभक्त ष ॥ जि० ॥ १८ ॥ प्रजमेर नयरे तीर्थ पुह-
 ष गवना हट रग ष, तसु पोतरां वामदेव नामे कियो उज्जल
 ष ष, कुरुहा वरगी गावनो धी चोपड़ाया सत ष ॥ जि०
 ॥ १९ ॥ परचा दिग्वाले दुग्धिटाले मा शन्ते मांरनी, उपगार
 धरी दया धारी शोभ जगमें सोरनी, सो वर्यावर्णी धीध कामा
 राव सहु रीभक्त ष ॥ जि० ॥ २० ॥ बड बडे गामे ठाम ठामे
 भूपति प्रति बोधिया, इक लवस्य ऊपर सहम तीमा फलू में धावक
 फीया, परचा देखाइया रोग भाइया लोक पायलसनए ॥
 जि० ॥ २१ ॥ गुनाता मीरा पच पीग पच नटिया ण्णिमे,
 चोमट्टि जोगणा वीर वायन वस दुनिया थर हरे, जपनाल जपता
 जापू सत्र आय पाय पटत ष ॥ जि० २२ ॥ वरमान चोमठ
 जोगणी बलि दीया लीया गुरु कने, इण ठाम बहिने निचो आमी
 मान बलना फलमने परिवार पूरे पाठधारी वचन सिद्ध वरंत
 ष ॥ जि० ॥ २३ ॥ पठिकुमण साहे बाज लीना देम बहु
 भक्तकार ए ते मत्र राखी सघ साखी जग सुचम जयता ए,
 लुन्ह पाय लागी मीख मागी कुघडिये दासत ए ॥ जि० ॥ २४ ॥
 अंबड सुमानग हाथ अक्षर दासानुदासादिफ मही, गुरु युषत
 प्रणटे प्रगट अन्न जाणने जुग नर गरी, पश्चिम जुग प्रभान

पदवी अविद्या वग सत ए ॥ २५ ॥ भेतरामरे सीट सामत तासुमुत्
 आम्था ए, गुर पाय लागी ऋद्धि भागी सफल विधि सुविधान
 ए, पन्दिम विधि तुम्ह भास्य फलसी राष्ट्र वश नधत ए ॥ जि०
 ॥ २६ ॥ हिव उच्च नगर उडे उच्चव आविया उण धान कै,
 सुगपति पुत्र प्रमाण जाणी अजम मन मे आण कै, करि जाप
 विद्या बल बुलायो हर्ष लारु हसत ए ॥ जि० ॥ २७ ॥ इण
 विधे विक्रम पुर विहार भरि उपद्रव नेटियो, करि शात वाणी
 दाट पाणा सन रोग समेटियो, श्री सध सगलो सुजस आखे
 कवि कीर्ति कहत ए ॥ जि० २८ ॥ बटनगर माहे एक ब्राह्मण
 जैन द्वेषी जाण ए, देहग द्वारे मृतक गमनी घास नागी आण
 ए, परकाय में परेण विद्या प्रगट कर पर सत ए ॥ जि०
 ॥ २९ ॥ उज्जैन नगरे देव मात्रा वज्र थम विचाल ए, प्रच्छन्न
 विद्या सोदनी विधि तिण समै तत्काल ए, तधु लाघवी करि
 उरीलीधी दिवम तिण दीपत ए ॥ जि० ॥ ३० ॥ सवत् वार
 इग्यार वच्छर गुर थया निरनाण ए, आमाढ मासे तिथि इग्यारस
 शुक्ल पक्ष सुजाण ए, अजमेर नगरे वडे उच्चव पादुका पूजत
 ए ॥ जि० ॥ ३१ ॥ इम विरुत बटुला जगत माहे कवी कहो
 कुण कट सके, सुर असुर सगला पाय नामी ताहरो सगणो
 तके, दालन दाता मुक्य माना पुहवी जम पमरत ए ॥ जि०
 ॥ ३२ ॥ यल छिद्र सागण डायणी नहि भूत प्रेत भयकरा,
 जिन दत्त जापे तुरत आपे प्रमन्न होय जावे पण नलि रोग मोग
 फदेन न्यार गुणी जन गहरत ए ॥ जि० ॥ ३३ ॥ वलि वाट
 घाटे मनु गट फट फट केनला शुभ रूप पुन कलत्र मनान्

जिनदत्तसूरि धन्द ।

नेत्र चाहे जेतला, भूखिया तिभिया दिये मोजन अचल जस
 बन्त १ ॥ त्रि० ॥३४॥ कलश करित्त—श्री जिनदत्त सूरिद
 बहु आगे जग सारो, श्री जिदत्त सूरिद आज आरो वरतागे,
 श्रीजिनदत्त सूरिद सेवता सिद्धि समण्ये, श्री जिनदत्त सूरिद कष्ट
 क्लम सब कष्ट्ये, विद्या निधान पाठक विनय श्री रुघपति पाठक
 सरू, गुण ताल ममे गहगाट गू रचियो छद मनोहरू ॥३५॥
 इति जिदत्त सूरि गुरु छद सपूर्णम् ।

राग कडखेफी (छंछ) ।

प्रेम मन धार नित पहर परभात रे, विविध जसवास गुण
 रासनादो, अमल आखियात विखियात गुण इण इला, दीपती
 देव जग माहि दादो ॥ १ ॥ घाट रिपु थाट जल थाट, ओघट
 घणे हणे मट आपदा भय हुय हजुरे, सूरि सिरदार दै सकल
 सुख सेवका पूर नित कुशल जिन कुशल पूरे ॥२॥ अधिक घण
 भाड उजाड अवगाहता लस्करा तस्करा पड्या लारे, धीग
 गन्दगज रो ध्यान मन व्यावता, विकट सकट सहु निकटवारे
 ॥ ३ ॥ बटकनी भाजती बूडनी घेटिया, पार उतार जिन विरद
 पायो, तुम्ह सेवरु तणा दु ख भाजे तुरत, धर्मसी कुशल गुरु
 नाम ध्यायो ॥ ३ ॥ इति ॥

वावन बीर किये अपने वश चौसठ जोगाणि पाय लगाई,
 डाडाणि साडणि भूवर रोचर भुतरु मंत पिशाच पुलाई, बीज
 पटव भटव रहे मन माहि सटवनमाई, कहे धर्महित लघ
 कुण लीह लिये जिनदत्त की एक दुहाई ॥ १ ॥

राजै धूम ठोर २ ऐसो देव नाहि और दादो २ नाम ।
जगत जस गायो है, अपने कू भाव आय पूजे लोक लक्ष्पा
प्यासन कू राण माहि पाणी आय पायो है, वाट घाट शत्रु था
हाट पुर पट्टण में देह गेह नेह से कुणल वरतायो है, धर्मि
ध्यान धरे सेनका कुशल करे माचो श्री गिन कुशल सूरि ना
यू कहायो है ॥ २ ॥ कुशल अग उद्वग कुशल विराजे व्य
पारे, कुशल देव देहरे कुशल धणराज दुनारे, पुण्यपसायें कुश
कुशल श्री सध भणीजे, पाहण आये कुशल कुशल घर २ गाईजे
निन चद सूरि पुह पट्टधर नाम मत्र आगति टले, जिन कुश
सूरि पाव पूनता नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ ३ ॥ कुशल बडो
ससार कुशल सज्जन जन चाये, कुशले मगल माल लच्छ घ
कुशले आवे, कुशले घोड़ा धट्ट कुशल पहरिये सुवन्नो, कुशले धन धर-
सत कुशल धन धन खन्नो, ऐरसो नाम सद्गुरु तणो कुशले जग
रलिया मणो, निन कुशल सूरि जप्या जुगत धर २ होय वधा-
मणो ॥ ४ ॥

मिश्री धृत क्षीर ग्लाय मिलाय प्रभात ममें गटके गटके,
सुम्नगत निनास सुधारण कू मन मेल मिले मटके मटके, भली
अट्टि बड़ी दिल रजन कू सत्र आय मिले सटके सटके, रुधपत्त
कहत नुगत मिल्पा गुरुदेव नमू लटके लटके ॥ ५ ॥

मसूर पठाण गरन कियो भइ या चाद बडू कोई पडित
जागे, साह सलेम बुलाय श्री पूज्य कू मोहि भरोमा चदन भाग,
भट्ट हार गयो इक चाट रानद की जीत भई यू जैन के तागे,
वाद पीनो निन चद भट्टारक यू पनमाह ढिल्लोपनि आगे ॥ ६ ॥

१० मृग नयण चले गुरु बदा छूट मानू गजराज घटा,
 ११ नेउर हार बणयो गल माल बती विच छूट लटा,
 १२ गावन गीत सुहागण भगल पुरत मोतिय चोरु छटा,
 १३ जिन चंद भट्टारक सनमुख जाके वादी हटा ॥ ७ ॥

शक्रवर पानशाह प्रतिबोधक जिनचंद्र गुरु छन्द ।

१ पेनी सतन की मुख वाणि सुणी जिन चंद मुखिण्ड महत
 २ श्री, तप जप्य करे गुरु गुज्जर में प्रति बोधत है भवि कू
 ३ सुपती, तब ही चित चाहन चूप भई समय सुंदर के प्रभु गच्छ
 ४ पन, पठाय पतिसाह अजब्व की छाप बोला ए गुरु गजराज
 ५ गति ॥ १ ॥ गजी गुज्जर तैं गुजराज चले विच में चउमास
 ६ बालोर रहे, मेदनी तट भत्र मटाण कियो गुरु नागोर आदर मान
 ७ लहे, मारवाड रिणी गुरु वदन कू तरसे सरसे विच वेग वहे,
 ८ हरप्यो सध लाहोर आये गुरु पति साह अरुव्वर पाव गहे ॥ २ ॥
 ९ एजी साह अरुव्वर वव्वर के गुरु सूरत देसत ही हररे, हम
 १० योगी जती सिद्ध साध ब्रती सब ही खट दर्शन के निरखे, तप्य
 ११ जप्य दया धर्म धारण कू जग कोई नहीं इनके सरखे, समय
 १२ सुन्दर के गुरु गच्छपती यूं साह अरुव्वर ने परखे ॥ ३ ॥ गुरु
 १३ अमृत बाण सुणी सुलतान पेमा पतमाह हुकूम किया, सब
 १४ आलम माहि अमारपलाये बोलाय गुरु फेरमाण दिया, जग
 १५ जीव दया धर्म दाक्षण त चिन शासन में जो सौभाग लिया,
 १६ समय सुन्दर के गुणवत गुरु दग नेव्वत हरखित होत हिया ॥ ४ ॥
 १७ हेजी श्री जी गुरु धर्म गोष्टि मिली सुलतान सत्तेम अरज्ज करी,
 १८ गुरु जीव दया मन चाहत है चित अतर प्रीति प्रतीत खरी,

कर्मचद बुलाय दियो फरमाण छोटाई स्वभायत की मद्यरी, ममय
 सुन्दर के सत्र लोकन में है खरतरगच्छ की रयात खरी ॥ ५ ॥
 हे जी श्री जिन दत्त चरित्र सुणी पति माह भये गुरु राजीयेरे,
 उमराज सने कर जोड़ खड़े पभणे अपणे मुख हाजीयेरे, चामर
 छत्र मुरातिव भेट गिगड़दू ध्यू वाजियेरे, समय सुन्दर तू ही
 जगत्र गुरु पतिसाह अम्बर गाजिये रे ॥ ६ ॥ हे जी ज्ञान
 विज्ञान कला गुण देख भेसा मन सदगुरु शिष्येरे, हमापूरो
 नदन एम अग्नेमानसिंध पटोघर कीजीयेरे, पतसाह टजूर
 थप्यो सिंह सूरि मढाण मन्त्रीश्वर वीक्षियेजी, जिन चद्र पटे
 जिन सिंह सूरि चद्र सूरज ज्यू प्रतपीजियेजी ॥ ७ ॥ हे जी
 रीहड़ वश विभूषण हस खरतरगच्छ समुद्र शमी, प्रतप्यो जिन
 माणिक्य सूरि के पाट प्रभाकर ज्यू प्रणम उल्लसी, मा शुद्ध
 अकबर मानत हे जग जाणत हे परतीत इसी, जिन चद्र
 मुणीद चिर प्रतपो समय सुन्दर देत आशीस इमी ॥ ८ ॥
 इति अकबर पाति साह प्रतिबोधक दादा श्री जिन चद्र सूरि
 गुरु अष्टक छंद ।

अथ अष्ट प्रकारी पूजा प्रारम्भ ।

दोहा—क्षीरो दधि जल अमृत निधि, गंगा गोमती वार,
 कचन कामित फलय भरि, चरण हवण करे सार ॥१॥
 श्लोक—निदधेस्तनपनतपनोत्करिमा, मरिभासितसत्कमण्यगुरो
 बरवारिभिरादरितस्त्वरित, तरुपुष्पनलापमवासरमै ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं
 श्रीसद्गुरोर्जन निर्विपामितेस्वाहा ।

चदन केशर ॥ दोहा ॥ कुकम चटा चरचिये, कन्तूरी
पन सार, मरन सुग्भि उव्य भेलिये, कीर्ये विधि विन्तार ॥१॥
श्लोक-सुग्भिभिश्चिनकुकमचटौ सुगुणपादमहाबुजसेवके ॥
भविकपुण्यफललभनेमहा, प्रवलभक्तिन्मादिचिरमुदा ॥१॥ ॐ ह्रीं
श्रीसद्गुरोश्चदन निर्विपामिते स्वाहा ॥२॥

दोहा-चपय, जाई मोगरा, केतर्की, फूल गुलान, मद्रु
चरणे रयाइये, भर २ सुन्दर दान । श्लोक-सपूर्णितादशादिशा-
भवलामिरूपे, समोहितालिगुणगीतयुतेश्चपुष्पै ॥ तेभ्य समार्चित
पन् परम लभते, श्रीजैनचद्रगुरुपादविलामलीलम् ॥१॥ ॐ ह्रीं पुष्प
निर्विपामिते स्वाहा ॥३॥

दोहा-अगर तगर अर सुग्भि, चदा नदा मोद, श्री
जिनकुशलसूग्भिन्दुगुरु, वाभित परम प्रमोद ॥१॥ श्लोक-गुरराज
पदेवरवासमय, भविक किल पूजयते प्रथितम् ॥ णिज देहकजनजयत
स्वलु, बहुबुद्धिसमृद्धिनिधिप्रथितम् ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं धूप निर्विपा-
मिते स्वाहा ॥४॥

दोहा-गल जडित कचन मई, थाल ग्रही कर माहि,
गगल दीप भनो धरो, अशुभ टरे छिन-मादि ॥१॥ श्लोक-
विशालरूपादिसुपर्णपात्रे, णि गायदीपचवरासखड्ये ॥ ध्रावकादीप-
मयासुपूजा, भृश विधाय सुतरा क्रमेण ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं सद्गुरो
दीपनिर्विपामिते स्वाहा ॥५॥

दोहा-अक्षत थाल रसाल भर, स्वस्तिक पूजकरेह, स्वस्तिक
भली विध भीपजे, नेहग दूर टरेह ॥१॥ श्लोक-अमृत्य मुक्ता

नेनाणू समो मर्या रे, प्रथम जिनट जगदीश रे भावीसम
 नवर विना रे, समवसग्घा तेवीस रे ॥ नमो० ॥ २ ॥
 ॥धु अन्नत अण सण मही रे, सीधा पहीज ठोड रे, काल
 गामी बलि सीभूये रे, साधु अन्नता कोड रे ॥ नमो० ॥ ३ ॥
 नंत कल्याण भूमिका रे, महिमा वत महन रे, साम्बतो तीरभ
 सही रे, अति सय जाम अन्नत रे ॥ नमो० ॥ ४ ॥ कोडि
 भनातर जे क्रिया रे, पातिक विविध उपाय रे, संयुज स मुग्घ
 चालता रे, पग २ ते सह्य जाय रे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ धन दिन
 तेहीज जाणन्यु रे, बहम्यु संयुजा केरी वाट रे छहरी यथा विध
 पालमू रे, सध सहित गह गाट रे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ पग २
 उच्छव अति धणा रे, पग २ याचन दान रे, प्रेम भक्ति
 माहमी तणी रे पर उगार प्रदान रे ॥ नमो० ॥ ७ ॥ धन
 ते गिरिराय निरखसू रे, बवती मगल माल रे मणि मोतीय
 डेगानमू रे, रजत सोवन भरी धाल रे ॥ नमो० ॥ ८ ॥
 धन जिन गिरिराय फरससू रे, करम्यु पावन मोरी काय रे,
 भक्ति युक्ति जुहागस्यु रे, नाभिादन जिनराय रे ॥ नमो०
 ॥ ९ ॥ द्रव्य भाव करस्यु मुत्ता रे, पूजा विविध प्रकार रे, भावे
 भावता भावसू रे, करम्यु मफल अवतार रे ॥ नमो० ॥ १० ॥
 रत्न नई ममती भला रे, देम्यु ते धर बुद्ध रे, भव २ भमण
 नित्रागम्यु रे, करम्यु यातम शुद्ध रे ॥ नमो० ॥ ११ ॥ विधि
 फगन गन माहगे रे, मोहि ग्घो दिन रात रे पुण्य प्रवल था
 पामया रे, उज्ज्वल गिरिकेरी जान रे ॥ नमो० ॥ १२ ॥
 नाथ बुन्वापु पभाव नी रे कारज नगता सिद्ध रे रहे जिन

सग, दूरध की परिहरिये ॥ वि० ॥ ६ ॥ एकत आहाशी नें
 सचित्त परिहारी, गुरु साथे पद चरिये ॥ वि० ॥ ७ ॥ पडि-
 क्षमणा दोय विष सू कीज, पाप पडल विष हरिये ॥ वि० ॥
 ८ ॥ कलिकारो ए तीरथ मोटो, प्रवहणशम भर दरिये ॥ वि०
 ॥ ९ ॥ उत्तम ए गिरवर सेवता, पक्ष कहे भव तरिये ॥ वि०
 ॥ १० ॥ इति पदम् ॥

अथ उपाध्याय श्री रामलाल गाणि. कृत
 गुरुगुणरत्नावली ।

शांति वदन वज्र देख नयण, मधुकर मन लीनो रे (चाल) ।
 श्री सद्गुरु का दरस सरस म्हानू प्यारा लागे रे ॥ टेर ॥
 श्रीजिनचंद सूरिद पटधारी, जिन शासन के उद्योतकारी, भक्त-
 वत्सल गुण अंगर नागर, ज्योती जागेरे ॥ श्री स० ॥ १ ॥
 रावता राणा आणा माने, परचा तेरा सब जग जागे, अद्धि
 वृद्धि सुख सपत आणद, गुरु से मागे रे ॥ श्री स० ॥ २ ॥
 महर निजर मुझ ऊपर कीजे, शुद्ध दरशण अब मुझ को दीजे,
 उदय २ कर परगट सानिध, अरिगण भागेरे ॥ श्री स० ॥ ३ ॥
 निन चारित्र सूरि पदवधे, मय भय पातिक दुरित निषेदे, पाठक
 राम गुरु चिरनदे, गावत रागेरे ॥ श्री स० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

राग ।

चेत नर क्यूं भुला अज्ञान, धरो जिन कुराल सूरिद का
 ध्यान ॥ टेर ॥ मिथ्या मति कु दूर हटा कर, समक्षित दिया
 निशान दया सत्य ब्रत अनुभव कीना, कीना अमर विमान ;

॥ धरो० ॥ १ ॥ काल अनते चिहु गति भमते, मिले कुशल
 गुल्यान, इम भव अडि परभव सिद्धि, मिले अचिते आन
 ॥ धरो० ॥ २ ॥ सिद्ध योग ह नाम अमोलक, रत्न चिंतामणि
 मान, कामधेनु सुरतरु है परतिख, महिमा जपे जिहान ॥ धरो०
 ॥ ३ ॥ सोमवार पूनम दिन वृण, जोति नागती थान, क
 एकाग्र चित्त चरणन में, देते दरशण आन ॥ धरो० ॥ ४ ॥
 कुशल करण प्रगटे भवि जन के, धर्मशील पश्चान, जिन
 चारित्र सूरि के सदगुरु कुशन राम कल्यान ॥ धरो० ॥ ५ ॥
 इति पदम् ॥

राग पंगालो ब्र.टो ।

देख्या मै दरश तिहारा, श्री मद्गुरु गङ्गागज ॥ टे० ॥
 टेर ॥ सफली फली मन आशा, फली म० ॥ पाया मुग्तर
 आज ॥ दे० ॥ १ ॥ लुम हो चिन्तामणि जैसा चिन्ताम० ॥
 दायक सब मुख माज ॥ टे० ॥ गगा अगण में प्रगटी, अग० ॥
 मुक्त मा निगमल काज ॥ दे० ॥ २ ॥ गुण अडि मपत बाजे,
 स० ॥ काम धेनु गुर राज ॥ दे० ॥ मव सिद्धि लीला प्रगटी,
 लो० ॥ दु ख टोट्य गये भाज ॥ दे० ॥ ३ ॥ गुरु लुह पर-
 उपगारी, प० ॥ मुरपद शिवपद पाज ॥ दे० ॥ शुभ थान
 पुर २ सोटे, पु० ॥ मुलक बीकाणे राज ॥ टे० ॥ ४ ॥
 घर गच्छन्मत्तर राजा, स्व० ॥ धर्मगील रहे गाज ॥ टे० ॥
 तुम नाम राम अडि मारी, जपे पाठइ मिग्ताप ॥ टे० ॥ ५ ॥
 इति पदम् ॥

जग में अमर राजा भरतरी (चाल) ।

सन्गुर् दीनदयाल, गद्यपति दिनकर तुम धरणी ॥ टेर ॥
 सवध जन प्रतिपाल, दुखतमहारण दिन मणी ॥ स० ॥ १ ॥
 गद मवियाणेनी देश, छाजेष्ट कुल उदयाचले, जिह्वा साह
 पितेश, जयत मिरी अचर भले ॥ स० ॥ २ ॥ गद्यपति चद
 मुनीश, पाट तिलक किरणावली, खरतर कमल आनन्द, तेज
 प्रकाशन मन रली ॥ स० ॥ ३ ॥ पुर पत्तन सब देश, भिग
 भिग ज्योति भिग भिगे, पूनम नें सोमवार, नर नारी गुर
 शोलगे ॥ स० ॥ ४ ॥ अरचे अतर फुलेल, परिमल फूली
 मालती, महफे चपक बेल, सुन्दर आवे मलपती ॥ स० ॥ ५ ॥
 शुभ यिर धूम बीजाण, बालूचर महिमा धरणी, कीरत वाग
 प्रधान, दुख भजन चिन्तामणी ॥ स० ॥ ६ ॥ पूरो बधित
 आश, छाया तुम सुनिजर तरणी, दाता मुस केलास, चरण
 शरण किरर भणी ॥ स० ॥ ७ ॥ पूजै पद गोविंद, चन्द्र
 शिखर जय राम में, कोटिक गण कुल चद, दुशल सुरिन्द
 प्रकाश में ॥ ८ ॥ उगणीशय अडताल, भिगमर बदी दशमी
 करी, दरशण अतहि विशाल, कुशल निधान हरख धरी ॥ स०
 ॥ ९ ॥ गुर गुण सरिता नीर, भीर भगन उल्लास में, लक्ष्मी
 लील समीर, अट्टि सार जसवाम में ॥ स० ॥ १० ॥ इति
 पदम् ॥

राग आसाउरी ।

सुगुरु मेरी नइया पार उतारो, तू बण अब माम्नी हमारो ॥
 मु० ॥ टेर ॥ सरिता भाद्रव नीर जलधि ज्यू, ये ससार

आगे ता तट पाप्मार शमर पद, ताको बग दातागे ॥ सु०
 ॥ १ ॥ गग रग इरु जीरुग नौका, तिर रही भरमक धागे,
 नै बंश पम्माय रातर, मोह मगर ने उदारी ॥ सु० ॥ २ ॥
 भक्त उधाग्य श्री सद्गुरुजी, जलनी कष्ट निवारो, जाण बाल
 गणसते करुणानिधि, या प्रितित रु बागे ॥ सु० ॥ ३ ॥
 टाकापात गवन विषयास, दामे अतदि करारो, विरह व्यथा-
 रिनु निरि अघियारो, फोण करे निमतारो ॥ सु० ॥ ४ ॥
 मया विष्णु जेन कोई ईशा, आता उमया प्यारो, मै भ्याउ शिन
 देव कुशल गुर, अरिगण गवन तारो ॥ ५ ॥ सुगु अरजी
 आपे गद्यतमहर, तुरत ही विषन विडारो, गमबागपुर अजीम
 गजे, कुशल निधात जुदारो ॥ सु० ॥ ६ ॥ फेरुयक गुरु रे
 लक्ष्मी पावत, हुकम धरे यमुधारो, मै शुक सेवा परण फमाल
 की, मागु गुरु दातारो ॥ ७ ॥ सवन उगागीसे अडनापीग,
 मेरु त्रयो ग्नी सारो, तयणा सफल किये गुरु दरशा, वै श्यादि
 सार तिहारो ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति पदम् ॥

होरि ।

सद्गुरुजी की पूजा कर रे कर रे ॥ क० ॥ सु र राइग
 दूरे हर रे ॥ स० ॥ टेर ॥ ये कतिगुग असागत भयो दधि,
 सद्गुरु बाह फकर रे प० ॥ स० ॥ १ ॥ अगम अगातर
 जिनकी महिमा, ज्ञान भ्यान चित धर रे, पूज्य पुण्य उच्य भये
 तेरे, मिल गये सद्गुरु कर रे व० ॥ स० ॥ २ ॥ बाट घाट
 भय सकट वाग्ण, दुश्मा लोपी हर रे, चद्र सृष्टि के पाट प्रभा
 कर, उदय भयो तिनकर रे क० ॥ स० ॥ ३ ॥ कुशच

श्रीश्वर कुशल कर्ण कृ, नित प्रति नाम समर रे, द्रव्य भाव
 दुय विध तें पजन, कर भव सागर तर रे त० ॥ स० ॥ ४ ॥
 स्वर सर्गीत ताल लुन गुरु गुण, गावत है नरवर रे, गाम २
 थिर थुम नगर में, परचा गुरु का जवर रे ज० ॥ स० ॥ ५ ॥
 लाल गुलाल अर्धर अतर में गुरु भक्ति अनुमर रे, जिन
 चारित्रि सूरि पद बदन, राम धरण अनुचर रे च० ॥ स०
 ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

पुनः गोरी ।

गोरी खेलो भक्ति सद्गुरु क सग, गित आनन्द उच्छ्वर
 होतरग ॥ हा० ॥ १ ॥ मन्त महीना फागण आया,
 श्री सध से हिल मिल के सग ॥ हा० ॥ जंगल शब्द करत
 स्वर भीणा, अनी कनी के सग रग ॥ हो० ॥ २ ॥ अतु
 बसत आनन्द पिया सग, गोरी गावत बनत चग ॥ हो० ॥
 ऐस साज ममाज भक्ति से, गुण गुलाल लिये गुरु के अभग ॥
 हो ॥ २ ॥ निरमल मन मकर सुधाकर, अतर पुप से चरचो
 अग ॥ हो० ॥ ध्यान पिचकारी अत्र सुभारी, धिरको महफत
 सुगभिगग ॥ हो० ॥ ३ ॥ नृत नेन उगण मे नण, अदि
 मारे के धन उमग ॥ हो० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

गोरी ।

जय गोलो पाम जिनेसर श्री (चाल) ।

सद्गुरुजी के द्वार मन्त्रा हारी ॥ स० ॥ आये श्री मध
 सप हिल मिल फ, सग लिये वाला जारी ॥ स० ॥ दीनन्यात

है मनपुर ठाड़े, पठन भपुर पुन गुण गौरी ॥ ग० ॥ १ ॥
 छर घौली मगि कचोली, पजन हं चाती नोगी ॥ ग० ॥ २ ॥
 गनाल मचयो सत्गुरु क प्रयाग उडावत भर भोगी ॥ ग० ॥ ३ ॥
 धन २ भाग्य हमार प्रगटे, गङ्गुलु १ पकड़ी डोगी ॥ ग० ॥ अवि
 मन राने टुरमन गजत बरिहारी चरणो तोगी ॥ ग० ॥ कामित
 गता नग के प्राता, शम्जी यर मुत ले मोगी ॥ ग० ॥ कस्त
 गम नद्वि गार मुगठक, परत है टुग क चोगी ॥ ग० ॥ ४ ॥
 इति पत्र ॥

दत्त गुरु दग्ग गिगानोजी, मै प्याना तेरे दग्गन का,
 ॥ टेर ॥ द्नीच मुर्गी सता मुग्ग तेगी, दूर देश मे आया,
 नेक नजर कर सद्गुरु मुक्त पर चरणा शीश नमाया ॥ ६० ॥
 ॥ १ ॥ अत धन लक्ष्मी मुग्ग सपत का, भग स्वजाना पूर,
 न्ते मुक्त को घटे १ निल भर, दु ख दालिदर ट ॥ ६० ॥ २ ॥
 आगे विन्द किया बहु लुमरे, अत कृ करते देरी, एक चित्त
 से यान लगात, शुद्ध मन देता फेरी ॥ ६० ॥ ३ ॥ आशा
 धर कर करु प्रार्थना, बचित पग्गा फजै, लीला लहर पलक मे
 पाठ, यो जस सद्गुरु लीजै, ॥ ६० ॥ ४ ॥ माभूत गत दिया
 गुरु तरशन, तेन भलामल पूर, भयत वचवल वरदाई प्रगटे,
 चद सूरमा पूर ॥ ६० ॥ ५ ॥ श्री जिन वल्लभ पाठ प्रीपक,
 खरनगच्छ राजान, उदय २ कर सव सफल का, जाणे नकल
 जिहान ॥ ६० ॥ ६ ॥ भक्तो के पार्थीन परम गुरु, किया
 गनु दल नाग, चरण शरण ना लिया आमग, गम चरण ना
 टाम ॥ ३० ॥ ७ ॥ इति पत्र ॥

आज रा वरसेरे, वरमे सरसे सुगुरु दरराक, जियरा तरमे
 रे ॥ आ० ॥ टेरे ॥ सायर ज्यू गभीर अतुन बल, धीरज
 मेरुजवरेमेरे, मेघ घटा ज्यू भक्त जीव पर, अमृत सरसेरे
 ॥ आ० ॥ १ ॥ जिन वच सेती हिल मिल सद्गुरु, भाखे
 बचन निहरमेरे, कचन ज्यू निरमैल ज्ञान गुण, भविजन फग्मेरे
 ॥ आ० ॥ २ ॥ अघनीतल ज्यू जमा गीताना, पावना
 चदन करसेरे, तप आतप गुण तेज दिवाकर, राम शशिधरमेरे
 ॥ आ० ॥ ३ ॥ मेवे सुरनर हाथ जोड कर, गुरपति ज्यू गुरु
 दरमेरे, करपवृत्त ज्यू बद्धिन पूरण, आनद हरसेरे, ॥ आ० ॥ ४ ॥
 गच्छ चांगसी के गुरु रक्तक, भूप रूप ग्वरतरसेरे, श्री लिन
 वल्लभ पाट दीपावन, दत्त अमरसेरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ दश विध
 यती धर्म के पालक, प्रगटे रतनाकरसेरे, राम वारणा लेत चरण
 का, अडि सिद्धि घरमेरे, ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ १० ॥

छोड गोरी छेलरो दुपट्टो (बाल) ।

दादा महिर निजर कर जोय, शोभा थारी जगत धरणीरे,
 ॥ टेरे ॥ दादा साहब में हू तेरा दास, मेरो दादा तू ही है
 धरणीरे ॥ दा० ॥ १ ॥ थारा सुरनर सेवे पाय, आश पूरण
 चिंतामणीरे ॥ दा० ॥ जग में नहीं है थारे कोई जोड, देख
 लीनी सारी ही दुनीरे ॥ दा० ॥ २ ॥ दादो देवे अपुत्रियानं
 पत, धन हीनाने रतन मणीरे ॥ दा० ॥ निश्चय मन जो ध्यावे
 थारो ध्यान, जावे आपदा दूर हणीरे ॥ दा० ॥ ३ ॥ राजे
 दादो चन् मरीधर पाट, नाम थारो कुजल धणीरे ॥ दा० ॥

राम तुमारो पूगे मरजीपान, अरजी म्हारीतुरत सुणीरे
॥ दा० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

चालो २ हे महेल्या सद्गुरु पूजवाहे ॥ चा० ॥ टेरे ॥
सद्गुरु राजे वागा माह, मचरही फेल आव की छाह, सद्गुरु
म्हारी पकड़ी बाह ॥ चा० ॥ १ ॥ खुल रहा चपा चमेली
फद, खुल रहा मरुआ और मुचकुद, चल रही शीतल पवन
सुगध ॥ चा० ॥ २ ॥ जिस में जल फे चले फुआर, चिहु
दिशि भमरा कर गुजार, गह मह मच रही सद्गुरु द्वार,
॥ चा० ॥ ३ ॥ गुरु पर चमर दुले लखचार, शिर पर तीन छत्र
को चार, भिगमिग ज्योति जगे दरवार ॥ चा० ॥ ४ ॥ बिच में
गोभे दीनदयाल, पल में फर देते है निहाल, सद्गुरु भक्तों के
प्रतिपाल ॥ चा० ॥ ५ ॥ सभलो मोले ही सिणगार, मुखडा
चद चदन आकार, गावो गुरु गुण की ललकार ॥ चा० ॥ ६ ॥
लीजो केशर घस घन सार, जिसमें कस्तूरी है सार, चोवा
चदन अपरपार ॥ चा० ॥ ७ ॥ पूजो दत्त कुशल गण इद,
पूजा करता सुख आनद, वगसे लीला लहर समद ॥ चा० ॥
॥ ८ ॥ गढ़पति जिन चारित्रसूरीद, पाठक राम करे गुण ब्द,
गागे दुरमन दोम्बी फद ॥ चा० ॥ ९ ॥ इति पदम् ॥

पास पियारो लागे प्यारो फलोधी बालोरे (चाल) ।

कुशल बोगालो लाडलो, तू गुरु हमारो रे के सद्गुरु
लागे प्यारो ॥ टेरे ॥ जैत सिरीजी के लाडला, मन मोहन-
गारोरे ॥ स०-॥ १ ॥ जिज्ञा गत्रीश्वर परे, प्रगथो श्वतारोरे

॥ स० ॥ द्याजेट वश उनागरु, जुल क्रियो उजालोरे ॥ स० ॥ २ ॥
 गढ साबियाणे प्रगटिया, दीपे दिन कागेरे ॥ म० ॥ सोय
 वरण सुहामणा, सारान बालोरे ॥ स० ॥ ३ ॥ नाम दियो तुम
 करममी, धन २ जयकागेरे ॥ स० ॥ जिनचढ गुरु उपदेश
 से, लियो सजम भारोरे ॥ न० ॥ ४ ॥ पाट टिपायो गणपती,
 क्रियो जग उपगागेरे ॥ स० ॥ जिहाज तिराई डूवती फोई
 लोक हजारेरे ॥ स० ॥ ५ ॥ दु खिया केई सुग्निया कग्घा,
 दे धन भडारोरे ॥ स० ॥ देव पीर ने वम करघा, गुण अपग-
 पारोरे ॥ स० ॥ ६ ॥ रोगाटिक तप लब्धि मे, तू हरणे हारोरे
 ॥ स० ॥ सेव करू निन ताहरी, तू वरदानारोरे ॥ स० ॥ ७ ॥
 कुशल वगे नित सघ के, है राम तिहागेरे ॥ स० ॥ इति पत्रम्

पनजी मूढेबोल (चाल) ।

चाल २ म्हास मित्र गालीजा, सद्गुरु पूजा रे, आज मिल
 चालो रे ॥ टेर ॥ हीनाचारघा ते गुरु जीत्या, पाटण नगर
 उमगे रे, दुर्लभ राता श्रावक दृशो, गुरु प्रसंगे रे ॥ आ०
 ॥ १ ॥ गुरि जिनेश्वर नाम रहावे, म्गतर पद जिण पायो रे,
 चट्ट सुरि सवेग रग में, पाट कहायो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ कर्म
 उदय सू कोढ रोग जिन, भक्ति सग मिटायो रे, देवी वचन सू
 नव अग टीका, करी दरशायो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अमय देव
 सूरीश्वरतसु पट्ट, जिण वल्लभ मूर्ति रायो रे, चामुटा देवी वश करवे,
 पद जिन पायो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ वावन गोत्र राज बम्पा मू,
 प्रति बोध्या सुग्न्यायो रे, अथ अोर रच्या सद्गुरुजी, धर्म
 दिपायो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ श्री जिगत्त गुरितसु पाटे, उदय

श्री शिव कागे रे, महा प्रोद्द सुनि न्या यव मे, सुधा सुनि
 उल्लो रे ॥ आ० ॥ १ ॥ शेष शोभ पते गमु सेवा, प्रति
 ईना बेह गुमा रे, नीम हज्जर म्द नमर अररु, फीमा नाज
 ॥ आ० ॥ ७ ॥ पान पीर योगात्मा नौमठ शोग्ग म्द
 का मां रे, पांन पीर यम श्रिया मिभ मे, मभ उम जां रे ॥
 आ० ॥ ८ ॥ पर प्रोद्द पिषाक, वन म, गुणा पुन र्जाया रे,
 पिज्जी रू वम कम पाव ता, नाम सदाया रे ॥ आ०
 ॥ ९ ॥ नाग पीर द्वाये सषे अदि मिदि के परार्द रे,
 दिन्दु सुमन्गाय सम पूर्या, महिमा गां रे ॥ आ० ॥ १० ॥
 योग दोष विष ममी हटाया गुग प्रपाय कदाया रे, गाईलीन
 श्रोटे भव विद्या, सिद्धि फाया रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ मणिपारी
 निर चं नृगीश्वर, दल पाट पर गो रे, निरी पति दुआ दाम
 गुरु का महिमा गां रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ तुम्हा सरीश्वर
 श्रुता करण रू, प्रमटे गुरु श्रुतारी रे, वनाम सहस आयक
 प्रति बोध्या, गुरु सुगकारी रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ बाटगा
 शरन गू परना, प्रति बोधे जिन चंग रे, उदय परा गुरु
 जैन धर्म का, दया पट्ट वाजिन्ता रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ कगे
 ह्वा सदगुरुजी सध पर, मे गुरु आजाफारी रे, कहे राम पाठक
 गुरु महिमा, अपरमपारी रे ॥ आ० ॥ १५ ॥ इति पदम् ॥

चाल ।

श्री सदगुरुजी से बिनती रे, आयो शरण तुमारी, दादा
 साहिबजी से बिनती रे, अरज सुखो गुरु म्दारी ॥ टे ॥
 धीन ल्याल विरुद मुण आयो, तन मन गुद्ध कर ध्यान लगायो,
 महिर निजर श्रुन पीचियेनी, चरण कमल बनिहारी ॥ १० ॥ १॥

आधि व्याधि मकट दु स्व भेटो, सोमवार पूनम दिन भेटो, अन
 धन लवमी चौगुणी रे, बधती सपद सारी ॥ दा० ॥ २ ॥
 नर नारी अपहर मिल आवे, अतर गुलाब फेबड़ो लावे, पूजे
 मृगमठ पुष्प से रे, खुल रही केसर क्यागी ॥ दा० ॥ ३ ॥
 कलियुग में परचा तू पूरे, चिता दोषी दुग्मन पूरे, धन २ सद्-
 गुरु जग जयो रे, महस किरण अवतारी ॥ दा० ॥ ४ ॥ उग-
 णीसे अठावन वरसे, कानी पूनम दिन भल सरसे, गच्छपति
 कीर्ति सूरीश्वर रे, बदे बार हजारी ॥ दा० ॥ ५ ॥ अरस
 परस दरमण अत्र दीजे, अपणो दाम मुके, ममर्भाजे, जगमें
 सुरतरु मारिखो रे, कीरती द्या रही धारी ॥ दा० ॥ ६ ॥
 प्रगट पणे वग्नाता देख्यो, आज सफल दिन में कर लेरयो,
 श्री त्रिन कुगल सुरिन् धणी रे, कहे राम अदि सागी ॥ दा०
 ॥ ७ ॥ ऋति पन्म ॥

लावणी ।

सद्गुरुजीं भूहारा, दरशण देज्योजी गच्छपति साहिबा ॥ टेर ॥
 कुशल सुरि बद्धित फे दाता, देवो बुद्धि विग्याता, सद्गुरु महर
 करीज्यो मुक्त पर, ज्यू बालक पर माताजी ॥ स० ॥ १ ॥
 खरतरराजचंद्र पटधारी, सेवक जन आधार, विपम वाट में सकंठ
 काटे, सध सकल सुखनारजी ॥ स० ॥ २ ॥ जग माहे परचा
 अधिकाई, जाणे सन ससार, भर दरिया में जहाज उतारी, जिन
 गुरु की बलिहारजी ॥ स० ॥ ३ ॥ गुरु चरणाबुज दरशन
 सेती, पाप तिमिर टट जाय, गुरु परमात्म मुगुण सौभागी,
 गुरुगुण केमकहायजी ॥ स० ॥ ४ ॥ मृगनयनी नेपुर उग्य-

शाली, लिये सहेरया लार नृत्य भणित गुरुथम विचक्षरा, गृहु
 स्मरि केशरजी ॥ स० ॥ १ ॥ मन्मन्नी हम्मीवर राजत,
 ॥ सद्गुरु दरवार, इद नरिन्दनमें पदपङ्कज, हरणित निग
 वारनी ॥ स० ॥ ६ ॥ अदि सिद्धि के आगर सद्गुरु, जो
 धारे सो पारे, यात्री थाये यात्र करण कू, केसर रग मन्वाये
 ली ॥ स० ॥ ७ ॥ गेमपीन अर्चन मद्गुरु को, पाम पुन
 सोमवार, वाधनिनात् तू पुन भद्रार, परे सुविधि सुविचारजी
 ॥ स० ॥ ८ ॥ कर अग्निवर सवत मुन्यकर, नद चद्र शशि
 वार, म्नेष मास प्रतिपत् दिन भेट्या, शुक्ल पत्त अर्धिकारजी
 ॥ स० ॥ ९ ॥ सुरगिरि में नदन बन शोभे, तागक में दिनकार,
 शब्द चद्र जिन हम सूरीश्वर, कुशल कुशल करतागजी ॥ स० ॥
 १० ॥ मद्गुरु धर्म शील परभावे, कुशल होत नित सहाय,
 अद्विसार पर महिर फरीने, अविचल लील बतायी ॥ स०
 ॥ ११ ॥ इति पद्यम् ॥

मोटे छोड़ चला विणजारा (शाल) ।

मेरे कुशल गुरु सुखकारा, जिन पार किया ससारा ॥ टेरे ॥
 तेरी कीरति मैं सुणपाई, है दीनबधु गुरुपाई रे, है तुम्ह का
 भेटन हारा ॥ जि० ॥ १ ॥ मैंने लिया आसरा तेरा, तू कर
 उद्धार गुरु मेरा रे, तू समरथ तागणहारा ॥ जि० ॥ २ ॥
 तेरा शुद्ध पवन मैं पाऊ, जिस पर हृद सरधा लाकरे, दौ शान
 अध्यात्म सारा ॥ जि० ॥ ३ ॥ धनसुत मपद दाता, गुरु
 नामें सुदर शीलारे, तुम समरण से जयकारा ॥ जि० ॥ ४ ॥
 इरुमन जो ध्यान लगाये, वो अविचल सपद पावेरे, मैं जाऊ

तेरी बलिहारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ मैं दरशन का अभिलाषी, गुन
 दीजें प्रकट प्रकारी रे, तेरी महिमा जग विन्ताग ॥ वि० ॥
 ६ ॥ तिनचद मूर्ति पटधारी, गङ्गवरनर के अधिकारी रे,
 गद्य चौगमी का प्यारा ॥ वि० ॥ ७ ॥ अद्विभार तुमाग
 बदा, पाठक पात गातारे, तेरे गुण हँ अरपरपारा ॥ जि०
 ॥ ८ ॥ इति पदम् ॥

चारी जाजरे सारिया तोपे चारणा (चाल) ।

गाऊ गाऊ म सुयश गुरु सारणारे ॥ टेर ॥ धन्य मात
 तुम सो मुत जायो, भविजन के आनन्द बरतायो, निरग्न र
 गुप्तर छवि लेवे वारणारे ॥ गा० ॥ १ ॥ जीता मदन तरुण
 वय निरमल, दश दिशि पसर रहा गुण परिमल-सूरि सफल
 मिर ताजक, विपत विदारणारे ॥ गा० ॥ २ ॥ तुम दर्शन-
 सुग सपत लीला, सुदर अष्टसिद्धि निधि शीला, ज्ञान भान का
 उदय, उदय के कारणारे ॥ गा० ॥ ३ ॥ परम पुनीत परम
 गुरु पाया, कुशल रुग्ण कुशलेश्वर राया, चद्र सूरि के लाल,
 भक्त जन पालणारे ॥ गा० ॥ ४ ॥ पूरे अद्विसार मन आशा,
 रामो युगल चरण के पासा, प्रेम सुभारस दान, अरज शय
 भारणारे ॥ गा० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

म्हारे लालजी छोगालो ऊभो यमुना के तीर
 (साइ) ।

। भाग प्राण बियाग मोहना गुरु आठजो म्हागी भीर ॥ टेर ॥
 ओगुण ॥ रा हँ म्हागे, प्रगता मे तरुगी, बजा बडाई

च नने, गुरु भाजे पगई पीरे, गुरु आजा ग्दारी भीर
 ॥ १ ॥ खीलरसू राचुं नदी रे, किया सायर से रीर, धंतर
 गमा साहिवा गुरु, हो रतनागर हीरे ॥ गुरु आ० ॥ २ ॥
 धनो विमद विचार केरे, दीजे सुग नगीर, हान जोड भरजो
 वर, गुरु आप कयाल अमीरे ॥ गुरु आ० ॥ ३ ॥ आप समान
 मिल्यो नहीरे, दूनो सादस थीर, अनर तापत पुभायथा गुरु,
 रिमल गमा नीरे ॥ गुरु आ० ॥ ४ ॥ चद्र वरत धिम
 सोहनीरे, सोधन वरण शरीर, नयगा न धापै विग्गतां गुरु,
 गुण गीग्या गभीरे ॥ गुरु आ० ॥ ५ ॥ समरथ आजो पाहु-
 गारे, धडियन भरलो डोल, गसा पूरो माहरी गुरु, जेग दास
 दिलगीरे ॥ गुरु आ० ॥ ६ ॥ बीमग्या नग्मो नहीरे, दीन-
 मधु बडवीर, म्हेवा दुफमी रावतागे, जडिया मेम जनीरे
 ॥ गुरु आ० ॥ ७ ॥ चत्सरीड के लालजीरे, तारण भय जन
 तीर, कुशल करण राचो धणी गुरु, दुग्मन टालन मीरे
 ॥ गुरु आ० ॥ ८ ॥ नयणा नरमे दग्ग क रे, जीव धरे नडी
 थीर, गम हिये रग आपकेरे, माची गडी तकीरे ॥ गुरु आ०
 ॥ ९ ॥ इति पटम् ॥ १६ ॥

पास विचारो लागे प्यारो (चाल) ।

दध कुशल गुरु मुग्तर, भवि तारण वालोरे, चपुर शिर
 पम निहालो ॥ डेर ॥ शुड आचारी सग्ग, मत्र वदन
 चालोरे ॥ च० ॥ १ ॥ उगुरु पुदेघ बुधर्म मे, गयो अनत
 कालोरे, नरनीगोर्म फम गयो, दुग् मरण उचालोरे
 ॥ च० ॥ २ ॥ चग्ग निरसा अकाम म, चट्टि गग्ग सभानोरे

॥ च० ॥ विकलेद्रा का भव करवा, केई मर्या कायालोरे
 ॥ च० ॥ ३ ॥ पुण्य सयोगे आवियां, नर भवगुणमालोरे
 ॥ च० ॥ निद्रा विरथा निपय मे, दापक विरगलोरे ॥ च०
 ॥ ४ ॥ भनामरु न जाणिगा, भिन जान गोदालोरे ॥ च० ॥
 सुकृत वस सद्गुरु मिरवा, अनुभव उचियालोरे ॥ च० ॥ ५ ॥
 फाल अनादि नगको, मि या मति टालोरे ॥ च० ॥ तव
 पिधाना सत्य का, ना मध जजालोरे ॥ च० ॥ ६ ॥ शुद्ध
 नरराण शुद्ध ज्ञानमें, शुद्ध विरती पालोरे ॥ च० ॥ पूना कर
 गुर देव की, समकित उजवालोरे ॥ च० ॥ ७ ॥ चरण शरण
 पाठक भणी, शब्द सार निहालोरे ॥ च० ॥ इति पदम् ॥

पुनः इसही चाल मे ।

चाल २ म्दारा सुगुणा आवक, सद्गुरु पूनोरे, सुगुरु के
 चालोरे ॥ देर ॥ अरिहत देव सुनाबु गुरु पद, जिन मानित
 धर्म कहियोरे, समकित श्रद्धा नय तत्व भाखे, गुरु गह गहि-
 योरे ॥ सु० ॥ १ ॥ रानन्य कुन में आवक नीना, भनामघ
 दिखायोरे, कृत्य अकृत्य में पेया पेयी, जान सिखायोरे ॥ सु० ॥ २ ॥
 धूल हिंसा का त्याग कगया पाच अनुनत दीनारे, तीन गुण
 व्रत चार शिना व्रत, जैनी नीनारे ॥ सु० ॥ ३ ॥ कष्ट आपदा
 सबही टाली, ऊचे पद पहुचायोरे, अनेक राता सेवा सारे,
 गुरु मन भायोरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ ग्ल चिंतामणि जिन धर्मदीना,
 गुरु परम उपगारोरे, केई भव्यान चारित्र देकर, भव जलतारीरे
 ॥ सु० ॥ ५ ॥ कर अणसन आराधनकारी, प्रथम स्वर्ग में जायेरे,
 बह गद्द नायक देव प्रगट हुय, य फरमायेरे ॥ सु० ॥ ६ ॥

कनेर भव सुणो इक विज्जा, तुग गुरु दफ्त विमारे, दुआ
 वे महोदक समाकितो, सुर सुरा मानेरे ॥ सु० ॥ ७ ॥ सव
 न्हे भव निश्चय कीजे, पूछो जिनघरगायारे, देव जाय
 सीमघर पूछे, जिा फरमायारे ॥ सु० ॥ ८ ॥ चार पत्ये के
 आयु अने, महा विदेह उपजनेरे, ले दीक्षा केवल पद पासी,
 शिव पद वरसीरे ॥ ॥ सु० ॥ ९ ॥ दो गाथा सीमघर भाखी,
 स्व सघने दीधीरे, हर्ष भरी श्री सव पुर आमें, थापना फीधीरे
 ॥ सु० ॥ १० ॥ ये गुरु प्रवहण सम भव दरिये, कबलों वर्णन
 कीजेरे, इक अवतारी भोज सिगामे, पद पूजीनेरे ॥ सु० ॥ ११ ॥
 इहभव परभव बधित पूरण, कर सेना मुग्दडिरे, खरतर गळ
 नायक गुरु लायक, सुरतर द्याहीरे ॥ सु० ॥ १२ ॥ किम
 उपगार भूले गुरु गुण का, भूले कृतनी होईरे, धिग् २ जन्म
 वृथा तिण हाग्यो, देखो जोईरे ॥ सु० ॥ १३ ॥ आज नहीं
 ऐमा कोई समरथ, राचन को प्रतिबोधेरे, आम वर कुल
 वृद्धिकारक श्रावक सोधेरे ॥ सु० ॥ १४ ॥ राधे को राधे जो
 भोला, हममें कहा बडाईरे, गुरु गुण अतुल तया में रमिया,
 मूलो म भाईरे ॥ सु० ॥ १५ ॥ गळनायक जिन चारित्रदूरि,
 साठक राम सवायारे, जन्म मरण भेटन गुरु समरथ, सत गुण
 गायारे ॥ सु० ॥ १५ ॥ इति पदम् ॥

पूज पूज्य जिन चन्द्र सरीधर, क्यों जग भूला मटके है ॥
 डेर ॥ शासन वीर जिनन्द प्रभावक, खरतरगळ गुण गटके
 है ॥ प० ॥ १ ॥ पच महानत शुद्ध सजम धर, तरण तारण
 भाधि है ॥ प० ॥ जिन माणिक्य मूरिपट्ट प्रभाकर, मिथ्या

तमकू मटके है ॥ पृ० ॥ २ ॥ माह अकबर गुरु उपदेसे,
जीव हिंसा से अटके है, लिख फरमाए द्रिया सब जनपद,
अमारि घोषण चटके है ॥ पृ० ॥ ३ ॥ जिन शासन की श्रद्धा
कीनी, ऐमे गुरु के लटके है ॥ पृ० ॥ अम्भावत को पूनम
कर दी, चद्र उजाला छिटके है ॥ पृ० ॥ ४ ॥ वरुगे भेद
बताया तीनों, काजी टोपी पटके है ॥ पृ० ॥ युग प्रगान प
दिया अकब्वर, पूर्ण ज्ञान जसु घटके हे ॥ पृ० ॥ ५ ॥ मस्म
रामी ग्रह उतग जव ही, धर्म उदय धिर थटके है ॥ पृ० ॥
धुमकेतु ग्रह का सुत प्रगटा, जिन मत लोपक खटके है ॥ पृ०
॥ ६ ॥ चैत्य अर्थ प्रत्यनीक सूत्र के, न्याय वचन सें टटके है ॥
पृ० ॥ जो पूजै गुरु चरण हमेमा, दु खगलिद्र तमु सटके है ॥
पृ० ॥ ७ ॥ फहे पाठक ऋद्धि सार गम रवि, ध्यान अमर पद
सटके है ॥ पृ० ॥ इति पत्रम् ॥

जाय धमे उन छेश पीयारे पीत निभाना मोड द्रिया
(चाल) ।

जाय फमा उगुर के फ में, गुरु गुण गाता छोडदिया ॥
टेर ॥ तापस वृत्ति अज्ञान नष्ट सें, जिन आजा वृ तोड़
द्रिया ॥ जा० ॥ १ ॥ पथ अघोर मलीन चला कर, मा मान
छ्यों जोड़ द्रिया, नहीं पदा षट् शास्त्र अज्ञानी, जिन मुद्रा मुख
मोड़ लिया ॥ जा० ॥ २ ॥ विषम जाल मे फमगया सद्गुरु,
जिन मारग को छोड दिया ॥ जा० ॥ मिले सुजानी गुरु गुण
पुरे, भरम जाल को षोड दिया ॥ जा० ॥ ३ ॥ अथ शरणा
गत करे सद्गुर, पार करे मेग म्योलो हिया ॥ जा० ॥ शुद्ध मव

तेरी पूज रचाउ, कोई न तेरी टांड किगा ॥ जा० ॥ ४ ॥
 श्री जिन बल्लभ पाट उघांतरु, तत्व वचन का निचोड लिया ॥
 ना० ॥ श्री जिन दत्त मूर्तिम हमारे, अद्वि सार गुण जोड
 दिया ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति पट्टम ॥

दरशन देना जी नदलाल, वंशीवट के यजाने घाले
 (चाल) ।

दरशन देना जी गुरुराज, भक्त पी जिहाज तराने वारो ॥
 टेरे ॥ स्वर्तर नायक बद्धित दायरु, श्री जिन चद सूरिद,
 तसु पट्ट तीपक सघ मुखाकर, दादा कुरान सूरिद ॥ द० ॥ १ ॥
 गजरमल्ल बोधरा श्रावक, तेरा भक्त कटावे, गया देशातर पीछा
 धिरते, फटी जिहाज घबरावे ॥ द० ॥ २ ॥ धरा ध्यान समरथ
 गुरु तेरा, आप व्याख्यान मुणाने, पत्नी रूप हुय उडर धाये,
 तत खिण ज्याज तिराते ॥ द० ॥ ३ ॥ पीथा तत्तण आये
 सदगुरु, श्री मघ अचरज पाते, आदन के दरिया में प्रवहण,
 हवन कथा मुनाते ॥ द० ॥ ४ ॥ एक मास सँ पाटण गूजर,
 आकर शीस नमाते, सब निज बीतरु महिमा गाई, तन श्री सघ
 हरन्वाते ॥ द० ॥ ५ ॥ जीवित परचा हुआ गुरु का, सभी
 दर्शनी पूजे, पुत्र सपदादी बहुतों को, गुरु मम और न दूजे ॥
 द० ॥ ६ ॥ समय सुदर की पच नदी पर, फटी जिहाज स्व-
 भावे, श्रीसघ युक्त ध्यान तेरा धरता, नई जिहाज बनावे ॥ द०
 ॥ ७ ॥ सुखसुरि भरु अखसे चढकर, गोगा बिदर जावे, वायु
 जोर फटा जब प्रवहण, गुरु तब पार लघावे ॥ द० ॥ ८ ॥
 अब जल नीच नाव गुरु मेरी, अधविच गोता ग्यावे, पार

लघाना हाथ आप के, गम कवि गुण गावे ॥ द० ॥ ६ ॥
इति पदम् ॥

मैं शीश नमार्जु धाने, परम गुरु तीनों दर्शन म्हाने ॥ टैर ॥
योगी जाटिल केइ तपिना डेरुया, गर्व भरघा अधिमाने, निर्दा
विकथा करे पराई, निज कटिपत पखताने ॥ पर० ॥ १ ॥ शात
शील जिन के शुद्ध सजम, आत्मध्यान कू ठाने, जिन मारग
के सत्य प्ररूपक, तुम हो तारण याने ॥ पर० ॥ २ ॥ पीर
पेरुवर भूत बादमा, त्या धर्म पहिचाने, ये उपगार करा गुरु
तैने, कजलग करु वरसाने ॥ पर० ॥ ३ ॥ बावन वीर योगणी
चौसठ, योग क्रिया बम आने, परउपगार करे अभिकाई, सारी
दुनिया जाणे ॥ पर० ॥ ४ ॥ भये प्रभावज जैन धर्म के, देरा-
उरपुर थाने, धाम होय गुरु दर्शन दीगा, श्री सध अनि हर-
गात ॥ पर० ॥ ५ ॥ जो जो ध्यावे परचा पावे, गुरु कीरति
मुदिहाने, पुर २ बीच धूम गुरु तेरा, महिमा अधिक वेधाने,
॥ पर० ॥ ६ ॥ खरतगच्छ शुद्ध जिन आणा, छाजेड कुल
प्रगटो, चद पटोधर गुरु गुणवेते, भक्त जीव सुखदाने ॥ पर०
॥ ७ ॥ धर्म शील जानी गुरु मेरे, प्रगटे कुशल निधाने, पाठक
अदिगार तुम सेवक, कुशल गुरु मामाने ॥ पर० ॥ ८ ॥
इति पदम् ॥

राग सौरठ, घर आवोजी रामरसिया (घात) ।

तारो २ कुशल गुरु रसिया, म्हारे मन मोहन चित्त वसिया
जी ॥ तारो ० ॥ टेर ॥ तुम गुणमालती पुष्प भमर में, रोम ३

उल्लसियाजी ॥ ता० ॥ १ ॥ तुम गुण स्वाति बूद जलपर की,
मो मन चात्रक तिसियाजी ॥ तारो० ॥ शमदम युग तुम चरण
कसोटी, मो मन रुचन घसिया जी ॥ ता० ॥ २ ॥ तुम
पचनामृत तत्व नीर से, मुझ तन पातिरु नसिया जी ॥ता०॥
रामलाल पट खोल हृदय का, कुशल ध्यान से कसियाजी ॥ना०
॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

आवो नेम रहजावो मदन (चाल) ।

आवो मनन करो गुरु का भजन, मत दिवम नमावो रे
॥ टेर ॥ क्यू चेतन कुगुर सग रावो, कुशल मूरीद गुरु है
सावो, मन मत मिन्या अर्थ जाल, उजड मत जावो रे
॥ आवो ॥ १ ॥ जिन आणा शुध सजम धारी, प्रगटे गुरु
जग के उपगारी, उभय लोक सुखदाता गुरु सै, इकलय लावो
रे ॥ आवो० ॥ २ ॥ सुरतरु रनि शशि मेघ उतारी, इन से
अधिक गुरु उपगारी, कुशल २ अद्दि सिद्धि प्रदायक,
बद्धित पावोरे ॥ आवो० ॥ ३ ॥ इरु चित्त भ्यावे सकट जावे,
जो शुद्ध मन से ध्याग लगावे, रामलाल गुर भक्त बच्छल से,
प्रेम जगावो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

म्हारा गणधर गुरु महाराज अरजी सुन लीजो (चाल) ।

म्हारे हृदय लिख्या गुरु नाम, चतुर नर मुन लीचो ॥टेरो
नित का करु वधामणारं, आनद उच्छव मोड, इन कलियुग के
माहिने जी, होश्या आवे थागी जोड ॥न०॥१॥ गिरु आगुण

धारा बणाजी, भक्त जना प्रतिपाल, इच्छू सेवक रावलो जी,
 मुनिजर नयण निहाल ॥ च० ॥ २ ॥ फल्पवृक्ष चित्तामणीजी,
 बद्धित पूरण देव, आण मरु शिर ताहरी जी, शुद्ध मन सारु सेव
 ॥ च० ॥ २ ॥ रमना पत्र कह मै किस दिध, गुर गुग्गु अफरपार,
 भवसागर भमता शरु जी, बाह पद इ निम्तार ॥ च० ॥ ४ ॥ चौरासी
 गज मेहगे जी, कुशल नृगि गुरु राय, रावल गणा श्रोत्रगे जी,
 सेवे तुमारा पाय ॥ च० ॥ ५ ॥ पुण्य उदय सद्गुरु मित्या
 जी, तीन रत्न दातार, यतर घट में रमरुधा जी, तार तार मोटे
 तार ॥ च० ॥ ६ ॥ द्रशण कर परसन हुआ जी, प्रगठ्या
 कुशल विभान, हाजर हुकमी वीनवे जी, पाठक राम मुजान ॥
 च० ॥ ७ ॥ इति पत्रम् ॥

देशी जप्तेकी ।

ह तो धारा दरशा करवा आयो जी, सुगकारी गुर राज,
 दरशन कर कर चित्त मे आनन्द पायो जी दयाल, थुम
 तुमारो बागां माटी सोहे हो ॥ सुख० ॥ चिहुदिसि परिमल
 भमर तणा मन मोहे हो दयाल ॥ १ ॥ चपा चपेनी मरुओ
 बेलो फूटयो हो ॥ सुख० ॥ केसर क्यारी देखत चित्तबो
 भूल्यो हो दयाल ॥ अय सुगधी भाव सुगधी भासे हो ॥
 सुख० ॥ तुम गुण परिमल भक्त हृदय परकाशे हो दयाल
 ॥ २ ॥ यध्यात्म रम आत्म रग गीजे हो ॥ सुख० ॥ तुम
 उपदेगे जिन उच अमृत पीने हो दयाल ॥ दुख तरिदना
 मेटन मपत लीला हो ॥ सुख० ॥ सुर मुख मिद्धि नायक ज्ञान
 र्माता हा दयाल ॥ ३ ॥ दान ज्या दन तीन नव तुग

भाग्या हो ॥ सु० ॥ भव जलतर्माजे भविजन रस चाम्या
 हों दयाल ॥ तु उपगारी तारण तरण विगजे हो ॥ सु० ॥
 दग्ता पूजन मन्दत रागना भाजे हो दयाल ॥ ४ ॥ ग्रष्ट उच्य
 सू तुम युग चरण रचजे हो ॥ पु० ॥ भावन्तान वरुण ग पाति
 दीने हो दयाल ॥ जिन दन विन चर कुशल सुगुण गुरु
 राजा हो ॥ सु० ॥ नमस्किं वरो म्हारे मनमे ताजा हो
 दयाल ॥ ५ ॥ गुरु त्रिया परतर जिन आजा पाले हो ॥ सु० ॥
 भद्वारक चाग्नि ह्यस उजयान हो दयाल ॥ जर्मगीन गुरु
 कुशल निधान साभागी हो ॥ सु० ॥ गन पाउरनी उच्य दशा
 प्रव जगी हो दयाल ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

तुम तो भले विराजो जी (चाल) ।

धर्म क अधिक शिपाया जी, मेरे तिन शासन भिषगा ॥
 धर्म० ॥ तुम तो भले विराजो जी, गच्छ चारामी सिरदार, रुद्र
 मे भले विराजो जी ॥ दो टेर ॥ रुद्र सुरि भये धर्म प्रभाव
 उन मे तुम अधिकारी, सत्र जनमें शीतलता दग्मे, गन नर
 बडाई ॥ सु० ध० ॥ १ ॥ ताग गण मे वर विराजे उच्य
 मे उच्य, दत्त कुशल गु सध मे राजे, तेन प्रताप ॥ सु०
 सु० ॥ २ ॥ रुमला नर मे लक्ष्मी राजे, धर्मगुणे उच्य
 सस्तरगद मे गुरु विगजे, गज गहिग्म मद्र ॥ सु० सु०
 ॥ ३ ॥ मृगपति देवत पशुगण नासे, विदु नान्त,
 दत्त कुशल श्री वागी सुधारम सुविहिन मार्ग ॥ सु०
 सु० ॥ ४ ॥ जिन शासन के उदय दग्मे उच्य दत्त
 दरशाया, रावन विप्र मादेश्वर गण ॥ सु० सु० ॥

ध० स० ॥ ५ ॥ देश २ से श्री सघ धावे, मेला खून मरावे,
 फेसर चन्दन पुष्प घूप से, पूजा भक्ति रचाने ॥ ध० स० ॥ ६ ॥
 इस भव त्राही कष्ट मिटाए, बलिष्ठ पृष्ण फीना, सुर नर
 मुख श्रावक तन साधन, शिवपुरमा धन दीना ॥ ध० स०
 ॥ ७ ॥ एमे गुरु कृ जो निव पूजे इक मन सेती ध्याने, सर्व
 भिद्धि उमके घर प्रगटे, राम प्रेम से गावे ॥ व० स० ॥ ८ ॥
 इति पदम् ॥

आज आपे चाली सतिया भिद्धाचन० (चाल) ।

आज आपे चाली बहिनी, कुशल सूरिद गुरु पूजो ॥ टेर ॥
 कुशल सूरिद गुरु प० ॥ इण मम अवरन दूजोण ॥ आ० ॥
 श्रद्धा विष्णु महेश गनाग, देवी देव गनाग, उभय लोक
 फारज नहीं सरिया, यो ही जनम गगाया ॥ आ० ॥ १ ॥
 प्रति रूपाटिक सूरि भक्त गुण, ज्ञान ध्यान का दरिया, चरण
 छरण मुनति गुति सू, जिन मारग मचरिया ॥ आ० ॥ २ ॥
 रत्न अडित सिहासन ऊपर, सद्गुरु भले बिराजे, सुर नर किनर
 वामर डेले, सिर पर छतर धाजे ए ॥ आ० ॥ ३ ॥ निव
 वाणी उपदेश सुणावत, सजल जलद ज्यु गाजे मुणकर गिध्या
 मत तज दीना, भविजन सशय भाजे ॥ आ० ॥ ४ ॥ आवि
 व्याधि भेटन सद्गुरुजी, परतिस्त्र परचा देये, पुन सपदा बलिष्ठ
 पूरे, जे सद्गुरु ने सेवे ॥ आ० ॥ ५ ॥ धर्म दान सद्गुरु
 ने दीना, उभय लोक मुक्तकारी, क्रम से सिद्धि सपदा सगम,
 आराध्या बलिहारी ॥ आ० ॥ ६ ॥ कैसर चन्दन घूप अरगजा,
 गुप सुगधा लीजे, गगाजल से कर प्रहालन, गुरु चरण अरचीजे

७ ॥ आ० ॥ ७ ॥ भावमनजन मद्गुरु ने धुणता, अतर ज्योति
जगामे, चारित्र मूरि कृपाचद्र मूरि, राम प्रेम गुण गावे ए ॥
आ० ॥ ८ ॥ इति पदम् ॥

राग खेमटा ताल ।

मेतो भेदग चढाय आई आज, गुरुनी के तिर में ॥
मे० ॥ टेर ॥ देग २ महिमा मटिर की, निदक सब रहे
राम ॥ गु० ॥ नरशन कर परसन भया मन मेरा, हरख रहा
तिल गाज ॥ गु० ॥ १ ॥ सज धन रूप सभे आमूपण,
सन्धियन सग समान ॥ गु० ॥ केसर चद्रन अवर अगजा,
ले पूजन का साज ॥ गु० ॥ २ ॥ चपा चपेली टोना मरवा,
भर फूलन का छाज ॥ गु० ॥ फरसत चरण आनदन माया,
मिले गर्जन निराज ॥ गु० ॥ ३ ॥ पूजन से धूजे सन अरिगण,
मिता मुगति का पाज ॥ गु० ॥ गम गटाले सद्गुरु भेटया,
नगर वीकाणे राज ॥ गु० ॥ ४ ॥ जान ध्यान सन्मान ववारन,
गणधर गुरु महागज ॥ गु० ॥ अतरगत की तुम सन जानो,
रखो हमारी लान ॥ गु० ॥ ५ ॥ चद्रसूरि के खरतर नायक,
तारण तरण जिहाज ॥ गु० ॥ कुशल २ गुरु पाठक जपे, राम
सुधारो काज ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

रघ्याली लाल अणवट रग लागो (चाल) ।

मुजानी लाल चरणा सू चित लागो, लागो रे खरतरगध
राज, थासू म्हारो मन लागो ॥ टेर ॥ सुवरण रतन जडित कलशा
में. लाज गगानीर, चरण कमल — गुक भव जल

ध० म० ॥ ५ ॥ देश २ से श्री सघ आवे, मेला रूव भरावे,
 केसर चदन पुष्प धूप से, पूजा भक्ति रचावे ॥ ध० म० ॥ ६ ॥
 हस भय आश्री वष्ट मिटाकर, उचित पृग्ग फीना, सुर नर
 मुम्भ आरक त्रत साधन, शिरपुग्सा धन दीना ॥ ध० स०
 ॥ ७ ॥ एमे गुरु कृ जो नित पूजे, इक मन सेवी जावे, सर्व
 सिद्धि उगके घर प्रगटे, राम प्रेम ने गावे ॥ ध० स० ॥ ८ ॥
 इति परम् ॥

आज आपे आली सरियां सिद्धाचल० (चाल) ।

आज आपे चालो बहिनी कुशल सूरिद गुरु पूजो ॥ टे ॥
 कुशल सूरिद गुरु पू० ॥ इण सम अवरन वृजोण ॥ आ० ॥
 प्रभा विष्णु महेश गजान, नेवी देव मनाया, उभय लोर
 फारज नही सरिया, या ही जनम मनाया ए ॥ आ० ॥ १ ॥
 प्रति रूपादिक सूरि सकल गुण, ज्ञान ध्यान का दागिया, चर्या
 करण सुमति गुप्ति सू, जिन मारग मचरिया ण ॥ आ० ॥ २ ॥
 रत्न उदित मिहासन ऊपर सद्गुरु भले मिराजे, गुर नर तिनर
 चामर दोले, सिर पर छतर छाजे ए ॥ आ० ॥ ३ ॥ जिन
 घाणी उपदेश सुणावत, सजल जलद ज्यु गाजे सुणकर मिथ्या
 मत तज दीना, भविजन सशय भाजे ए ॥ आ० ॥ ४ ॥ आवि
 व्याधि मेटन सद्गुरुजी, परतिख परचा देवे, पुत्र सपदा बद्धित
 पूरे, जे सद्गुरु ने सेरे ए ॥ आ० ॥ ५ ॥ धर्म दान सद्गुरु
 ने दीना, उभय लोरु सुखकागी, क्रम से सिद्धि सपदा सगम,
 आगध्या बलिहारी ण ॥ आ० ॥ ६ ॥ केसर चदन धूप अरगजा,
 पुष्प मुग्धा लीने गगाजल से कर प्रनालन गुरु चरण अरनीजे

सद्गुरु छन्द ।

६॥ आ० ॥ ७ ॥ भावस्तवन सद्गुरु ने धुणता, अतर ज्योति
 वावे, चारित्र सूरि वृषाचन्द्र सूरि, राम प्रेम गुण गावे ए ॥
 आ० ॥ ८ ॥ इति पद्यम् ॥

राग खेमटा ताल ।

हेतो सेवग चढाय आई आज, गुरुजी के दिग् ने ॥
 हे० ॥ देर ॥ देर २ महिमा मन्दिर की, निदक सब रहे
 दम्क ॥ गु० ॥ दर्शन कर परसन भया मन मेरा, हरख रहा
 तिल गाज ॥ गु० ॥ १ ॥ सज धन रूप सभे आमूपण,
 सखियन सग समा ॥ गु० ॥ केसर चदन अवर अग्गजा,
 ले पूजन का साज ॥ गु० ॥ २ ॥ चपा चपेली टोना मरवा,
 भग फूलन का छाज ॥ गु० ॥ फगसत चरण आनदन माया,
 मिले गरीब निवाज ॥ गु० ॥ ३ ॥ पूजन से धूजे सब अगिण,
 भिला मुगति का पाज ॥ गु० ॥ गम गडाले सद्गुरु भेटल,
 नगर धीकाणे राज ॥ गु० ॥ ४ ॥ जान ध्यान सन्मग
 गणधर गुरु महाराज ॥ गु० ॥ अतरगत की
 रस्को हमारी लाज ॥ गु० ॥ ५ ॥ चन्द्रसूरि
 तारण तरण जिहाज ॥ गु० ॥ कुराल २
 सुधारो फाज ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति

ख्याली लाल अणवट २०

मुझानी लाल चरण सूँ
 राज, थासू म्हारो मन लागो ॥
 में, लाऊ गगानीर, चरण

तीर ॥ सु० ॥ १ ॥ हीर चीर उज्वल पट लाऊ, अति मुन
 माल सुतान, पद पूजन सदगुरुजी थाग, पाऊ मै निभुन रा
 सु० ॥ २ ॥ काश्मीर सू फेसर लाऊ, चीनी शुद्ध कपूर, मलय
 गिरी श चन्दन ताऊ, पना करु मन धीर ॥ सु० ॥ ३ ॥
 वागा माहि मू सरम केतनी, लाऊ पुष्प गुलाब, राय चपो थारू
 रा लाऊ, अरबु गुमारा पात्र ॥ सु० ॥ ४ ॥ कन्नोज से चोरा
 चदा अतर, करु सुगधी पूर, महेशे परिमल वामना म्हाग,
 ल लालित्य दृग ॥ सु० ॥ ५ ॥ मुद्र नन सू चमर मगाऊ,
 सुवर्ण रता जहाऊ, पन्न सोभागी सदगुरु था पर' चौमठ
 चमर टुलाऊ ॥ सु० ॥ ६ ॥ लका गट मू सोनी ताऊ, वज्रा-
 गर मू हीम धर जगऊ था पर चाट मेद्र मन की पीग ॥
 सु ॥ ७ ॥ मूरत की दरफा तो थाऊ, पेय मधुगजी दा, मिश्री
 मावा जेपुर मेली चाट नैद्य नीमा ॥ सु० ॥ ८ ॥ कावल
 का सय भवा लाऊ, मिश्री बीजाग, लगटा चान वारस केरा,
 चादू फलाना डेर ॥ सु० ॥ ९ ॥ चारति भेटन आरती उतारू,
 पच रग वज्रा चढाऊ, श्रीफल उपर मोहर भेट धर, लुल २
 गीम तगाऊ ॥ सु० ॥ १० ॥ नाटक गायन बीण बजाऊ,
 गुण गाऊ मै तेरा, चद्र सरिन् के लाल सोभागी, कुशल सरिन्
 गुट मेरा ॥ सु० ॥ ११ ॥ चारित्र मूरि दृमाचद्र सरि, बट
 खरतर मुग्धिया, पाठक राम लहे नित लीला, निशदिन तेरा
 व्यान ॥ सु० ॥ १२ ॥ इति पदम् ॥

गिरनारी जाता राग्व लीजो हे (चाट) ।

- अनेह कुतरो सेहगे ण गाय महिया ण जिल्लागर महीज,

फट्टन झतिया ॥ ४० ॥ टेरे ॥ नरपतिरे दु ख रोय गमाये, सुर
 गनि मे पायो सुग रतिया ॥ ४० ॥ १ ॥ पुगय उदय अत्र नर
 भत्र पायो, उ ख राताप बहुत आपतिया ॥ ४० ॥ ईति उप-
 द्रव भत्र दतुरे, राग सोग अग्नि गण मे रतिया ॥ ४० ॥ २ ॥
 निषय नपाय जनात जान मे, मोह बद्ध रखो पून कलनिया ॥
 ४० ॥ तुम समरा कचह नही कीनो, अत्र भेगी होगी कैसी
 गनिया ॥ ४० ॥ ३ ॥ आप सुभागे काग भक्त के, अतर
 गत लिग्य भेजी पतिया ॥ ४० ॥ तारक आन मिले अत्र मुक्त
 को, कुशल सर्गिठ गुर जालम जतिया ॥ ४० ॥ ४ ॥ पाठक
 राम सुवागस चाग्यो, अत्र तो मुगुरु पत्र लागी मतिया ॥
 ४० ॥ ५ ॥ इति पत्रम् ॥

कोई देखना रे सावरिया साहिब प्यारा लागे रे
 (चाल) ।

कोई तेरया रे सुपने में सद्गुरु, ज्योति सवाई रे ॥ टेरे ॥
 अर्द्ध चंद्र ज्यू भाल भलाहल राते रे, नयन कमल दल दोनु
 अधिक पिराजे रे, श्याम मनोहर भृशुटि मटा सुखदाई रे, हरे
 हारे महा० ॥ १ ॥ दीप शिग्या ज्यू सरल नामिका सोहे रे,
 लाल भवाला अधर सदा मन मोहे रे, दत्त पति मानू मोती
 सुनित जमाई रे ॥ हरे हारे यु० कोई० ॥ २ ॥ कचन वरणी
 काया सुन्दर दीपे रे, चंद्र सूरजछवि निज तेजे कर जीपे रे, पुष्य
 'माल शिर रत्न तिलक अधिकारी रे ॥ हरे हारे तिल० कोई०
 ॥ ३ ॥ नेव दुष्य पट उज्वल किरण मुहावे रे, अवर तल में
 दर्शन गुरु दरशाने रे, सिद्ध मनोरथ दीनो चर' गुरुदाई रे ॥

हेरे हारे म० कोई० ॥ ४ ॥ चंद्र पटोपार भवन जीव प्रतिपान
 में नित उठ जपिये कुशल गुरु की माला रे, राम करे अग्रार
 मग गुण गाई रे ॥ हेरे हारे मग० कोई० ॥ ५ ॥ ई
 पम् ॥

श्री सीमधर साहिब (चात) ।

कुशल मूरिन्द गुरु नाहिना, जिन चंद्र मृगि पटपार कुन
 रे गुण प्रनेके शोभता सेवक जन आचार ताल रे ॥ कु०
 ॥ १ ॥ दीन दयाल टपाल घो, मन बधित वातार लाल रे
 छोड रे थारी थापना, परचा अनि मनुहार लाल रे ॥ कु०
 ॥ २ ॥ देगदर भूम दीपता, उदयापुर आवेर लाल रे, नि
 बीकाणे शोभता, शोभे जेमलमेर लाल रे ॥ कु० ॥ ३ ॥
 बलि फेसरे, पूजे गुन गा पाय लाल रे, मुनिपति श्रीनिवा
 लुग रे शीस नमाय लाल रे ॥ कु० ॥ ४ ॥ सुक
 तीस में, फाती पूनम जाग लाल रे, श्री नित ह
 खरतगाध राजान लाल रे ॥ कु० ॥ ५ ॥ धर्म
 कुशल निधान उदार लाल रे, पद, पद
 प्रति गुरु अट्टि सार लाल रे ॥ कु० ॥ ६ ॥

राग ।

जैन प्रया उदयकार, जय रे
 रीहडम ओस वरा, खरतर गण
 अरा, प्रगटे सुन काना ॥
 पाट, सकट मत्र विन्न दाट,

शिव फाजा ॥ ज० ॥ १ ॥ विह्वल पति यवन वधु, अरुवर
 मुग क प्रथम तुम वच मे हा वरिस, मत्रि गति मुग भाजा ॥
 ज० ॥ ३ ॥ दुा प्रथम पत्नी डीन, जेन वरमे तत्त चीन,
 अगन शुा तियत लीन, कद्राह ताजा ॥ ज० ॥ ४ ॥ अहिना
 फरमाणु वार, लिप्य नर चीनो विशेष उदय गिन धर्म रेख,
 चिहु निजिग गाजा ॥ १० ॥ ५ ॥ जगुर श्री जिन सृष्टिद,
 पत्र न भाषिन ह्य अहि भाग निा आनद, वने मुजन गाजा ॥
 १० ॥ ६ ॥ शनि ज्म ॥

अ ३ इशान्ति ।

श्रीनिा मद्र त्रे गृहि तीरक गाव भडर केट म्थल धपे,
 गैरय गले वृ मत्र लये मल मेव रेगे गुग जगदि जणे, बहग'
 गोन मध प्रति बोधक गाजा वश का पापन कणे गटोटा रुत
 वहाय करे तमु शतु तणा दल दृ ही गणे ॥ १ ॥ पट्ट परवर
 धर्म गुग श्री निा भाजा मृगवा राजा, पनेमे बाल विगद
 लखा तम सेराजी रावत लसुग ताजा, हार गये वेदात्मती
 गुग्देव के वाजे अविचल गाजा, श्रीनिन लाभ सर्गु पटोवर
 मध मुगार मुहुन गाजा ॥ २ ॥ श्रीनिनचद्र भये पट्ट उज्ज्वल
 श्रीनिन र्प मृगीग निगन आजिन सोभाग्यसंगि गुगार हनु-
 मत वार कृ मत्र म नार्के मिन्दारमिट पीत्राण नरे म्र मेव
 के मध मुगय समान धन पुन दान लिये जन रजन दृ ग
 गंगादि अनेसो के भात ॥ ३ ॥ हम सृगेश्वर चद्रसृगेश्वर श्रीधि
 मरीवा क्रम पट्टधारी, बत्तेगात चागि मृगेश्वर समुत्तर गण के
 शुठ आनागी गगादिह निकाण ते तर धर्मरीन गुरु जग

हितकारी, गुरुल निधान प्रधान सुपाठक गुरु गुण लेख करे
अष्टिमासी ॥ ४ ॥ इति श्रीक्षेम कीर्ति शास्त्राचार उपाध्याय राम
अष्टिमासी गणित समग्र दृष्ट गुरुगुरुरत्नावली संपूर्ण ॥

नरतर गण के आचार्य उपाध्याय वाचक साधु माधवी
॥ वाक शास्त्राचार्य के नित्य स्मरणार्थ यह गुरुगुरुरत्नावली
लक्ष्य कमल पर सर्वदा विराजमान रहे । श्रीगुरु कल्पारामम् ।

केई तो ममस्त वस्त चातुरी विचारमार वयगुभी टुम्बु
अप्रय सम्वती है, केई तो प्रगुप्त काव्य भाषा गुण बुद्धि का
आर कवि अमृत होत ऐसी दिव्य छुति है, केई गण गण अमृत
रमस्त गुम्न होत जात केई तर्क विद्या में विरमस्त गुण
हमस्त सिद्ध धर्मसिद्ध वादि हन्ती गस्त होत जैन न परमस्त
ऐसे ममस्त जती है ।

श्री कृपाचंद्र सूरिः प्रशस्ति ।

कीर्ति रत्न सूरि के, पहपरपरमान, केई गुरुवसे दो गये,
बडेउपगारी भाख ॥ १ ॥ कृपाचंद्र सूरिभू, शुद्ध मान वैराग,
त्रिया उद्धारी प्रगटिया, सूरिगुण संगत ॥ २ ॥ मानु मानवी
मध युत, आतम ज्ञान उभग, चिरवीव बरता सरा, स्वगुरु
गण उदरग ।

सहाय दीना मिश्रवर, विबुध अक्षरकर उगर्गागे
त्रिहचर, लिखने गुरुगुण वृद्ध ॥ १ ॥ वाक वाचक लेख मुनि,
प्रेम अमर खुमिगाल, पल निजय मरुतु हता, मान गे, निज
लाल ॥ २ ॥

आयुर्वेद भूषण श्रीयुत परिडित जीवनरामजी हंप के
धी केवल जीवनानन्द प्रेस, बीकानेर में
परिडित ओंकारदत्त शम्मा शान्नी
मॅनेजर के प्रबन्ध से
मुद्रित ।

छपे हुए ग्रन्थों का विज्ञापन ।



इन्द्रदेव वादा साहब की पूजा १२ प्रश्नों का उत्तर.	१८)
रत्न समुच्चय (रत्न सागर) जैन धर्म का सर्व हृत्य.	६॥)
पूजा महोदधि ३७ गायन पूजाविधि युक्त .	२॥)
वृहस्थ व्यवहार धनादि उपार्जन का ...	१॥)
महाजन मुक्तावली ओसवालादि ४ वर्ष इतिहास.	२॥)
वेद्य दीपक—देशी, यूनानी, डाक्टरी, होमयोपैथिक आदि रोग परीक्षा इलाज, पश्यापथ्य आदि	५)
एकुन मनुष्य, पशु, पक्षी आदि का भावी फल और जिनदत्त सुरिजी रचित का सारांश.	१)
१६ चाणक्य अर्थ, पासा शकुनावली जैन स्वरोदय भाषा	१)
ध्वजफल, सर्व देश की वस्तु, तेजी भंडी निकालना	१८)
सिद्धमूर्ति (प्रथम भाग)	॥)
सिद्धमूर्ति (दूसरा भाग) ३२ सूत्र पाठ से मूर्ति पूजा	॥॥)
गुणविलास २२ समुदाय वालों के लिए उपयोगी	१)
पंच प्रतिक्रमण १६ स्तोत्र अर्थ युक्त ..	२॥)
जैनदिग्विजय (सत्यामत्यानिर्णय)	६)